॥ श्री ॥

मानतुंग राजा अने मा-नवती राणीनो रास.

पंडित श्रीमोहन वीजयजी विरचीत द्वितीय

मृषावादपरिहार व्रतमाहात्म्यरूप.

आवृति त्रीजी

आ ग्रंथने यथामति संशोधन करीने

शा. भीमसिंह माणकें

श्रीमुंबापुरीमध्यें

निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध करयुं छे.

श्रावण शुदि ३

संवत् १९६२.

इसवी सन १९०६.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ सत्यवचन उपरें

॥ मोहनविजयजी विरचित ॥

॥ श्रीमानतुंगराजा अने मानवती राणीनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऋषभजिणंद पदांबुजे, मनमधुकर करि लीन॥ आगमगुणसौरभ्यवर, अतिआदरथी कीन ॥ १ ॥ यानपात्रसम जिनवरू, तारण भवनिधितोय ॥ आप तर्या तारे अवर, तेहनें प्रणिपति होय २ ॥ अथ सरस्वतीवर्णनम् ॥ भावें प्रणमुं भारती, वरदाता सुविलास ॥ बावन अक्षरथी भर्यो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥ शुक्र कर्या केई शनीथकी, एहवी जेहनी शक्ति ॥ किम मूकाए तेहना, पदनी कोविद भक्ति ॥ ४ ॥ गुरुवर्णनम् ॥ गुरु गुण अगणित कुण गणे, तारक कवण गणंत ॥ कुण तर्जनीअंगुलिसिरें, धरणी अधर धरंत ॥ ५ ॥ अद्वितीय दीपक सुगुरु, करता ज्ञानप्रकास ॥ पण हर्ता अज्ञानतम, सेवुं तस थइ दास ॥ ६ ॥ जिनआगमवरदा सुगुरु, तेहना प्रणमी पाय ॥ धरमतणा अधिकारथी, ऋद्धिवृद्धि नित था

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

य ॥ ७ ॥ द्विप्रन्नेद ते धर्म छे, आगारी अणगार ॥ व्रत पण द्वादश पंच तिहां, तेहना विविध प्रकार ॥ ८ ॥ मृषावादव्रत द्वितीय ए, मृषातणो परिहार ॥ सत्यवचन आराधिये, तो वरिये शिवनार ॥ ए ॥ कूट मृषा तजतां थका, धरिये इम प्रतिबंध ॥ सत्य वचन ऊपर सुणो, मानवतीसंबंध ॥ १० ॥ अतिहि कौतुकनी कथा, सांन्नलजो चित लाय ॥ मत कर जो श्रोता सकल, बधिरगीतनो न्याय ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली चोपाईनी देशी ॥

॥ मानांगुल जोयण एक लाख ॥ वटविष्कंन्न जंबूनो न्नाख ॥ जगती आठ जोयण उच्चंत ॥ बार चार धुर ऊवरि दंत ॥ १ ॥ चार अनुत्तर नामे द्वार ॥ उंचत आठ जोयण विस्तार ॥ पंचसयां धनु तिहां वेदिका ॥ लीजे जोयण सवि देवका ॥ २ ॥ छ कुल गिरी छे जंबूमऊार ॥ सातमो मध्य मेरु वनधार ॥ क्षेत्र सातवलि तिहां आद्यंत ॥ न्नरततणी सीमा हिमवंत ॥ ३ ॥ तेह न्नरतनो जोयणमान ॥ पांचसे छ विस छ कला जाण ॥ बीजा क्षेत्रतणा अधिकार ॥ ले जो शास्त्रथकी सुविचार ॥ ४ ॥ दक्षणन्नरते मालव देश ॥ नहि रौरव वली नही कलेश ॥ अवर देस जे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म फणि परखिये ॥ एतो मणिसम करी लेखिये ॥५॥
तिहां नगरी उज्जयणी नाम ॥ अमरपुरीके लंका धा
म ॥ ए आगल लंका बापडी॥लडथडती जलनिधिमां
पडी ॥६॥ स्फटिकरतनतणा जिहां गेह ॥ नत्रमंडल
तजि लखता जेह ॥ नयरी ए वीव्यो वप्रघट्ट, युवति
जातिमनुं धर्यो योगपट्ट॥७॥ग्रह ग्रह केतु चपल थई
घणे ॥ मनुं सुरग्रहने चपेटे हणे ॥ हाटे हाटे क्रियाणा
घणां ॥ पंकपुंज तिहां कुंकमतणा ॥८॥ दूंदाला व्यवहा
री वसे ॥ पंकजसरिखा आनन हसे ॥ चंद्रानती चा
ले चमकती ॥ नेपुर झांझर रमझमकती ॥ ए ॥ हय
गय रथ पायक परिवार ॥ गह मह अहनिस रहे दर
बार ॥ मानतुंग राजा करे राज ॥ मकरध्वज रूपे
वरु लाज ॥१०॥ वाच काछ निकलंक नरेस ॥ जस
नय सेवे शत्रु विदेश ॥ परिजनने अमृतसम जिस्यो
॥ खलने अनलसम अचरिज किस्यो ॥ ११ ॥ जन
पद सोल तणा नृपतणी ॥ पुत्री विलसे प्रीते घणी
॥ महिपति ते स्त्रीये परवर्यो ॥ सोल कला लेई श
शी उतर्यो ॥१२ ॥ बुद्धिनिधान सुबुद्धि परधान ॥
ते ऊपर नृपनो बहुमान ॥ न्यायें राज करे नृपाल ॥
पभणे मोहन पहेली ढाल ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥एक दिन छंद पूरी करी,बेठो अवनीनाथ॥ ऊन्ना सेवक आगले, जोरुी जोरुी हाथ ॥ १ ॥ नृत्यकार नाटक करे, गायनपण करे गान ॥ बंदीजन बोले बिरुद, ज्रुंजे पान सुपान ॥ २ ॥ एहवे सिंध्यासमय तिहां, प्रगट्यो रंग असंख ॥ रुल्लर रुणकारा थया गरजे घन जेम शंख ॥ ३ ॥ हय गय रथ वहेता र ह्या, गहमह थई प्रतिगेह ॥ चंचल हुई पदमिनी, कुलटा तस्कर जेह ॥ ४ ॥ दीपकयोति थई सुन्नग, ठाम ठाम जलकंत ॥ मानुं नयरी नयणकरी, नरप तिने निरखंत ॥ ५ ॥ याम एक गई जामिनी, सन्ना विसर्जी राय ॥ श्रोता सांन्नलजो हवे, जे कौतुक इहां थाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ हमीरांनी देशी ॥

॥ महीपति मनमां चिंतवे, निरखुं नगरस्वरूप ॥ चतुरनर ॥ परिजनमें ईहांमाहरो ॥ केहवो छे न्याय अनूप ॥ चतु० ॥ १॥ सूरिजन सांन्नलजो कथा, रसिक थई देई कांन ॥ च० ॥ ऊपजसे रस रंगनो, चाख्याथी जेम पान ॥च०॥सु०॥ २ ॥ मुरु ऊपर माहरी प्रजा, केहवो राखे छे नेह ॥ च० ॥ के छे स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रवे स्वारथी, के आज्ञाकारी एह ॥ च० ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ ऊख्यो परीक्षा कारणे, नरपती लेई करवा ल ॥ च० ॥ नीलवसन उंढी करी, चाख्यो थई उ जमाल ॥ च०॥सु०॥४॥ चाचर चोहटे गलिये नमे, एकलमो नरराज ॥ च० ॥ गलिये गलिये सांनले, निजजसनो आवाज ॥ च०॥सु०॥ ५ ॥ लोक सकल कहे आपणे, राजासमो नहि कोय ॥ च० ॥ वाक्य वछल हरिचंद जिस्यो, भुजबलनीम ज्यूं होय ॥च०॥ सु० ॥ ६ ॥ आपणी नगरीमे नथी, चौरादिकनी नीत ॥ च० ॥ नवि लीये कोई तृणो पड्यो, रामना राजनी रीत ॥ च० ॥ सु० ॥ ७ ॥ करदंम नही कोइ ऊपरे, दंम देवल अतिचंग ॥ च० ॥ बंधन धम्मिले अढे, तामना जलघटी संग ॥च०॥सु०॥८॥ प्रगटयुं नाग्य प्रजातणुं, राजननी थई रूप ॥च० ॥ वाय हजी लाग्यो नथी, कलियुगनो तनु नूप ॥च०॥ ॥ए॥ ए महिपति चिरंजीव जो, म होजो ऊनो वाय ॥ च० ॥ खारे दरीये जई पमो, नृपनी अलाय बला य ॥ च० ॥सु०॥ १० ॥ प्रभु एहना मनमातणी, पू रजो नितप्रते आस ॥ च० ॥ लोढाजो एहना सदा, दुरजन थइने कपास ॥ च०॥सु०॥ ११ ॥ एह नृप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने गुणेकरी, खेच्यो छे जसनो वितान ॥ च० ॥ ते हने तुं त्रिभुवनधणी, मत करजे नुकसान ॥च०॥सु० ॥ १२ ॥ एम प्रजाना मुखथकी, जिहां तिहां सुणी वात ॥ च० ॥ मनमें अतिविकसित थयो, जेम जल धरेंडुमपात ॥ च०॥सु०॥ १३ ॥ धन धन ए माहरी प्रजा, मुऊ ऊपर धरे राग ॥ च० ॥ सहुए वांछे छे भलुं, माहरुं पूरण भाग ॥ च० ॥ सु०॥ १४ ॥ मोह नविजयें हेजशुं, भाषी बीजी ढाल ॥ च० ॥ कहीस सरस हवे हुं कथा, सांभलो बाल गोपाल ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आगल नरपति संचर्यो, दीठो कौतुक एक॥ कन्या पांच मली भली, वधते रूप विवेक ॥ १ ॥ समरूपे सरिखे गुणे, सरखी वय सोहंत ॥ गोरी गुणनी उरमी, सुरनरमन मोहंत ॥ २ ॥ पहेरी पीतांबर प्रवर, सोल सजी सिणगार ॥ भोली टोलीयें मली, रमवानें तेणीवार ॥ ३ ॥ कुब्जरूप महीपति करी, निरखे कन्याकेलि ॥ क्रिमा आरंभे हवे, पंचे गजगति गेल ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल त्रीजी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे, दस गज फाटो चीर रे हूंबे ॥ आवे रे उलगाणा तारी कांकणीने जूंबे ॥ ए देशी ॥

॥ चरणे बांधी घूघरा रे, फरहरतां करी वस्त्र रे बाला ॥ ढलता रे मूक्यां शिरथी गोफणा फूंदाला ॥१॥ विमल कमल लेई बिहूं करे रे, घाले हसि गल बांहिरे दोरुी ॥ जाणे रे मतवाला मूक्या कलत्रला रे ठोरुी ॥ २ ॥ क्षिणमे पय करी एकठारे, एकएकना ग्रहे हाथ रे कूदी ॥ मातीरे रस राती ताती लेवती रे फूदी ॥ ३ ॥ घाले घुंमण घुंमतीरे, पयतलनी परुता ल रे रूरुी ॥ खलके रे चलकारा हाथे सोत्रतीरे चूरुी ॥ ४ ॥ गाती गीत सुकंठथी रे, ऊांऊरना ऊणकार रे रंगें ॥ जाणे रे कहूकी कोकिल अंबने प्रसंगें ॥५॥ एरुी एक उत्री रहे रे, चक्रपरे फेर फरे रे थोरुो ॥ दोरुीने ले घेरी पाणी पंथनो ज्युं घोरुो ॥ ६ ॥ एक एकने ताली दीये रे, मलकती करती हास रे वारु॥ वसननी जोतें दीपक हार तो ते वारु ॥ ७ ॥ नाचे नवनव रीतथी रे, छंद अने उपछंदरे मानें ॥ पोहोची रे न सके कोई किन्नरीयुं गाने ॥ ८ ॥ विस्मय पाम्यो मन्नमां रे, निरखी एहवो ख्याल रे राजा ॥ आलोचे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एहवो तिहां आपथी दीवाजा ॥ए॥ एहशुं गगनथी ऊतरी रे, आवी रमवा काजरे रंगें॥ सहुने सुख हो वे वलि एहने प्रसंगें ॥ १० ॥ टोले मलि ए नाचती रे, अपछर मलीने अत्र रे एहवी॥ बीजी रे सी दीजे एहने उपमा रे केहवी ॥ ११ ॥ नाखीयें एहने ऊ परे रे, उर्वसीने उवार रे साचे॥ खेचरीयो सुरनारी बापमी सुं नाचे॥१२॥ के ए पातालनी सुंदरी रे, आवी रमवा काज रे रेणी॥ मेतो रे नव दीठी एवी कोई मृगानेणी ॥ १३ ॥ आज चले इहां नीसर्यो रे, अचरिज जोवा काज रे हूं तो॥ नहि तो ए कौतुक नयणे किहां थकी रे जोतो ॥ १४ ॥ आज नयण पावन थयां रे, वदनमें अमृत बिंदू रे पीधुं॥ चोरीने कन्याये माहरुं मन्नडुं रे लीधुं ॥ १५ ॥ एहवे रूपें बालिका रे, किम घमी सक्यो किरतार रे साथे ॥ एहवी रे लिपी रुमी बेठी क्यांथकी रे हाथे ॥१६॥ चिंतवतो एम नूपती रे, ऊनो समीपें आय रे ठानो॥ सांनलतो चित आणी गीत थई एकतानो ॥ १७ ॥ मोहनविजयें रंगथी रे, नाखी त्रीजी ढाल रे मीठी॥ कहिये ठे सुकथा जेहवी शास्त्रमांहे दीठी ॥ १८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ एहवे थाकी बालिका, रामत करीने ताम ॥ खेद खिन्न हुई थकी, बेठी सहु एक ठाम ॥ १ ॥ मानवती धनदत्तधिया. निवसी कुमरी मद्य ॥ सोहे एह वी सील जिम, वीट्यो हूतो लक्ष ॥ २ ॥ रोहिणिना तारकपरे, सोहे कन्या पंच ॥ मांडे अंतरगत तणी, वातो तजी खल खंच ॥ ३ ॥ नृप जोतो हर णीपरें, ऊन्नो निसुणे वात ॥ वातो जे थाय इहां, मूकी सुणो व्याघात ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ मानवती नणी ताम वदे चउबालिका, रे रे सांनल प्राणतणी प्रतिपालिका ॥ रामतमांहे आज विलंब न कीजीयें, खेली खेल अशेषके लाहो ली जीयें ॥ १ ॥ थोमामांहें काज घणो न बिगामिये, थोमी रही छे रेण रमीने गमामिये ॥ ए मेलो ए रात जाए सोहणा जिसी, उंठो उतस्यो खेदके ढील करो किसी ॥ २ ॥ जाय छे आजनी रात ते कोमिटंका समी, नोली थाए असुर गृहे पोहोचो रमी ॥ लटका चटकामांहे जे कोई न माणसे, तो बालापण एह पछें

शुं जाणसे ॥ ३ ॥ इम कहे वारंवार सखी आदर घणे, मानवती तव तास ईर्स्या वायक जणे ॥ रे स हीयो केम आज करो हठ एवमो, सहुए थई एक राग पुठे मुऊ कां पमो ॥ ४ ॥ फोगट जोगवे कोण बाई ऊजागरो, थोमामांहे सवाद हवे तो मयाकरो ॥ वलि इहां रामत काले रमसुं नवनवी, हरणी ढली आकांसके वेला बहू हवी ॥ ५ ॥ गीततणा जणकार जो श्रवणें वागसे, सूता लोक सवे इहां ऊबकी जा गसे ॥ अतिक्लेसें जे अर्थ करे स्यो फायदो, आवजो काल ईहांयके आपणो वायदो ॥ ६ ॥ मानवती जणी ताम चारे चतुरा कहे ॥ हे बेहेनी अमवाततें तुंतो नवी लहे ॥ काल अमारो तात उत्सव मंमावसे ॥ चा रेने वर चार जला परणावसे ॥ ७ ॥ परण्या पठे तो होसे रहेवुं सासरे, अहर्निस बे कर जोमी पीयुनें आसरे सासु ससरो जेठ नणंदी वमी शिरें, तेहनी लाज अ तीव करेवी बहूपरे ॥ ८ ॥ करवो घरनो काम अहो निस चडवडी, नही परवार लिगार रहे एके घडी ॥ चालवुं मन अनुजाइ सहुसुं सुंदरी, परणे जूचरी खे चरी कोण पुरंदरी ॥ ए ॥ बालपणाना मित्रतणो अ लजो सही, नीगमवो जमवारो खुंणे बेसी रही ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घुंघटना पटमांहे सदा मुख राखवुं, हलवे हलवे कं ठथी वायक जाखवुं ॥ १० ॥ नजरथी अध खिण मात्र न मूके पीऊमो, जेम ग्रहि घाल्यो पंजरमां शुक जीवमो ॥ तेमाटे सखी आज रमो हुंजर जरी, मानी ल्यो मनुहार घणे आदर करी ॥११॥ पछे एम मलीने क्यारे रमसुं वालही, गलिया वृषजतणी परे बेसी तूं कां रही ॥ ताहरां सगुणां बोल ते तो नहि विसरे, तुऊथी रहेवुं दूर रखे प्रजु ते करे ॥ १२ ॥ चोथी ढाल रसाल ए कांन जगावती, मोहनविजयें रंगें कही मन जावती ॥ निसुणी श्रोता लोक हृदयसुख पामसे, सांजलजो हवे मानवती जे बोलसे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मानवती सहीउं प्रते, मधुरे वचने वदंत ॥ रे रे सुगुण सहेलियो, परण्या कीधो कंत ॥ १ ॥ रहेसो जइने सासरे, वहूवारु थई सार ॥ पियूंथी रहेसो बीहतां, तो धिग तुम अवतार ॥ २ ॥ जो प्रीतम वस कीजीये, तो परण्यो परमाण ॥ नहि तो जेम करी कूकसे, जरवो पेट अजाण ॥ ३ ॥ गुणवंतीने आ गले, स्यो बल दाखे नाथ ॥ तेम वले जेम वालिये, वृषजतणी जेम नाथ ॥ ४ ॥ सुजगो नारी चरित्रनो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोई न पाम्यो पार ॥ कोटिकोटियुग पच रहें, पोते सरजणहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ आज धरा हुवो धुंधलो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ साहेलडीहे ॥ मानवतीना सुणी बोलमा हो लाल, चतुरा चमकी चार ॥ साहेलमीहे, उलंभा देवा भणी ॥ हो लाल ॥ एम कहे थई हुसियार ॥सा०॥ मोटा बोल न बोलीयें ॥ हो लाल ॥१॥ नानामुखथी एम ॥ सा० ॥ बोलीयें एहवुं वरे पडे ॥ हो लाल ॥ कहे अणघटतुं केम ॥ सा० ॥ मो० ॥ २ ॥ नारीनो नर आगले ॥ हो लाल ॥ स्यो आसरो कहेवाय ॥सा०॥ कोमिटंकानी मोझमी ॥ हो लाल ॥ तो पण पहेरवी पाय ॥ सा० ॥ मो०॥ ३ ॥ कृष्णागर घणुं रुअमो ॥ हो लाल ॥ पण पावकमांघलाय ॥सा०॥ तटनी घणुं विषमी हुए ॥ हो लाल ॥ पण सायरमां समाय ॥सा० ॥मो०॥४॥ विषधर हूए घणो वांकमो॥हो लाल ॥ बिलमां सीधो होय ॥सा०॥ एम उखाणा छे घणा ॥ हो लाल ॥ पार न पामे कोय ॥सा०॥मो०॥५॥ पीयू केम जाये छेतस्यो ॥ हो लाल ॥ अमें तो अबला बाल॥सा०॥ दीछे मारग संचरुं ॥ हो लाल॥ पीजें पाय पखाल ॥सा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥मो०॥६॥ कंतनो गायो गायसुं ॥ हो लाल॥अमचो कामण एह ॥ सा० ॥ केवलि वातें रीजवुं ॥ हो लाल ॥ के करी नवलो नेह ॥सा०॥मो०॥ ॥ ७ ॥ के जोजन युगते करी ॥ हो लाल ॥ के वली सजि सण गार ॥ सा०॥ के वली गीत गानेकरी ॥ हो लाल ॥ करसुं मुदित जरतार ॥ सा० ॥ मो० ॥ ८ ॥ चालीयें केम प्राणेशथी ॥ हो लाल ॥ थइ उंपरांठा ठेक॥सा०॥ कपटें रमीयें तेहथी ॥ हो लाल ॥ तो डुहवाए प्रजु एक ॥ सा० ॥ मो० ॥ ए ॥ पालव बांध्यो जेहथी ॥ हो लाल ॥ तेहथी केम डुवे कूरु ॥ सा० ॥ गरुरु आगल लघु चरुकली ॥ हो लाल ॥ किहां लगे जाए जरु ॥ सा० ॥ मो० ॥ १० ॥ त्रटकी मानवती तिहां ॥ हो लाल ॥ बोली जृगुटी चढाय ॥ सा० ॥ रहो रे बाइ अण बोलीयुं ॥ हो लाल ॥ सी करो वातो बनाय ॥ सा० ॥ मो० ॥ ११ ॥ नारीयुं कामण गारीयुं ॥ हो लाल ॥ नर बापडा कुणमात्र ॥ सा० ॥ नारीये केइने ठेतर्या ॥ हो लाल ॥ सुं तुमे नवि सुणीवात ॥ सा० ॥ मो० ॥१२॥ उमया ईस नचावीयो ॥ हो लाल ॥ वलि अहिल्यायें सुरेश ॥सा०॥ अपजरायें रुषि जोलव्यो ॥हो लाल॥ गोपीयें वली गोपेश ॥ सा०॥ मो ॥१३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

युवती जोरावर जो हुवे ॥ हो लाल ॥ वाल्लिम थई रहे दास ॥ सा० ॥ पीउने वश नारी थई ॥ हो लाल ॥ जनम अलेखे तास ॥ सा० ॥ मो० ॥ १४ ॥ मोहनविजयें रंगसुं ॥ हो लाल ॥ पन्नणी पांचमी ढाल ॥ सा० ॥ जे जे मानवती कहे ॥ हो लाल ॥ ते सांन्नले न्नूपाल ॥ सा० ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहीयुं मानवती न्नणी, कहे यदि तूं परणेस ॥ त्यारें वश करजे पिऊं, कीम न्नोली राखेस ॥ १ ॥ वलतुं मानवती कहे, ज्यारे परणिस कंत ॥ एतीविध त्यारे करीस, ते निसुणो उदंत ॥ २ ॥ पीसे चरणोदक पीयुं, जिमसे फुवुं अन्न ॥ सहसे टुंबा मस्तके, करसे कोड जतन्न ॥ ३ ॥ धरसे करपद मुऊतणे, इम वस करसुं तास ॥ जो ए सघला हुं करुं, तो कहेजो साबास ॥ ४ ॥ चारे कहे हारी अमे, तु ऊथी साचुं मान ॥ इम कही उठी ग्रहन्नणी, पांचे रूपनिधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ दोरी मारी आवे हो रसिया कमतले ॥ ए देशी ॥

॥ धरणीधव तव धुज्यो सांन्नली, मानवतीना रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बोल ॥ चतुरनर ॥ किम ए बाला एम बोली गई, एहवा वयण निटोल ॥च० ॥१॥ सांजलजो हवे कौतुक नी कथा, चूंप करी चित लाय ॥ च० ॥ जो जो लखित लेख न मिटे कदा, करे जो कोडि उपाय ॥ च०॥सां०॥ २ ॥ रूपें रूडी पण कूमी हिए, न्हानी पण विषकंद ॥ च० ॥ अमृतरूपें विष दीसे अढे, जुउं जुउं एहना रे फंद ॥ च० ॥ सां० ॥३॥ हूंसतो मनमां घणी राखे अ ढे, मोटी मेरुसमान ॥च०॥ हजी ए बाला उन्नरे ढे हवे, निठ हूई बिहुपान ॥ च०॥सां०॥ ॥ ४ ॥ आवे ढे फीण हजी पय पाननां ॥ घाले ढे नजबाथ ॥ च० ॥ वांढे सायर तरवो जुजेकरी, अचरिज ए जगनाथ ॥ च० ॥ सां० ॥ ५ ॥ ए किम पीयुने पाय लगाडसे, त्रटकी बोली रे एह ॥ च० ॥ में तो पांचमे रूमी गणी हती, रूपवती गुणगेह ॥ च०॥सां० ॥ ६ ॥ पण ए रूप देखी नवि राचिये, अधिको गुण सुप्रमाण ॥ च० ॥ काम पडे कांई काम आवे नहि, गुणविण लालकबाण ॥ च० ॥ सां ०॥ ७ ॥ दीधी खो रु एकेकी रतनमें, दैवे थई निःशंक ॥ च० ॥ खारो पयोधि तरुणी करयो आकरो, शशिने दीध कलंक ॥ च० ॥सां०॥८॥ तिम ए घणुं ए बीजे गुणेजरी, पण अव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गुण एक एह ॥ च० ॥ बांगड बोलीने धींठो घणुं निगुणिने निसनेह ॥ च० ॥ सां० ॥९॥ एह छे पुत्री केहनी किहां रहे, जोउं एहनो रे गेह ॥ च०॥ छल बल कल करी साहमुं छेतरी, परणुं कन्या रे एह॥च०॥ सां०॥१०॥ पछे ए मुऊने जोउं वश केम करे, केम धो वारसे पाय ॥ च० ॥ ए तो सहीमें पारखुं पेखवुं, पाकुं खोटी तो हुं राय ॥च०॥सां० ॥ ११ ॥ राजा मानवतीने पूछले, क्रोधथी चाल्यो रे जाय ॥ च० ॥ कुवचन होय सहुने अलखामणुं, सुवचन सहूने सुहाय ॥ च०॥ सां० ॥ १२ ॥ मंदिरे पोहोती नृप दिठो नही, पोढी सेजे रे तेह ॥ च० ॥ करि सहिनाणी तांबुल पीकतणी, राये धार्यो ते गेह ॥ च ॥ सां० ॥ १३ ॥ चंपक पादप घरने आंगणे, कुसुम कुरंज सुवास ॥ च० ॥ एह सेंधाणी धारीने वळ्यो, आव्यो नृप आवास ॥ च० ॥ सां० ॥ १४ ॥ सुखनर सेजें नृप जई पोढियो, नांखी छठी ए ढाल ॥ च० ॥ मोहनविजय कहे तुमे सांनलो, आगल वात रसाल ॥ च० ॥सां० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणेनावे निद्रडी, चटपटि नृपने चित्त ॥ क्षण क्षण हियमे सांनरे, मानवतीनुं चरित्त ॥१॥ ॥ आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुर हूवो परणवा, चतुर महीप तिवार॥रयणी विहा णी प्रह थयो, वर्त्या जयजयकार ॥ २ ॥ अरुण उ दय अंबर थयो, भूतल थयो प्रकाश ॥ धेनु वलगा वाछरू, कैरव कीध विकास ॥ ३ ॥ सिंहासन बेठो नृपति, चामर छत्र धरंत ॥ खलक मलक खिजमत करे, भाट बिरुद बोलंत ॥ ४ ॥ भूपति तेमी सचि वने, दीधो आदर मान ॥ भाषे वातो रातनी. हिय डुं खोली ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ करमपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ एदेशी ॥

॥ रयणीए आज नयरमां एकलो रे॥ हुं गयो चर्चा हेत॥ कन्या पांच में दीठी क्रीडती रे, अभिनव विडुम खेत, राजन भाषे रे सचिवने वातडी रे ॥ १ ॥ जे जे दीठी रेण, मंत्रीपण ते मनमांहे धरे रे, थइने नृपनो सेण ॥ रा० ॥२॥ कन्या एक धुतारी पंचमें रे, करुवा बोली रे तेह ॥ वृश्चिक विषथी ते घणुं आ करी रे, सुं कहुं घणुं बुद्धिगेह॥ रा० ॥ ३ ॥ कह्युं ति णे पीयुने पाय लगाडशुं रे, टुंबे घडशुं रे शीस ॥ ए हवां वांकां बोलती बोलडां रे, केम करी वालुं रे रीस ॥ रा० ॥४॥ एहवां वचन सुणीने मुऊने रे, परण्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नी थइ हूंस॥ सेजे सुता नींद आवी नही रे, मुऊने ताहरा सूंस ॥ रा० ॥ ५ ॥ ते माटे तुं पुठत पाधरो रे, पोहोचजे तस आगार॥पीक सहिनांणीजिंते जोयनेरे, वली चंपकतरुद्वार ॥ रा० ॥ ६ ॥ जिम तिम करीने तेहना तातने रे, चोलवी करजे हाथ ॥ कहेजे ताह री पुत्री जाचवारे, मूक्यो ठे महिनाथ ॥ रा० ॥७॥ करजे प्रणिपति तुं माहरी वती रे, मानिस ताहरो पाड ॥ जीवित सुधी गुण नही वीसरूं रे, पालीस रूमां लाम ॥ रा० ॥ ठ ॥ ए कन्याथी वेध ठे वयण नो रे, अवर न बीजो कोय॥ जो ए परणुं ताहरी बु द्धिथी रे, तो मुऊने सुख होय॥ रा० ॥ ए ॥ वचन सुणीने महीपतिना इस्या रे, बोल्यो अमात्य तिवार॥ ए कन्यानो केंहो आसरो रे, अवनीपति अवधार ॥ ॥ रा० ॥ १० ॥ ए तो मुऊथी कारज सहेल ठे रे, क रिस हुं दाय उपाय॥ कहो तो लावुं हरिनी पुरंदरी रे, करीने तुम पसाय ॥ रा० ॥ ११ ॥ मणिधर मा थे नाचे डेमकी रे, ते गारमीने प्रसाद॥ ईसने उपरे करीने पोठियो रे, सिंहथकी करे नाद ॥ रा० ॥१२॥ तिम हुं पण ऊपरथी ताहरे रे, स्यों न करी सकुं का ज॥ तो हूं साचो सेवक राउलो रे॥ जो परणावुं आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज ॥ रा० ॥ १३ ॥ इम महिपतिने देई धारणा रे, उठ्यो ताम प्रधान ॥ नयर संचर्यो मंदिर पेखतो रे, आणी मन अभिमान ॥ रा० ॥ १४ ॥ मोहनविजयें भाषी सातमी रे, सुंदर ढाल ए जोय ॥ मीठी आगल एहथी वातमी रे, सांभलजो सहु कोय ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेरी सेरी ढूंढतो, पीकांकित आवास ॥ जाणे मृगकस्तूरीयो, हिंडे लेतो वास ॥ १ ॥ मूके एक मंदिर सचिव, पेसे बीजे उंक ॥ गुणमोताहलनी परे, पामे विस्मय लोक ॥ २ ॥ इम भमतां दीठो तिहां, चंपकतरु सठांहिं ॥ सहिनांणी सघली मली, हरख्यो घणुं मनमाहिं ॥ ३ ॥ कह्याथकी अधिपति तणे, हुं जोवंतो जेह ॥ ते अनुमाने मानता, निश्चय मंदिर एह ॥ ४ ॥ पेठो ग्रहमे धसमसी, दाससहित शुचिअंग ॥ जिम प्रतिबिंबे मुकुरमे, आननभूषणसंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ अलबेलानी देशी ॥ धनदत्तें दीठो आवतोरे लाल ॥ निजघरमांहे प्रधान रे ॥ रंगीला ॥ चलचित्त अति हुउं तदा रे लाल ॥ जेम हाथीनो कांनरे ॥ रंगीला ॥ प्रायें सुंहालो वाणियो रे लाल ॥ १ ॥ बोबडुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बोलणहार रे ॥ रं० ॥ वातो सो गरणे गले हो ला ल ॥ डाह्यो जेह व्यापार रे ॥रं०॥प्रा०॥२॥ धव धव ऊठ्यो ध्रुजतो रे लाल ॥ बेहडो हाथ विचाल रे ॥ रं० ॥ पकती धोती पहिरतो रे लाल ॥ खमखम हसतो आल रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चिंतवतो मन मां इस्यो रे लाल ॥ केम सचिव मुझ गेहरे ॥ रं० ॥ कोसीने घरे वाघलो रे लाल ॥ केम समाये एह रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ हूं व्यापारी वाणिजं रे लाल ॥ ए तो नृपनो अंग रे ॥ रं० ॥ धाईने जाई मल्यो रे लाल ॥ कारमो करी उबरंग रे॥ रं०॥प्रा०॥५॥ दीधुं अमात्यने बेसणुं रे लाल ॥ नगति युगति करी को रू रे ॥ रं० ॥ तांबूलादि आगें धस्या रे लाल ॥ उनो बे कर जोरू रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कहो केम स्वामी कृपा करी रे लाल ॥ मुझ ऊपर धरी प्रेम रे॥ रं०॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल ॥ प्रगटी मुझ घर गंगरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ कोण प्रयोगें पधारि या रे लाल ॥ कहो मुझ लायक काम रे ॥ रं० ॥हुं पदरज बुं रावलो रे लाल ॥ पाम्यो घणुं आनंद रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ फरमावो कोई चाकरी रे लाल ते करूं शिरने जोर रे ॥ रं० ॥ मांझी साकर घोलवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे लाल ॥ मुखथी करी नीहोर रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ॥ ए ॥ वचन सुणी धनदत्तनां रे लाल ॥ रंज्यो प्र धान विशेष रे ॥ रं० ॥ अतिहि आगतस्वागता रे लाल ॥ वलि निपुणाइ पेखरे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ १० ॥ सचिव कहे मलवा जणी रे लाल ॥ आव्यां बुं अमे आज रे ॥ रं० ॥ तुमे सज्जन छो सेठजी रे लाल ॥ तुम जणि रूडा काज रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ ॥ ११ ॥ नृप बहु तुम ऊपर कृपा रे लाल ॥ राखे छे निसदीस रे ॥ रं० ॥ जेहवा सांजलिया तेहवा रे लाल ॥ दीठा अमे सुजगीस रे ॥ रं०॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मांमी मांहोमांहे वातमी रे लाल ॥ पूछे सचिवजी वात रे ॥ रं०॥ कहो व्यापार किस्यो करो रे लाल॥ केता तुम अंगजात रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ सेठ कहे प्रवहण तणो रे लाल ॥ छे व्यापार कृपाल रे ॥ रं० ॥ पुत्री एक माहरे अछे रे लाल ॥ मानवती सुकमाल रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ सांजलजो श्रोता जना रे लाल ॥ आगल वात रसाल रे ॥ रं० ॥ मोहनविजयें रुअमी हो लाल ॥ नाषी आठमी ढाल रे ॥ रं० ॥ प्रा० ॥ १५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ कहे प्रधान धनदत्तने, ते पुत्री छे क्यांहिं ॥ नयणे तेहने निरखियें, तेमावो तुमे आंहिं ॥ १ ॥ शेठ कहे ते बालिका, गइ अछे सुणो देव ॥ जणवा अध्यापकगृहे, जिमवा आवसे हेव ॥ २ ॥ केहो शास्त्र जणे अछे, तुम पुत्री गुणवंत ॥ जैनधर्म अमआऊनो, साधु समीप जणंत ॥ ३ ॥ कहे प्रधान तुम धर्मनो, समऊावो मुऊ मर्म ॥ श्रवण देइने सांजलो, पामीने सुखशर्म ॥ ४ ॥ धनदत्त कहे सुण साहेबा, आऊधर्मनो मूल ॥ जेहवो गुरुमुख सांजळ्यो, निसुणो थइ अनुकूल ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ ते तरिया जाई ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ जीवदया गुणधर्म अमारो ॥ दुहवुं नही अमें कोइने रे ॥ मऊन प्रमुखे जल वावरियें, भूतलजंतु जोइने रे ॥ जी० ॥ १ ॥ मंत्र नवकार जपोजे अहर्निस, जावें दृढ मन राखी रे ॥ एहथी केई नर संपद पाम्या, शास्त्र अछे केई साखी रे ॥ जीव० ॥ २ ॥ तरण तारण जिन पंचम नाणी, करियें तस पदसेवा रे ॥ कर्मसुजटने दूर करेवा, शिवपदना सुख लेवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ जीयकोइ जीयमान महामुनि, ते हना मुखनी वाणी रे ॥ दानादिक अधिकारे जावि, ते सुणियें हित आणी रे॥ जी० ॥ ४ ॥ शास्त्र जिना लय जिननी मूरति, संघ चतुर्विध जव्य रे ॥ ए सातें क्षेत्रें वावरियें, शक्ति यथोचित द्रव्य रे ॥ जी०॥५॥ व्रत पचखाण पोसह पमिक्कमणुं, विधिपूर्वकथी क रियें रे, ए संसार असार निहाली, विनयाज्यास अनुसरिये रे ॥ जी० ॥ ६ ॥ पृथिव्यादिकनो जे आरंज, थोडो जार ते लीजें रे॥ पूरो आरंज निवारी न सकिये, तो पण थोडुं कीजे रे ॥ जी० ॥ ७ ॥ जेहवो जीव पोतानो तेहवो, परनो पण जाणीजें रे ॥ द्वादशव्रत धारक कहेवाउं, परनिंदा नवि कीजें रे॥जी० ॥८॥ मिथ्यामतिने तो नवि मानुं, गोगादिक नवि पू जूंरे ॥ कोइ जीवने वध बंधन करतां देखीने अमे धु जूंरें ॥ जी०॥९॥ जेद गहन जिनधर्मतणा जे, नाणी विण कुंण जाणे रे ॥ तत्वज्ञान विण निज निज म तने, अज्ञानें मत ताणे रे ॥ जी० ॥ १० ॥ अंधपुरुष जेम गजने पेखे, अवयव गजने प्रमाणे रे ॥ दृष्टि वंत गज पूरण देखे. तिम नयजेद वखाणे रे ॥ ॥ जी० ॥ ११ ॥ एहवां वचन धनदत्तनां निसुणी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रमुदित हुउं प्रधान रे॥ वाह्वाह् न्नाई धर्म तमारो॥ पावन कीधां कान रे ॥ जी० ॥ १२ ॥ एहवे रमझम करती आवी, मानवती मनरंगें रे ॥ विनयसहित प्रणिपात करीने ॥ बेठी तात उछंगें रे ॥ जी० ॥१३॥ लावण्यता सुंदर देखीने, नृपसेवक इम जाणे रे ॥ न्याये ए कुमरीने ऊपर, नृपति एकंगो ताणे रे ॥ ॥ जी० ॥१४॥ ए कुमरी नृपने परणाविस, चिंतव्युं ठे जो कृपाल रे ॥ मोहनविजयें हेजे न्नाषी, नवमी ढाल रसाल रे ॥ जी० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चकितचित्त हुउं सचिव, रूप निहाली जेह ॥ शुं शशिमुख दिसे सही, मुखप्रतिछाया एह ॥ १ ॥ कोटि विरंची जो लिखे, एह लिप तो न लिखाय॥ रचित रचाणो रूप ए, जिम न्नमराकर न्याय ॥ २॥ सचिव कहे तव शेठने, रसनां वचन अमोल ॥ जो मानो माहरो कह्यो, तो न्नाखुं एक बोल ॥ ३ ॥ कहिये ने मानो नही, तो कहेवुं ते आलि ॥ कचरा में नांखे कवण, मुरख कंचन झालि ॥४॥ शेठ कहे न्नाषो प्रन्नु जे मुऊ लायक काम ॥ हुं बुं राजनो टे लीउं, तुमे स्वांमी अन्निराम ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केसरवरणो हो काढ कसुंबो मारा लाल॥एदेशी ॥

॥ सेठ पयंपे हो सचिवने आगें॥ मारा लाल॥क हेतां तुमने हो दामसुं लागे ॥ मा० ॥ जाष्या मोरे हो इम कां विचारो ॥ मा० ॥ मोजां पाणी हो विण कां उतारो ॥ मा० ॥ १ ॥ एहवो क्यांथी हो जाग्य अमारो ॥ मा० ॥ कीजे साहिब हो काम तुमारो॥ मा० ॥ जे तुमे कहेसो हो ते अमे करसुं ॥ मा० ॥ विगर कहेथी हो माये न पीरस्युं ॥ मा० ॥ २ ॥ इम अति आदर हो सेठनो जाणी ॥ मा० ॥ सचिव ते वारे हो बोल्यो वाणी ॥ मा० ॥ ए छे विनती हो सु जग अमारी ॥ मा० ॥ भूपति चाहे हो पुत्री तुमारी ॥ मा० ॥ ३ ॥ आव्यो हुं कहेवा हो ते हुं तुमने ॥ मा० ॥ राजी करीने हो सिख द्यो अमने ॥ मा० ॥ राजन सरिखो हो होसे जमाई ॥ मा० ईज्य तु मारी हो पूर्ण कमाई ॥ मा० ॥ ४ ॥ पुत्री तुमची हो होसे सोहेली ॥ मा० कोइ वाते हो नहि थाय दोहेली ॥ मा० ॥ अवसर एवो हो फिरि नहि आ वे ॥ मा० ॥ गान प्रमाणे हो गावण गावे ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ जेवो वायरो हो उंलो लीजे ॥ मा० ॥ पण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नृपसेंती हो हठ नवि कीजे ॥ मा० ॥ कारज तत
क्षिण हो कीजे विचारी ॥मा०॥ कंबल लीजे हो तिम
होये नारी ॥ मा० ॥ ६ ॥ खोली मनमो हो कहो हूं
कारो ॥ मा० ॥ नहितर ए बे हो नृपति अटारो
॥ मा० ॥ थरक्यो धनदत्त हो निसुणी वाणी ॥ मा०
॥ सचिवने नाषें हो कां कहो ताणी ॥ मा० ॥ ७ ॥
नृपथी अलगो हो हूं बुं किवारे ॥ मा० ॥ पुत्री बे
हाजर हो कहेसो जिवारे ॥ मा० ॥ ते दिन होवे
हो जे दिनराजा ॥ मा० ॥ आवे अंगण हो वधते
दीवाजा ॥ मा० ॥ ८ ॥ आसरो केहो हो पुत्री केरो
॥ मा० ॥ बीजो कोइ कहो काज उवेरो ॥ मा० ॥
वस्तु केही हो नृपने न घटे ॥ मा० ॥ ते श्यां फूल
मांहो शिवने न चढे ॥ मा० ॥ ए ॥ जाउं पधारो हो
नृपने नाषो ॥ मा० ॥ लगन लेवामो हो मुहुरत दा
खो ॥मा०॥ चोकस कीधी हो सचिवें सगाई ॥ मा० ॥
ऊठी नृपने हो दीधी वधाई ॥मा०॥१०॥ रंज्यो महि
पति हो केतव गेही ॥मा०॥ खटके चितमे हो वाय
क तेही ॥मा०॥ तेड्यो पंमित हो लगन निहाली ॥
॥मा०॥ करशुं राजी हो आठे ताली ॥ मा० ॥ ११ ॥
नाख्युं नाषो हो पंडित जोई ॥ मा० ॥ नीमी आपो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो सुलग्न कोई ॥मा०॥ खोले पुस्तक हो लालच वा ह्या ॥ मा० ॥ योतिष केरा हो पुस्तक साह्या ॥ मा० ॥ १२ ॥ दूषणविहुंणो हो लगन ते लीधो ॥ मा० ॥ भूपें तेहने हो अतिधन दीधो ॥ मा० ॥ अतिसनमा नी हो गृहे पोहोचाव्या ॥ मा० ॥ पासा ढलीया हो नृप मन भाव्या ॥मा०॥ १३ ॥ हर्षपयोधि हृदयें न मावे ॥मा०॥ उत्सव महोत्सव हो भूरि उपावे ॥मा० ॥ पण कोइ नृपनो हो गुह्य न जाणे ॥ मा०॥सहुको साचुं हो करीने प्रमाणे ॥ मा० ॥ १४ ॥ आगले जोजो हो करमनी कांणी ॥ मा० ॥ पण ते ढाले हो वहेसे पाणी ॥ मा० ॥ ढाल ए दसमी हो मन थिर राखी ॥ मा० ॥ मोहनविजयें हो रंगें भाखी ॥ मा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेवक नृप आदेशथी, जलासक्तिकृतभूमि॥सि णगाख्यो पूर विवाहपर, कृष्णागरकृत धूम ॥ १ ॥ समियाणा ताण्या भला, तिम तोरण लहकंत ॥ भा णे घटा घन झंनही, केकी नृत्य करंत॥ २ ॥ मृगम द सूधा अरगजा, परिमल करता भूरि ॥ घरघर ढो ल धमाल अति, नेह सरुदंता तूरि ॥ ३ ॥ कमध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीया जाने मल्या, केशरमे गरकाव ॥ ताता तुरी कु दावता, आलुंदा नरराव ॥ ४ ॥ धनदत्ते हवे मंदिरें, मांड्यो अतिउछरंग ॥ वहिल सुखासन पालखी, सिणगाव्या शुचि अंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ ए देसी ॥ मानतुग म हीपाल, जान सजीने हो परवर्त्या रंगशुं जी॥गुहिरा घुरेरे निसाण, ताल कंसाल ने भुंगल जंगसुं जी॥१॥ गजहलका सोहंत, सोवन सांगत घोडा घूमराजी ॥ गुमियां गयण गुजंत, आगल दोडे अलवे ऊंबरांजी ॥२॥ नृपशिर सोहे छत्र, वली शुभपूजित फबतो सेह रो जी ॥ चामर ढले चिहुं उंर, फरहरतो वागो केह रोजी ॥ ३ ॥ लीधो श्रीफल हाथ, कुंकुमतिलके तंडुल भावियाजी ॥ इणे आमंबरे राय, धनदत्त शेठने मंदिर आवियाजी ॥ ४ ॥ तोरण मोतियें वधाव, वरकन्याने चोरियें पधरावियां जी ॥ रति मकरध्वज जेम, रूप उभयनां सहुने सोहाविया जी ॥ ५ ॥ पंचामृतनो होम, द्विज बेठा वेद चर्चा करेजी ॥ वाजे मंगलतूर, गाजे अंबरलोकां गहगहे जी ॥ ६ ॥ सोहला सरले साद,गावे गोरियां करगल बाहमी जी ॥ वर कन्याने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शीस, ऊपर कीधी सखरी ढांहडी जी ॥ ७ ॥ मान वती मनमांहे, हरषे पीयुनां मुखने निरखती जी ॥ घुंघटना पटमांहे, वारंवारें नयणां फेरती जी ॥ ८ ॥ ढेहरा ढेहडी बांधी, फेरिया फेरा चारे चोरियां जी ॥ आरोग्या कंसार, दंपतीमुखमां दिये कोलियां जी॥९॥ जोजनयुगति अशेष, सहुने संतोषी कीधा वरणागिया जी ॥ वरत्या जयजयकार, मानवती ने महिपति परणिया जी ॥ १० ॥ अर्थीजनने दान, देई सहुनां मान वधारियां जी ॥ सुंदरी लेई संग, मानतुंग राजा महेलपधारियां जी ॥ ११ ॥ पुरिजन करे प्रशंस, धन्य धन्य कन्या ए वरने वस्यो जी ॥ युगतो जोमो एह, किहांथी ब्रह्माएं पेदा कस्यो जी ॥ १२ ॥ धनदत्त चिंतवे चित्त, हुई सगाई घणुं मनमां गमी जी ॥ नृपसरिखा यामात, ढे हवे माहरे सानी कमीजी ॥ १३ ॥ गिरुइ ग्रहिये जोबांहिं, तो सवि वातो रुडी थइ रहेजी॥ आसरे नागरवेलि, पत्र पलासनो नृप कर जइ चढे जी ॥१४॥ नीच सरीसी गोठ, किहां लगें कीधी आखर थिर रहेजी ॥ जिम उन्मत्त खरनाद, ऊंचो ऊंचो केतो क निवहे जी ॥१५॥ मुऊ पुत्रीनो जाग्य, हुई नृपनी रूमी अंतेउरी जी ॥ इम फूले मनमांहे, जऊक धनदत्त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बेठो फरि फरिजी ॥ १६ ॥ पण महिपतिनी वात कोई डाह्या पण जाणे नही जी ॥ एह अग्यारमी ढाल, मोहनविजयें जलि ढलकती कही जी ॥१७॥

॥ दुहा ॥

॥ मानतुंग महिपति हवे, मंदिरमें मनरंग ॥ मानवती माननी सहित, बेठो धरि उछरंग ॥ १॥ मानवती निज मन थकी, हरखे पियुमुख पेख ॥ दुमकरयणने न्यायपरें, वहे आश्चर्य विशेष ॥ २ ॥ किहां राजा किहां वणिक धुय, किहांथी मेलो एह ॥ ए साचुं के सोहणो, लिखित लेख थयो तेह ॥ ३ ॥ पियुने हुं गुण दाखवी, वश करी राखिस हाथ ॥ एह सलूणी गोठडी, जो मेली छे नाथ ॥ ४ ॥ एकण वक्रकटाक्ष में, पाडिश प्रेमने पास ॥ वेधालूने वेधतां, वार न लागे तास ॥ ५ ॥ एहवी मन आस्या धरे, मृगनयणी तेणि वार ॥ सांजलजो सहु ए जना, जे करशे किरतार ॥६॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ हो कोई आणमिलावे साजना ॥ ए देशी ॥

॥ नृप नयण न मेले नारथी, न करे वलि मनाहार हो ॥ थई रह्यो चित्रतणी परे, मुखे न करे वात लिगार हो ॥नृप० ॥ १ ॥ जेम फणिधरने गारडी, खि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

से मंत्रप्रन्नाव हो ॥ जेम रहे बेसी करंरूमे, तिम थई रह्यो नरराव हो ॥ नृप० ॥ २ ॥ कोपें दग वांकी करी, रमणीथी थयो रूठ हो ॥ प्रीतम मन चोरी करी ॥ वाली बेठो पूठ हो ॥ नृप० ॥ ३ ॥ मानवती चित चिंतवे, कंत न मेले कां मीट हो ॥ रसमां अनरस कां करे, फेरी कां बेठो पीठ हो ॥ नृप० ॥ ४ ॥ शुं कांई मुजमां वालहे, दीठो अवगुण कोय हो ॥ हजी नथी मुऊशुं बोलतो, सहि इहां कारण होय हो ॥ नृप० ॥ ५ ॥ आजथी मांड्यो एहवो, आगल केम निवहाय हो ॥ प्रथम ज कवले मक्षिका, ते नोजन केम खवाय हो ॥ नृप० ॥ ६ ॥ करजोरूी कहे कामिनी, अहो अहो प्राण आधार हो ॥ किम तुमे आमणदूमणा, दिसोठो केणे प्रकार हो ॥ नृप० ॥७॥ हुं बुं कनरूी राजली, मुऊ ऊपर स्यो रोष हो ॥ वाड नखे जो चीन्नरूां, तो केहने दीजे दोष हो ॥ नृप०॥ ८ ॥ आवी वलगी हुं पालवे, ते किम अलगी थाय हो ॥ तेहने ठेली नाखतां, परमेश्वर डुहवाय हो ॥ नृप० ॥ ॥ ए ॥ बोलो नाह मयाकरो, कहुं बुं विठावी गोद हो ॥ धीरज हुं न धरी सकूं, उपजावो आमोद हो ॥ नृप० ॥ १० ॥ कटकीसी कीरूी ऊपरे, तृण ऊपर स्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोठार हो ॥ सांहमुं जूवो रे साहिबा, जो बुझि दि
किरतार हो ॥ नृप० ॥ ११ ॥ अबलानो बल केटलं
तुम आगल महाराय हो ॥ पाय पडुं करुं वीनं
ती ॥ पियुने घणुंशुं कहेवाय हो ॥ नृप० ॥ १२ ॥
वचन सुणी वनितातणां ॥ बोलसे हवे महीपाल
हो ॥ मोहनविजयें सोहामणी, पन्नणी बारमी ढाल
हो ॥ नृप० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानतुंग माननीतणा, वेधाला सुणि वयण ॥
बोल्यो तव हसिने तदा, अरुण करी दो नयण ॥ १ ॥
सांजलने तूं हे प्रिया, आजनी ए नथी रीश ॥ में
तुझने कपटे करी, परणी धरी जगीश ॥ २ ॥ हवे
चरणोदक पावजे, देजे झूठुं अन्न ॥ ताहरे पाय
लगाम जे ॥ करजे जाएयो मन्न ॥ ३ ॥ उंठ किसी
मत राखजे, पूरजे सघली हूंस ॥ जो मुझने वश
नहि करे, तो तुझने मुझ सूंस ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ प्रितडी न कीजे रे नारी परदेसीयां रे ॥ ए देशी॥
प्राणजीवनना रे निसुणी बोलमा रे, चमकी चतुरा
तेवार ॥ पीउडे निहेजे रे वात ए सी करी रे ॥ है है

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तरजणहार ॥ नाहलीउं निहेजो रे थइ रह्यो नारथी रे ॥ १ ॥ नवि हु मनाव्यो रे जाय ॥ मनविण माया रे किम करीने हूवे रे ॥ अबला आकुल थाय ॥ ना० ॥ २ ॥ रे विधि मुऊने रे कंत कां मेलव्यो रे ॥ निसनेहीने निटोल ॥ आगल निगमसुं रे दिनरा केणी परें रे ॥ पीयुने एहवे रे बोल ॥ ना० ॥ ३ ॥ सुरत रु जाणी रे बाथ नरी हती रे ॥ पण थई निवड्यो बंबूल ॥ जो जो करमतणी गती माहरी रे ॥ वालो थयो प्रतिकूल ॥ ना० ॥ ४ ॥ मनमां आश्या रे मेरू जिसी हुंती रे ॥ पीयुंथी करीस विलास ॥ दैव अटा रो रे देखी नवि सक्यो रे ॥ पयनी कीधी रे ठास ॥ ना० ॥ ५ ॥ ठयल ठबिले रे मुऊने ठेतरी रे ॥ पर णी थईने कठोर ॥ सींचि एणे रे कूपक अन्दरें रे ॥ कापवा मांमी रे दोर ॥ ना० ॥ ६ ॥ के शुं वेरण रे किण हिक आवीने रे ॥ इम नंनेस्यो कंत ॥ एकहुं केहने रे दुःखनी वातमी रे ॥ कोइन दीठो संत ॥ ना० ॥ ७ ॥ लाखीणो करीने रे हुंतो लेखती रे ॥ पामी नृप प्राणेश ॥ पण इणे वाले रे पेहेलीज बाजीयें रे ॥ देखाड्यो करी वेश ॥ ना० ॥ ८ ॥ राजा मित्र न होवे केहना रे ॥ ते सवि साची रे वात ॥ मुऊने एह नणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परणावतां रे ॥ पातरियो मुऊ तात ॥ ना० ॥ ए ॥
जो हुं धूरथीरे एह गति जाणती रे ॥ तो सारती
विण नाह ॥ रहेती कुंआरी रे पण परणत नही रे ॥ ए
हवो दुस्तर दाह ॥ ना० ॥ १० ॥ जे युवतीने रे सुख
नहि स्वामिनो रे ॥ जीव्यो तस अप्रमाण ॥ राजा
मुऊथीरे रूसीने रह्यो रे ॥ ते हुं पूतुं विन्नाण॥ना०॥११॥
कहो कांप्रीतम रे मन मेलो नही रे ॥ एहवो मुऊनो
स्यो वंक ॥ खोले घालो रे जे गुनहो होवे रे ॥ जाषो
थईने निःशंक ॥ ना० ॥ १२ ॥ मुऊने धुरथी रे पर
हरवी हुती रे ॥ तो मुऊ परण्या रे केम ॥ हवे तमे
एहवा रे मुजने वालहा रे, मेंणा द्योठो रे एम ॥ ना० ॥
॥ १३ ॥ नाह कहे अमें जूठ न जंपियें रे ॥ खोटुं
केम कहेवाय ॥ वचन संजारो रे तमे कह्यां हतां रे ॥
रामतमा रस लाय ॥ ना० ॥ १४ ॥ कह्युं हतुं वृष
जतणी परे नाहने रें ॥ फेरसुं घाली रे नाथ ॥ ते में
सघला रे वचन ते सांजल्यां रे ॥ तेहथी थयो हुं नाथ
॥ ना० ॥ १५ ॥ मानवतीना उघड्या कांनमा रे ॥
नृपतनी निसुणी रे वाण ॥ अंतरजामी एसाचूं कह्युं
रे ॥ सी हवे ताणोताण ॥ ना० ॥ १६ ॥ मानवती
ना पुण्यतणे बले रे ॥ होसे मंगलमाल ॥ मोहनवि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जयें पजणी प्रेमसुं रे ॥ सुंदर तेरमी ढाल ॥ ना० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानवती कहे रायने, अहो जीवनआधार ॥ रामत मांहें वयण ए, कह्यां हसे अविचार ॥ १ ॥ एहवे वयणे वाल्लहा, नवि राखीजे रीस ॥ मूक्यो आवीने हवे, खोले ताहरे सीस ॥ २ ॥विश्वासी परणी तुमे, हवे दियो ढो ढेह ॥ ए पातक किहां बूटसो हृदय विचारो तेह ॥ ३ ॥ मुझसुं कां थोडे गुने, नेह विणासो कंत ॥ गोद बिठाइने कहुं, मत लियो अबला अंत ॥ ४ ॥ जिम जिम लागुं बुं पगें, तिमथा उं ढो वीर ॥ लोहा बलता ऊपरे, किम ढांटो ढो नीर ॥ ५ ॥ तेगो राखो मियानमां, करो विचारी काज ॥ नहि चाले नारीथकी, मूठ चली वढराज ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

वीढीयानी देशी ॥ हांरे लाल ॥ बालाना सुणी बालडा ॥ चमक्यो नूप तेवार रे ॥ लाल ॥ जाणीयें मूक्यो आकरो ॥ केणे खंध उपर जेम खार रे ॥ लाल ॥ लहिणुं लहिये आपणुं ॥ १ ॥ एहमा नही मीन ने मेष रे ॥ लाल ॥ जो मन तूं जाणे वृथा ॥ तो तूं परगट पेख रे ॥ लाल ॥ ले० ॥ २ ॥ त्रिवली निलाडे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आरोपिने॥बोल्यो नृप करुवा बोल रे ॥ लाल ॥ कहे
रे कहे नर आगले ॥ तरुणी ते केटले तोल रे ॥ लाल
ले० ॥ ३ ॥ नर जे चाहे ते करे ॥ लीये लंका जेहवा कोट
रे ॥ ला० ॥ सिंह सरिखाने हणे ॥ मयगल ने करे
लोटपोट रे ॥ लाल ॥ ले० ॥ ४ ॥ देवदानवने वश
करे ॥ जल उपर बांधे पाज रे ॥ लाल॥ गिरिवरने नर
फेरवे ॥ वलि जांजे अरियण साज रे ॥ लाल ॥ले०॥
॥ ५ ॥ नारी दासी नरतणी ॥ जाणे सहु संसार रे
॥ लाल ॥ जो नर मूके हाथथी ॥ तो नारीने कवण
आधार रे॥ लाल ॥ ले० ॥ ६ ॥ आयउपाय करी घणा
॥ नारीनो नर जरे पेटरे ॥ लाल ॥ नारी बिचारी बाप
रुी ॥ करे घरनो कारज नेट रे ॥ लाल ॥ ले० ॥ ७ ॥
पियुथी विगानी जे प्रिया ॥ तेहनो मुख केम देखाय
रे ॥ लाल ॥ घणु ए जली कंचनबुरी ॥ पण पेटे न
मारी जाय रे ॥ लाल ॥ ले० ॥ ८ ॥ तूं जोरावर जग
तमां ॥ थई दीसे ढे नारी पेदास रे ॥ लाल ॥ मुख
जो ताहरुं बापरुी ॥ जे पीयुने करीस तुं दास रे ॥
लाल ॥ ले० ॥ ए ॥ नरसुं न जायो चंद्रणे ॥ जे
राखीस पीयु करी दास रे ॥ लाल ॥ खोटी पाडूं जो
तुझने॥तो देजे मुझ साबास रे ॥ लाल ॥ ले० ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिंतवे मानवती तदा ॥ पीयुनी सुणी वातो आम रे॥ लाल ॥ परुमां पेठी नाचवा ॥ हवे घुंघटनो स्यो का मरे ॥ लाल ॥ ढे० ॥ ११ ॥ बोली प्रिया प्रीतमप्रतें ॥ इम निपट न ढेडो नार रे ॥ लाल ॥ नारीचरि त्रने दैवनो ॥ किणहि न पायो पार रे ॥ लाल ॥ ॥ ढे० ॥ १२ ॥ जे काम होवे नारीथी ॥ ते नरथी नवि थाय रे ॥ लाल ॥ नर तो बिगारी मजुरिया ॥ नित नारी आगल कहेय रे ॥ लाल ॥ ढे०॥ १३ ॥ नारी कहे जे मुखथकी ॥ ते किमही खोटुं केम थाय रे ॥ ला० ॥ मयंगलदंत जे नीसर्या ॥ ते पाछा न समाय रे ॥ लाल ॥ ढे० ॥ १४ ॥ नारी जाणमुजने तुमे ॥ ढोडो ढो निपट जदायरे ॥ लाल ॥ पाय लगाडुं तुम तणी ॥ तो मानजो मुजरो राय रे ॥ लाल ॥ ढे० ॥१५॥ तो हुं मानवती खरी ॥ जो हुं बोल्या पाछुं बोल रे॥ लाल ॥ उंढ तुमें मत राखजो ॥ अहो नाह निगुण निटोल रे ॥ लाल ॥ ढे० ॥ १६ ॥ आगल जे होवे वातडी ॥ ते सुणजो बाल गोपाल रे ॥ लाल ॥ मोह नविजयें ढेजथी ॥ नाषी अजिनव चौदमी ढालरे॥ लाल ॥ ढे० ॥ १७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ सुणी वचन वनितातणां, मन चिंते महिपाल ॥ तेम्हाव्यो तव सचिवने, भाषे वचन विशाल ॥ १ ॥ अधुना ऊघाडो जई, एकथंभो आवास ॥ सजल सरोवर जिहां अछे, तिहां जई करसुं विलास ॥२॥ अशन वसन घृत गुरुभरो, ततक्षण तिणहिज गेह॥ सचिवे तिमहीज सवि करी, आज्ञा सोंपी तेह ॥३॥ मानवतीनो कर ग्रही, नृप पोहोतो तिण गेह ॥ बे सारी तिहां नारीने, गीरा पयंपे एह ॥४॥ इहां रहे जो एकाकिनी, करजो विविध आहार ॥ प्रतिवरसे लेसुं खबर, म करिस फिकर लिगार ॥ ५ ॥ पण तूं पाय लगाडजे, मुझने करजे दास ॥ वचन रखे तूं वीसरे, होती रखे उदास ॥ ६ ॥ इम कही ते घरबारणें, यंत्र समर्पी भूप ॥ पोहोरायत परठी तिहां, आव्यो गेह अनूप ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥विरहिणी नारी तेह, रहि एकथंभे गेह ॥आछेला ल ॥ निंदे पुरातन कर्मने जी ॥ पाप आलोवे ताम, त्रिकरण करिने ठाम ॥ आ० ॥ मनमां धरी जिनधर्मने जी ॥ १ ॥ एकेंद्रियादिक जीव, दुहव्या होसे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सदैव ॥आ०॥ के तिलयंत्रमें त्ताविया जी ॥ के कोइने करी रोष, दीधा कूंडा दोष ॥ आ० ॥ के खत खोटा लिखाविया जी ॥ १ ॥ पय पीतां लघु बाल, मातथी लीधा उदाल ॥आ०॥ के कीमी बिल पूरिया जी ॥ व्रत लेई थइ शिष्य, कीधा त्तद्र अत्तद्र ॥आ०॥ के कंदादिक चूरियाजी ॥ ३ ॥ पापकर्म फल तेह, उदये आव्यां एह ॥ आ०॥ कर्म कस्यां बूटे नहीजी ॥ ए सवि आपणो वंक, एहमां नहि कांइ शंक ॥ ॥ आ० ॥ इम आलोचे रही रही जी ॥ ४ ॥ रे रे सरजणहार, पियुविरहिणी थइ नार ॥ आ० ॥ एहवा किम लिख्या अरकरा जी ॥ सी चोरी तुऊ कीध, वालिम विरहो दीध ॥आ०॥ ए तुज लखण न सखरां जी ॥ ५ ॥ नारितणो अवतार, कां दीधो किरतार ॥ आ० ॥ पीयुडो कां एहवो मेलव्यो जी ॥ मात पिता रह्यां दूर, पीयू पण नही हजूर ॥ आ० ॥ स्यो तुज ग्रास मे त्तेलव्यो जी ॥ ६ ॥ मात पितासु विशेष, राखता गोद हमेस ॥ आ० ॥ ते पण मूकी किहां गया जी ॥ अबला एकाकी एह, नाखी एणे गेह ॥ आ० ॥ प्रत्तु तुऊने नावी दया जी ॥ ७ ॥ कुलगुरु गोत्रज देव, जेहनी करती सेव ॥ आ० ॥ ते

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पण किहां गया इण समे जी ॥ हवे कांई उपावुं बुरू, बेठी मंदिरमुरू ॥ आ० ॥ नाह निठुर केणीपरे नमे जी ॥ ८ ॥ स्युं हवे विलपवुं आम, धैर्यतणुं छे काम ॥आ०॥ रोयां राज न पामिये जी, इहां कुण करी सके नीर, जस दूखे तस पीर ॥ आ० ॥ तप करूं जिम दुःख वामिये जी ॥ ए॥ मांमयो तप बहु नंत, नवपद सुनग जपंत ॥ आ० ॥ मन दृढ करी तिण मे हेलमें जी ॥ जेहने धर्म सहाय, आपद विलये जाय ॥ आ० ॥ चाहे ते लहे सेहेलमें जी ॥ १० ॥ जोतां इण संसार ॥ अमवमियां आधार ॥ आ० ॥ धर्म्म छे नीरू नागातणो जी ॥ पापी न तरे कोय, करी देखो सहु कोय ॥ आ० ॥ धर्मथकी जस जय घणो जी ॥ ११ ॥ प्रतिक्रमणां बिहु टंक, सा करे थई निसंक ॥ आ० ॥सामायिक व्रत साचवे जी॥नृपने लगामवा पाय, आलोचे आयउपाय ॥आ०॥ कौतुक नवि सुणजो हवेजी ॥ १२ ॥ बेठी सदनमझार, करसे बुद्धिप्रचार ॥ आ० ॥ पालसे वचन कह्यां सही जी॥पनरमी ढाल रसाल, करणी मंगलमाल ॥ आ० ॥ मोहनविजयें नली कही जी ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ दिन केता तिहां निगम्या,एकलमां आवास ॥ झूरे विरहिणी व्याकुली, मुख मेले निसास ॥ १ ॥ अंजन मंजन परिहर्‍यां. न करे वलि सिणगार ॥ म गन रहे वैरागमां, टाले विषयविकार ॥ २ ॥ मान वती चित चिंतवे, बेठा न सरे काम ॥ मुखमां पण पेसे कवल, उद्यम कीधें जाम ॥ ३ ॥ यामयुगम गइ यामनी, वनिता ऊठी संत ॥ ऊघामी लघुजालिका, मुख काढी निरखंत ॥ ४ ॥ यामिकमां जे वृक्ष ठे, तेहने कीधो साद ॥ ते पण जाली हेठले, आव्यो तजी प्रमाद ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ गौतम समुद्र कुमार रे ॥ एदेशी ॥

॥ पोहरायत कहे ताम रे ॥ मानवती जणी ॥ किम बोलाव्यो मुज जणी ए ॥ १ ॥ नृपनें कहेवुं जो होय रे ॥ कोय संदेसको ॥ कहो सिर जोरें ते कहूं ए ॥ २ ॥ केम उघामी जाली रे ॥ बहु प्रयास थी ॥ चढिने अटारी ऊपरें ए ॥ ३ ॥ के सुं एणें आ वास रे ॥ सांजलतुं नथी ॥ कहो पडदो खोली करी ए ॥ ४ ॥ किम जाएठे दींह रे ॥ एकलमा रह्यां ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्यो तें नृपनो बिगाम्नियो ए ॥ ५ ॥ ए डुख ताहरुं बेहेनी रे ॥ सही सकतो नथी ॥ पण स्वामीथी जोरो नही ए ॥ ६ ॥ डुःचर चरवा काज रे ॥ हुं पण इहां रह्यो ॥ चोकी करवा तुम तणी ए ॥ ७ ॥ को लीउं खाइए जेहनो रे ॥ तेहनो धोलियो ॥ बांधियें एह जगरीत बे ए ॥ ८ ॥ दाणांने जे कोई रे ॥ मुख मांडे जिको ॥ ते मुख मांडे चोकडे ए ॥९॥ स्वामी हाथे वृत्ति रे ॥ दासतणी अबे ॥ ते जिम कहे तिम ते करे ए ॥ १० ॥ वांक म जाणसो अम्म रे ॥ वांक ए रायनो ॥ अमे बंदा तस पयतणा ए ॥११॥ मानवती तव बोली रे ॥ गदगद कंठ थी ॥ रे वीरा सुण वात डी ए ॥ १२ ॥ बे तुऊ लायक काम रे ॥ जो करे तो कहुं ॥ पाड हुं मानिस ताहरो ए ॥१३॥ आपुं नवसर हार रे ॥ जा तूं उतावलो ॥ काज करो मया करी ए ॥ १४ ॥ विरह अगाध समुद्र रे ॥ दे तूं बा हऊी ॥ करुणावंत कृपा करीए ॥ १५ ॥ इम कही दी धो हार रे ॥ ते जामिक प्रतें ॥ तेपण लोचवसें पड्यो ए ॥ १६ ॥ द्रव्ये सुं नवि होय रे ॥ जे जे चिंत वे ॥ मुनिजनसरिखा चोलव्या ए ॥ १७ ॥ कहे अ नुचर कर जोऊी रे ॥ कहो ते स्वामिनी ॥ काज करी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुजरो करुंए ॥ १८ ॥ राणी कहे मुऊ तात रे ॥ लगें संदेसमो ॥ कहुं ते जई पोचावजे ए ॥ १९ ॥ नूपें करीने कूम रे ॥ परणी मुऊने ॥ खबर पमी नही तु ऊने ए ॥ २० ॥ हवे एकथंने आवास रे ॥ रेहेवुं ए कह्युं ॥ ए जइ कहे जे तातने ए ॥ २१ ॥ पमखो वली क्ष णमात्र रे ॥ कागल दीयुं लखी ॥ हाथो हाथे सुंपजे ए ॥२२॥ आंसु मसी पटपत्र रे॥ अंगुली लेखणे ॥ दीधो लि खी तस जालियें ए ॥२३॥ पत्र लेई सिर चामीरे ॥ चा ल्यो चमवडी ॥ जेम बीजो जाणे नही ए ॥ २४ ॥ पहोतो धनदत्त गेह रे ॥ अनुचर पाधरो ॥ शेठें द्वार उघामियां ए ॥ २५ ॥ दीधो तेणे पत्ररे ॥ वात कही सवे ॥ जे मुखवचनें कही हती ए ॥ २६ ॥ पन्नणी सोलमी ढाल रे ॥ अति मन मानती ॥ मोहनविजयें सहु को सुणो ए ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदत्त चित्त विस्मय थयो, देखी चीवर लेख ॥ खोल्यो ततक्षण वांचवा, मन आश्चर्यविशेष ॥१॥
दीठा आंसु अक्षरा, शेठ थयो दिलगीर ॥ गुप्त वात मवि प्रीछवा, वांचे थई सधीर ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ कुंबखडांनी देशी ॥ अर्हंजिनपदपंकजे रे ॥ चित्ततरु प्रहितंलेख ॥ सनेही सांजलो ॥ मानवत्यातनु मही पते रे ॥ कैश्तवगर्ज्ञित एष ॥ स० ॥ १ ॥ जवतां पादप्रसादान्मे रे ॥ सौख्यं वर्त्तते चात्र ॥ स० ॥ पर मेकेयं विज्ञप्ति रे ॥ अवधार्या गुणपात्रं ॥ स० ॥ २ ॥ जूपतीनां करपीमनं रे ॥ मम सोत्सवतो विधाय ॥ स० ॥ विरहं दत्तं तेन मे रे ॥ कार्यं तस्य उपाय स० ॥ ३ ॥ जवदागारादारज्यमें रे ॥ गृहयावज्ञ्यो तात ॥ स० जित्वा जूमिं विधातव्यं रे ॥ मार्ग खलु विख्यात ॥ स० ॥ ४ ॥ येन मया आगम्यते रे ॥ उपजवतो हि सदैव ॥ स० ॥ तात करिष्यामि तदा रे ॥ वार्त्ता उषजं चैव ॥ स०॥ ५ ॥ एकाकिन्या वासो मे रे ॥ सुरंगगेहे पूज्य ॥ स० ॥ किं बहुनेयं विज्ञप्ति रे ॥ स्तोकाज्ञ यं गुह्य ॥ स० ॥ ६ ॥ एह समाचार वांचिने रे ॥ धनदत्त धूज्यो अतीव ॥स० ॥ पाछो पत्रसेवक जणी रे ॥ दीधो लिखीने तदीव ॥ स० ॥७॥ सेवके मानवती जणी रे ॥ जई उपजावी प्रीत ॥स०॥ धनदत्त करे विचारणा रे ॥ शी हवे करवी रीत॥स० ॥ ८ ॥ एहवे प्रातसमय थयो रे ॥ तेमाव्या गृहकार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ स० ॥ एकांते सघलो कह्यो रे ॥ सेठे रहस्यविचार ॥ स० ॥ ए ॥ बाहिर वात म काढसो रे ॥ तमने करसुं प्रसन्न ॥ स० ॥ कारीगर तत्पर थया रे ॥ इज्य नुं जाणी मन्न ॥ स० ॥ १० ॥ केतेक मासे पाधरी रे ॥ सुरंग विन्नाइ तत्र ॥ स० ॥ मानवती एकाकिनी रे ॥ नित्य निवसे ढे यत्र ॥ स० ॥ १ ॥ गूढ उघाड्यो बार णुं रे ॥ एकथंन्ने आवास ॥ स० ॥ द्वार निहाली वियोगणी रे ॥ पामी अतिहि उल्लास ॥ स० ॥ १२ ॥ कारीगरे जई वीनव्युं रे ॥ साहन्नणी तेणीवार ॥ स० ॥ वचन निवाहो राउला रे ॥ सुरंग कीध तइयार ॥ स० ॥ १३ ॥ बहुधन आपी तेहने रे ॥ शेठें कीध विदाय ॥ स० ॥ नारी थकी तुमें जोय जो रे ॥ स्यो कीधो ढे उपाय ॥ स० ॥ १४ ॥ मानवती गृह तातने रे ॥ आवी थइने सुरंग ॥ स० ॥ प्रणम्या मात पितान्नणी रे ॥ हियडे धरी उछरंग ॥ स० ॥ १५ ॥ चतुरा चरित्र निहालजो रे ॥ सहुको बाल गोपाल ॥ स० ॥ मोहनविजयें कही न्नली रे ॥ एतो सत्तरमी ढाल ॥ स० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मातपिताने आगले, मानवतीयें ताम ॥ नृप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वृत्तांत कह्यो सकल ॥ मन खोली अजिराम ॥ १ ॥ पितर पयंपे धुअजणी ॥ स्यो हवे कीजे सोच ॥ पी पाणी घर पूछवुं ॥ ते किम आवे टोच ॥२॥ पुत्री कहे ए नृपतिने ॥ पाधरो करुं प्रवीण ॥ आणी आपो तातजी ॥ जो मुझने एक वीण ॥ ३ ॥ धनदत्ते पुर मांहेथी ॥ विणा अणावी एक ॥ सुंपी मानवती जणी ॥ वारू करिय विवेक ॥ ४ ॥ योगणीरूप धखुं जलुं ॥ मानवतीयें ताम ॥ हवे श्रोता जन सांजलो ॥ त्रिकरण राखी ठाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ सनेही पासजिणंदा बे ॥ ए देशी ॥

॥ मानवती नृप धूतवा माटे, रूप रच्युं अदभूत ॥ ढलती मूकी सिरथी जटा, वली अंगलगाय जभूत ॥ सनेही योगण रूडी बे, अरे हां हां जीतर कूडी बे ॥ १ ॥ ए टेक ॥ केरु थकी कस्यो वज्रकडोटो, पाडु कां पहेरी पाय ॥ माला गले रुद्राक्षनी, करी अरु णनयण चितलाय ॥ सने० ॥ २ ॥ पीतांबर ऊढ्यो पछेडो, ते ऊपर योगपट्ट ॥ थापी कंधरे सोहती, तिण वीणा घाटसुघट्ट ॥ सने० ॥ ३ ॥ रूप रच्यो अतिनव वारु, कहेतां नावे पार ॥ जाणे युगनी योगणी, प्रगटी इणे संसार ॥ सने० ॥ ४ ॥ मातपि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तानी सीखनी मागी, मानवती सोठांहि ॥ संचरी वेसे एहवे, ते तो नयर उज्जेणिमांहि ॥ सने० ॥ ५ ॥ सेरीये सेरीये दीये फेरी, गाये मधुरा गीत ॥ गुहिरां कोकिलकंठथी, जे सुणतां उपजे प्रीत ॥ सने० ॥ ६ ॥ अंगे गौरी ने गुणनी उंरी, रंजे पुरिजन तेह ॥ नर नारी लारे फिरे, घणुं नादे विंधाणा जेह ॥ सने० ॥ ॥ ७ ॥ तृणचर पण ते नाद सुणीने, सोंपे मृगलां प्राण ॥ अनचरनो कहेवुं किस्युं, जे वेध्या चतुर सुजाण ॥ सने० ॥ ८ ॥ जे कोई नादे नर नवि रीज्यो जीव्युं तस अप्रमाण ॥ नररूपे ते रोजमा, नरे पेट थई अजाण ॥ सने० ॥ ए ॥ योगणिने गुण जे नर रीज्या, ते करे घणी मनोहार ॥ सापण निसनेही थइ, करे वीणतणा झणकार ॥ सने० ॥ १० ॥ नादे जेहने नारद हाख्यो, खेच्यो देवविमान ॥ फणिधर फण मांडी रहे, ए तो योगणनां सुणी तान ॥ सने० ॥ ११ ॥ रूमो रूप ने गाये वारू, ते केहने न सुहाय ॥ पुरमे प्रसंसा थइ घणी, जे योगण रूडुं गाय ॥ सने० ॥ १२ ॥ इम दिवसे दिये पुरमां फेरी, घेरी सघला लोक ॥ हेरे सहु मुख सांमुहो, जिम इंदूने हेरे कोक ॥ सने० ॥ १३ ॥ संध्यासमये तातने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मंदिर, आवी करे आसास ॥ सयनसमय जाई सुवे, जिहांएक थंनो आवास ॥ सने० ॥ १४ ॥ वली तिम प्राते सुरंगे थईने, लेइ तेहिज वेस ॥ वली तिमहिज सहु लोकने कहे, मुखथी आदेस आदेस ॥ सने० ॥१५॥ श्रोता जन सांनलजो सहुको, आगल वात रसाल ॥ मोहनविजयें कही नली, ए तो रूमी अढारमी ढाल ॥ सने० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोकमुखे सोना घणी, निसुणी श्रवण नरेस ॥ जे योगण गाये नली, पुरमें बाले वेस ॥ १ ॥ अति उन्नक थयो निरखवा ॥ योगण केरूं रूप ॥ मूक्यो सचिवने तेमवा ॥ पुरमाहें तणे नूप ॥ २ ॥ सचिव नमी सामणी प्रते ॥ नाखे वयण उदार ॥ नृपति अतिआतुर अठे ॥ देखण तुम दीदार ॥ ३ ॥ तेमा टे करुणा करी ॥ नृपने करी सनाथ ॥ चलो पधा रो अलेखणी ॥ द्यो वीणा मुऊ हाथ ॥ ४ ॥ मन थी हरषी योगणी ॥ ऊठी लेइवीण ॥ चलो सिताब इम उच्चरे ॥ आगल थइ सुप्रवीण ॥५॥ खमा खम कहेतो सचिव ॥ पहोतो राजदुवार ॥ सामणि दिठी आवती ॥ नृप साचवे आचार ॥ ६ ॥ दोडीने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लागो पगे, आदर दीधो नूर ॥ बेसारी सिंहासने, सामण जणी सनूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ पन्नणे नूपति वायक तांम ॥ करी अवधूतणने परणाम ॥ सामणि साच कहो ॥ आया किहांथी कि हां जी रहो ॥सा०॥ निसुएया जेहवा गुण आवाज ॥ ते हवा तुमने दीठा आज ॥ साम० ॥ १ ॥ जले पधा रया नगर मझार ॥ जे में पतितें पाम्यो दीदार ॥ सा० ॥ तुम बलिहारी जे थइने निग्रंथ ॥ पालो जी शुद्ध निरंजन पंथ ॥ सा० ॥ २ ॥ ग्यान ध्यानमां रहो ढो मगन्न॥मन वचथी तुमने धन्य धन्य ॥सा०॥कहो तुमे एहवे बाले वेश ॥ किम यौगेंद्रनो धर्यो नेष ॥ सा० ॥ ३ ॥ बोली मानवती ततकाल ॥ सुन बे दीवाने तुं नूपाल ॥ सा० ॥ हम हे गेबी जीव अतीत ॥ बु झे कोन हमारी रीत ॥ सा० ॥ ४ ॥ रहे रमता राम हमेश ॥ नेटे तीरथ देशविदेश ॥ सा० ॥ आए नि रखण नयर उज्जेन ॥ खेलत पावत हे सुख चेन ॥ सा० ॥ ५ ॥ कौन कीसीके आवे जाय ॥ दाना पानी लेत बुलाय ॥ सा० ॥ जजे जगवान जगावे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अलेख ॥ ए सब कूमी धुनीयां देख ॥ सा० ॥६॥ कि सके माता किसके बाप ॥ जीव एकिला आपोआप ॥ सा० ॥ योगकी युगति न जाने कोय, अगम अगोचर भेद है सोय ॥ सा० ॥ ७ ॥ अतिआनंदमें जो दिन जाय, सो जीवितका सफल कहाय ॥ क्या ले आया क्या ले जाय, सब स्वार्थके बनेहि आय ॥ सा० ॥ ८ ॥ रीझ्यो महिपति निसुणी वाण, बोल्यो तिम वलि जोगी पाण ॥ सा० ॥ वीण वजागी गाउं गीत, विनति मानो करिने प्रीत ॥ सा० ॥ ए ॥ नृप अति आतुर जाणी तेण, गाया गीत त्यां मधुर स्वरेण ॥ सा० ॥ वली तिम मधुरी वजाइ वीण, भूपा दिक सहु थया लयलीन ॥ सा० ॥ १० ॥ पण यो गिण लिखी चिंते भूप, दीसे छे मानवतीरे सरूप ॥ सा० ॥ कीधो रखे होए एह उपाय ॥ मुझने एणे लगारुवा पाय ॥ सा० ॥ ११ ॥ पण बहुजतने राखी तास, आवी न सके तजि आवास ॥ सा० ॥ तिहां जई जोऊं करी गृहस्पर्श, करकंकणने शो आदर्श ॥ सा० ॥ १२ ॥ योगणें चलचित्त दीठो राव, जो जो केहवो खेले छे दाव ॥ सा० ॥ नृप जोशे जई तेहि ज धाम, तेमाटे उठयानुं काम ॥ सा० ॥ १३ ॥ यंत्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लेइ ऊठी धूतण तेह, नूपतिनी लेइ शीख सनेह ॥ ॥ सा० ॥ पोहोती तात तणे आगार, गइ एकथंभे सुरंग मझार ॥ सा० ॥ १४ ॥ उतास्यो धसमसी योगण वेष, मूलवस्त्र पहिस्या सुविशेष ॥सा०॥ पोढी हींमोले खाट तिवार, एहवे नृप पण आव्यो डुवार ॥ सा० ॥ १५ ॥ यंत्र खोली नृप गेह मझार, आव्यो दीठी पोढी नार ॥ सा० ॥ अचरज मनमां पामे नूप, रूप कला देखीने अनूप ॥ सा० ॥ १६ ॥ ए तो बिचारी अबला बाल, सूति दिसे बे सेज विचाल ॥ सा० ॥ एहने उकले किहांथी उपाय, जे मुझने ए लगाडे पाय ॥ सा० ॥ १७ ॥ नोलो राय न जाणे नेद, मानवती जे पूरशे उमेद ॥ सा० ॥ ए उंगणीशमी रूमी ढाल, मोहनविजयें कही रसाल ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूपें मानवती नणी, जई जगामी जाम ॥ ऊठी ऊबकी सेजथी, कर जोमी रहि ताम ॥ १ ॥ उंलंनो अवनीशने, नारी कहे धरि नेह ॥ स्वामी केम करुणा करी, मुझ अबलाने गेह ॥ २ ॥ शुं तमें नूला आविया, धसमसि मंदिरमांहि ॥ माहारा सम साचुं कहो, एम कहि झाली बांहि ॥३॥ नाह कहे ताहरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खबर, जोवा आव्यो आज ॥ जो कांइ जोइतुं होय ॥ ते कहो सारुं काज ॥ ४ ॥ प्रिया कहे माहरी ख बर, शुं पियु थोमी लीध ॥ जे लेवा आव्या हजी, मया घणी घणी कीध ॥ ५ ॥ आ मंदिरमां एकली, तुम विण राखे कोण ॥ ए किमही नहि वीसरे, पियु तुम गुणना गूण ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ झीणा मारुजीनी करहलमी ॥ करहलडी केसर रो कूपो म्हाने आलोहो राज ॥ ए देशी ॥

॥ नूपति कहे सुण नामिनी, एकलमां मंदिरमें नि गमियें किम करी दीहा ॥ हो राज॥वांक न जाणीश माहरो, धुरथी कां नवि राखी पाधरी ताहरी जीहा ॥ हो राज ॥ १ ॥ अमृत विष इण जीनमें, अनरस पण इणी जीनें बहुली प्रीत लगाडे ॥ होराज ॥ कोकि लवाणी सहु सुणे, वायसनी सुणी वाणी पथर नाखी उमाडे ॥ हो राज ॥२॥ अति अविचार्यो न नाषिये, जो अलवे तें नाख्युं तो ए फल तुं पामी ॥ हो राज॥ आज पठे पण एहवी, वहेती वहेंती वातो करसो मा अनिरामी ॥ हो राज ॥ ३ ॥ बोली मान वती तदा, पीउमा में अणघटतां वायक कांइ नथी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाख्यां ॥ हो राज ॥ पाछीस सघला बोलमा, रामतमां सहियोने रमतां जे में दाख्यां ॥ हो राज ॥४॥ तो मुजरो मुऊ मानजो, लोटिंगण जो लेता लागो माहरे पाये ॥ हो राज ॥ एहमां कुउ न जाणसो, देजो तव साबासी दीयुं देणुं सवाइ ॥ हो राज ॥ ५ ॥ तमे तो तमारी तर फथी, करवुं हतुं ते कीधुं उंउ किसी नवि राखी ॥ हो राज ॥ मुऊ अबलानी साहेबा, सुखदुःखनो इणि वेला सरजणहार छे साखी ॥ हो राज ॥ ६ ॥ चूपें वचन सुण्या इस्या, कोप्यो अतिवनिताथी कीधां नेत्र विकरालां ॥ हो राज ॥ घृत सिंच्याथी जेहवी, वाधे वायुसंयोगें ऊंची पावकऊाला ॥ हो रा० ॥ ७ ॥ रे रे निगुणी कामनी, लाज वली नही तुऊने तेहवी ह जी तुं दीसे ॥ हो राज ॥ टेक हजी नथी मूकती, अस मंजस अमदावो चुंमी तुं कां पीसे ॥ हो राज ॥ ८ ॥ बोल बोले छे एहवां तो तुं रहि छे अलाधि एहवा मंदिरमांहे ॥ हो राज ॥ हजीअ लगणसुं बापमी ॥ मु ऊने पाय लगाडे चितथी साचुं जाणे ॥ हो राज ॥ ॥ ए ॥ रीस चढावी राजवी, उठ्यो अति वनिताने मंदिरमांहे मेहेली ॥ हो राज ॥ यंत्रादिक तिम पूरिया, आव्यो नृप दरबारें करीने रीत नवेली ॥ हो राज ॥१०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मानवती पण तातने, आवीने गृहमाहिं तेहिज वेस बनाव्यो ॥ हो राज ॥ तिमहिज पुरमां संचरी, वली तिमहिज नृपने आगे जइने अलख जगाव्यो ॥ हो राज ॥ ११ ॥ नृपति योगणने पगें, शीसप्रते सो हावे रज तिम शिसें लगावे ॥ हो राज ॥ सामणी अवसर अटकली, वाये वीण सुरंगी कोकिलकंठें गावे ॥ हो राज ॥ १२ ॥ नृपनुं तन मन वश कर्युं, धूतारी जोगणीयें कांइक जुरकी नाखी ॥ हो राज ॥ अतिहि वेश सोहामणो, जोवा सरिखो जाणी जोवे नृपति झांखी ॥ हो राज ॥ १३ ॥ सा योगण चित चिंतवे, पीउने पाय लगाड्यो पूर्यो एक उल्हासो ॥ हो राज ॥ चरणोदक पावुं हवे, आगल जोउं केम थासे नृपथी माहरे तमासो ॥ हो राज ॥ १४ ॥ढाल कही ए वीसमी, मोहनविजयें सुपरें मीठे वयणें ब नाइ ॥ हो राज ॥ जो जो सवि श्रोता जना, अबलाए पीउं धूतण केहवी बुद्ध उपाइ ॥ हो राज ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति योगण आगले, मूकी बेठो मान ॥ श्रवण देइने सांभले, झीणा झीणा तान ॥ ॥ १ ॥ नरपति कहे कर जोडीने, अहो योगण गुणधाम ॥ दास क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

री राखो तुमे, मुऊने सही विणदाम ॥ २ ॥ केही खिजमत तुम तणी, मुऊथी कीधी जाय ॥ अविनाशी जे आदमी, मुऊथी किम वश थाय ॥ ३ ॥ तमे अवधू आवी इहां, गाइ सुरंगी वीण ॥ कोइक कीधी मोहनी, मुऊ ऊपर सुप्रवीण ॥ ४ ॥ हबे तुमे जासो किहां, मुऊथी लाइ प्रीत ॥ नेह करी निरवाहियें, तो रहे उत्तम रीत ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥

॥ नृप कहे तेहने बे कर जोमी, हवे जाउं किहां मुऊ ठोमी रे, योगण मन मानी ॥ रहो इण मंदिरमां हे सदाई, अमे आपशुं युगते गदाई रे ॥ यो० ॥ १ ॥ लेशुं खबर हमेस तुमारी, तुमे जो जो नफरी हमारी रे ॥ यो० ॥ अमे अहोनिश उलंगमां रहेशुं, तुमे कहेसो ते वहेशुं रे ॥ यो० ॥ २ ॥ राखशुं करीने हाथें ठाया, घणी लागी तुमथी माया रे ॥ यो० ॥ हवे अधक्षण तुम विण न रहाइ, तुम विरहो केम सहाइ रे ॥ यो० ॥ ३ ॥ जो तुमे माहरा राख्या न रहो, तो चेलो करीने निवहो रे ॥ यो० ॥ सामण ताहरी सी में बिगामी, जे एवमी प्रीत लगामी रे ॥ यो० ॥ ४ ॥ मैं मन ताहरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पालव बांध्युं, वलि नेहनो करीने सांध्युं रे ॥ यो० ॥ तो हवे ताहरा चरण न मूकुं, ए अवसर किम हुं चूकुं रे ॥ यो० ॥ ५ ॥ दरसण ताहरो किहांथी फेरी, आवी कोकिल पवने प्रेरी रे ॥ यो० ॥ लेख लखित थयो तुम अम मेलो ॥ हवे महेर करी मन मेलो रे ॥ यो० ॥ ६ ॥ ताहरे मुऊसम दास अनेका, पण माहरे सामण तुं एका रे ॥ यो० ॥ वाणी सुणीने नृपनी अमोली, तव वलती योगण बोली रे ॥ यो० ॥ ७ ॥ हम किनहीके राखे न रहे, कोण पेट हमारा जरहे रे ॥ यो० ॥ हम पंखि न किनही के सनेही, मनमें महेर नहि केही रे ॥ यो० ॥ ८ ॥ योगी जोगी केही सगाई ॥ हमसें क्यों प्रीत लगाइ रे ॥ यो० ॥ हम परदेसी प्राहुण लोगा ॥ साधे फिरे योगिका योगा रे ॥ यो० ॥ ए ॥ योगी किनके न सुणे मित्ता ॥ योगी निस्पृहि अणचित्ता रे ॥ यो० ॥ अवधू योगी कि आस्या कीजे ॥ पण योगीका अंत न लीजे रे ॥ यो० ॥ १० ॥ योगी जला जोइ रहे नित्य रमता ॥ धरे योगी न किनसुं ममतारे ॥ यो० ॥ मातपिता कों दिया जो छेहा ॥ तो तुऊशुं क्या करे नेहा रे ॥ यो० ॥ ११ ॥ नहि परवाह किसीकी हमकों ॥ फिर बहोत कहा कहुं तुमकों रे ॥ यो० ॥ जो तें हमकूं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राखण केरी ॥ मन चाह धरे अजि नेरी रे ॥ यो० ॥ ॥ १२ ॥ तो तूं कह्या एक मान हमारा ॥ तो रहे वे तुझ दरबारा रे ॥ यो० ॥ कहे नृप तेहने देइ दिला सो ॥ मुझ सरिखो काम प्रकासो रे ॥ यो० ॥ १३ ॥ तुम वचनथी न रहुं अलगो ॥ हुं तो ताहरे पालव वलगो रे ॥ यो० ॥ एहवो भाग्य किहांथी अमारो ॥ जे कह्यो करिये तमारो रे ॥ यो० ॥ १४ ॥ नृपनो अतिहि आग्रह जाणी ॥ हवे बोलसे योगण वाणी रे ॥ यो० ॥ एम एकवीसमी ढाल ए भाखी ॥ मोहन विजयें मन थिर राखी रे ॥ यो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तो रहुं में तेरे निकट, जो तुं न जावे दूर ॥ लाख लाख गाली सहे, तोही रहे हजूर ॥ १ ॥ जब तूं मुझकुं छोरके, रहे दूर छिन एक ॥ ऊठ चलूंगी में तबे, या है मेरी टेक ॥ २ ॥ तूं जो इतनी करसके, तो मोको इहां राख ॥ नहि तो अबहिं कर विदा, पीछा उत्तर भाख ॥ ३ ॥ नृप पय लागीने कहे, अहो योग ण महाराय ॥ निवहीस ए सघलुं कहुं, हुकमे रहिश सदाय ॥ ४ ॥ गाली गणीस तुमारडी, करिने घीनी नील ॥ साखी प्रभु ए वातनो, आपन बिहूं विचाल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ५ ॥ अति आग्रह जाणी करी, रही योगण नृप पास ॥ जो जो धूतण धूतसे, देई देई विसास ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

मोतीझानी देशी ॥ योगण नृपनां बिहूं दिल मलिया ॥ जाणे पयमें पतासा नलिया, सामण चरिताली धूताली ॥ राजकाज नृपें मूकी दीधुं ॥ १ ॥ जाणे योगणियें कांई कामण कीधुं ॥ सामण चरिताली धूताली, रामकी मतवाली ॥ ॥ ए टेक ॥ नृपति नोलो नेद न लेखे, धोलुं सघलुं पय करी पेखे ॥ सा० ॥ ते अवधूतण नृप मन नावी, जाणे अंगण गंगा आवी ॥ सा० ॥ रा० ॥ २ ॥ क्षणमां सा एक आंखें हसाडे, क्षणमां नृपने पाय लगाडे ॥ सा० ॥ दूधने झांगनो न्याय देखाडे, वलि क्षणमें नृपतिने मारे ॥ सा० ॥ रा०॥३॥ क्षणमां नृपने तमाचे मारे, क्षणमां बाल परें बुचकारे ॥ सा० ॥ जेम योगण लत्ता निरखाटे, तिमतिम पुरपति तलियां चाटे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ नरपति जाणे रखे उहवाती, पंखणीनी परे उमि जाती ॥सा०॥खुंद्युं खमे धूतारीनो राजा, जिम खमे झंका घायने वाजा ॥ सा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ जे गुणिजन गुणिने वश पडिया, ते तो नंग जेम हीरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जन्नियां ॥ सा० ॥ रसनी रीऊने सुगुणनी वातो, अमियसमाणी ते विख्यातो ॥ सा० ॥ रा० ॥ ६ ॥ गुणवंतने सहु आदर आपे, गुणथी कूपक घट जल थापे ॥ सा० ॥ गुणियणने सेवे नर अमरा, जिम गुण लीणा पंकजन्नमरा ॥ सा० ॥ रा० ॥ ७ ॥ एक गुणें अवगुण बहु ढंके, जेम फणिपति मणि पोहोतो रूंके ॥ सा० ॥ जे गुणियणनो गुण नवि जाणे, तो तेह नुं जीवित अप्रमाणे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ८ ॥ तिम गुण जाणी सामणि अन्निरामी, त्रिकरण रंजव्यो उज्जे णी स्वामी ॥ सा० ॥ नृप आगल मधुरे स्वरें गावे, वली तिम मधुरी वीण वजावे ॥ सा० ॥ रा० ॥ ९ ॥ वली योगण पुरमां दिये फेरी, हरखें खेले अबधूचे री ॥ सा० ॥ वली तिम तात तणे घर आवे ॥ सु रंग थइ एकथंन्ने जावे ॥ सा० ॥ रा० ॥ १० ॥ यामिकथी पण मांडे वातो ॥ मानवती एम खेले घातो ॥ सा० ॥ नृप योगिणविण अधक्षण न रहे ॥ तलफे मन्न परे तेणे विरहें ॥ सा० ॥ रा० ॥ ११ ॥ नृप यदि जोवा अनुचर मूके ॥ योगणि आवे समय न चूके ॥ सा० ॥ इम करतां निगम्या दिन केता ॥ तनमनथी थयो वश नृप तेता ॥ सा० ॥ रा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १२ ॥ रागने रंगे ठबीलो ठाके ॥ योगण आवे समयने ताके ॥ सा० ॥ सामणि अवसर कहियें न पामे ॥ जे अवनीशने बोलें दामे ॥ सा० ॥ रा० ॥ १३॥ पण जिनधर्म पसाएं रूमो, थासे तेमां नही कांइ कूमो ॥ सा० ॥ धर्मथकी मनवांछित थासे ॥ धर्म थकी चिंतित सुख पासे ॥ सा० ॥ रा० ॥ १४ ॥ हवे आगल अचरजनी वातो ॥ श्रोता निसुणो तजि व्या घातो ॥ सा० ॥ ढाल बावीसमी मन थिर राखी ॥ मोहनविजयें रसनायें चाखी ॥ सा० ॥ रा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे उज्जेणीथकी, डुचरचरवामाट ॥ चाल्यो कोइक वाणियो, लेई दक्षणवाट ॥ १ ॥ पहोतो तेह वे अनुक्रमे, मुंगीपट्टण ताम ॥ तापे पीमाणो थको, बेठो तरुविश्राम ॥ २ ॥ पूछ्यो पुरवासी जणी, इहां कुण राजे राय ॥ पाछो तेणे तिणने कह्युं, इहां दल थंजणराय ॥ ३ ॥ राणी तस गुणमंजरी, सकलक लायें पूर ॥ रतनवती तस पुत्रिका, अगणित गुणें सनूर ॥ ४ ॥ हमणा ते नृपपुत्रिका, आवसे रमण वसंत ॥ जो जोवानो खप करो, तो रहो इहां एकंत ॥ ५ ॥ पथिके जाएयुं जायसुं, सांऊ नगरीमांहि ।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीव्यां पें जोयुं न्नलुं, इम, धरि रह्यो तरुगांहि ॥६॥

॥ ढाल त्रेवीसमी ॥

सखीरी आयो वसंत अटारमो ॥ ए देसी ॥

सखीरी एहवे आवी क्रीमवा ॥ क्रीमवा ॥ रतनवती वनमांहि, ॥ चतुर नर सांन्नलो ॥ स० ॥ खेले संग साहेलियां ॥ साहे० ॥ गालीने गलबांहि ॥ चतु० ॥ १ ॥ स० ॥ ताली देई केइक छिपे ॥ के० ॥ वेली सदनमऊार ॥ च० ॥ स० ॥ ढुंढी काढे तिहांथकी ॥ तिहांथकी ॥ रतनवती तिणिवार ॥ च० ॥२॥ स० ॥ केइ कदंबना गुछमें ॥ गु० ॥ रहे लघुगात्र छिपाय ॥ ॥ च० ॥ स० ॥ श्रमसीकर लेइ मुखे ॥ लेइ० ॥ मुगतासम रह्या आय ॥ च० ॥ ३ ॥ स० ॥ नाखे गेंडुक कुसुमनां ॥ कु० ॥ आमासांहमा केइ ॥ च० ॥ स० ॥ छुटी कबरीये बालिका ॥ बा० ॥ दोडे मलीने सवेइ ॥ च० ॥ ४ ॥ स० ॥ जाणीयें उरवसी ऊतरी ॥ ऊ० ॥ इंद्रपुरीथी न्नर ॥ च० ॥ स० ॥ सोन्नायें वनगाहीउं ॥ वनगा० ॥ ऋतुनृप तो रह्यो दूर ॥ च० ॥५॥ स० ॥ ते पंथी नृपपुत्रिने ॥ नृ० ॥ निरखे त्रीछे नेण च० ॥ स० ॥ चोरपरे गानो रह्यो ॥ गा० ॥ मुखथी न जंपे वेण ॥ च० ॥ ६ ॥ स० ॥ ते नर वासी उज्जेणनो ॥ उ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रतनवतीयें दीठ ॥ च० ॥ स० ॥ मूकी तेहने तेरुवा ॥ ते० ॥ बाला एक विशिठ ॥ च० ॥ ७ ॥ स० ॥ रे पर देसी प्राहुणा ॥ प्रा० ॥ केम छपी रह्यो रे अबूझ ॥ च० ॥ स० ॥ ऊठ अमारी स्वामिनी ॥ स्वा० ॥ तेडे छे अहो तुझ ॥ च० ॥ ८ ॥ स० ॥ आव्यो वटाउ वाणियो ॥ वा० ॥ रतनवतीने पास ॥ च० ॥ स० करी प्रणि पत ऊभो रह्यो ॥ ऊ० ॥ सा पूछे सुविलास ॥ च० ॥ ॥ ए ॥ स० ॥ आव्या किहांथी किहां जसो, भाषो स त्यवचन ॥ च० ॥ स० ॥ नर कहे आव्यो उज्जेणथी ॥ उ० ॥ जे छे भूतले धन्य ॥ च० ॥ १० ॥ स० ॥ मान तुंग राजा तिहां ॥ राजा० ॥ राजे वधते वांन ॥ च० ॥ स० ॥ रूपकलागुणें आगलो ॥ गु० ॥ नही कोइ तेह समान ॥ च० ॥ ११ ॥ स० ॥ जेहना सुजस निसा णना ॥ नि० ॥ दह दिस सुणियें अवाज ॥ च० ॥ स० ॥ जेहथी झरतो गगनमें ॥ ग० ॥ नासी रह्यो सुरराज ॥ च० ॥ १२ ॥ स० ॥ अंगतणी चकचोधमे ॥ च० ॥ पाम्यो हार अनंग ॥ च० ॥ स० ॥ वहे अहोनिसि जस अंगणे ॥ अं० ॥ दान गंगाना तरंग ॥ च० ॥ १३ ॥ स० ॥ ते नृप जेणें दीगो नही ॥ दी० ॥ जीव्युं तस अप्र माण ॥ च० ॥ स० ॥ दीगांहिज आवे बनी ॥ आ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केता करियें वखाण ॥ च० ॥ १४ ॥ स० ॥ जे कन्या ते वर वरे ॥ व० ॥ तेहनुं पूरण भाग ॥ च० ॥ स० ॥ पथिकनां वचन सुणी इस्या ॥ सु० ॥ रतनवती धर्यो राग ॥ च० ॥ १५ ॥ स० ॥ आतुर हुइ परणवा ॥ प० ॥ उज्जेणीधणी तेह ॥ च० ॥ स० ॥ गुण निसुणी पर गमी गया ॥ प० ॥ रोमा रोमे तेह ॥ च० ॥ १६ ॥ स० ॥ ॥ वन हूंती आवी घरे ॥ आ० ॥ रतनवती ततकाल ॥ च० ॥ स० ॥ मोहनविजयें लहकती ॥ ल० ॥ कहि त्रेवीसमी ढाल ॥ च० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

चेटीने नृप धुव कहे, गतिशैशव मुझ हेव ॥ यौवन आगत तनुविषे, अनुमाने अहमेव ॥ १ ॥ वर वरवा इछा थई, मुझने हवे सुविलास ॥ तेमाटे तुमने कहुं, इछा पूर उल्हास ॥ २ ॥ वर वरवो उज्जेणपति, नहि तो पावकसंग ॥ तूं जा कहे मुज मातने, कर करुणा तो रंग ॥ ३ ॥ चेटी दोमी तत्क्षणे, राणी निकट पहूत ॥ रतनवतीनी वातडी, कहि मधुराई युत्त ॥ ४ ॥ गुणमंजरियें रायने, पन्नणी सकम प्रवृत्त ॥ मानतुंग नृप परणवा, पुत्री थइ उनत्तल ॥ ५ ॥ दलथंभण निजनारिने, कहे त्रिय म करिश

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खेद ॥ पुत्रीने परणावसुं, ए पूरीशुं उमेद ॥ ६ ॥ माता एं पुत्री जणी, जइ दीधी आसास ॥ इहांवर परणावशुं, पूरुं तुऊ मन आस ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ दलथंजण निज मंत्रीने रे, तेमी कहे एकंत ॥ गुणना लोजी, तुंजा नयरी उज्जेणीयें रे ॥ मानतुंग जिहां संत ॥ गु० ॥ मानो मानो सुगुण कह्यो मानो, तुमे ए महारी अरदास ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ कहेजे लागीने पगे रे, माहरो संदेसो तास ॥ गु० ॥ रतनवतीने परणवा रे, वेहेला आवो आवास ॥ गु० ॥ २ ॥ थाशे जे मुऊ चाकरी रे, तेह करीश महाराय ॥ गु० ॥ रहेसुं दास थई सदा रे, इम जई कहेजे जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ वहे जे पंथ उतावलो रे, विलंब न करजे क्यांहि ॥ गु० ॥ वहिलो वलजे नृप जणी रे, तेमी आवजे आंहिं ॥ गु० ॥ ४ ॥ मंत्री नृप आदेशथी रे, चाल्यो चडीने तुरंग ॥ गु० ॥ साथे लीधो संबलो रे, जट लीधा वलि संग ॥ गु० ॥ ॥ ५ ॥ पंथे वहेतां पाधरो रे, जोतो धरा गिरि नेण ॥ गु० ॥ अनुक्रमें केते दिने रे, आव्यो पुर उज्जेण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गु० ॥ ६ ॥ दक्षिणपतिने मंत्रियें रे, जेट्यो नृप मान तुंग ॥ गु० ॥ जेट थयो चित जेटणुं रे, हरख्यो घणुं पुरपुंग ॥ गु० ॥ ७ ॥ दलथंजणराजातणो रे, जाण्यो आव्यो सचिव ॥ गु० ॥ दीधो तस दरबारमें रे, सखर उतारो तदीव ॥ गु० ॥ ८ ॥ मंत्री उतर्यो तिहां जइ रे, जोजन कीधां सार ॥ गु० ॥ पहेरी वसन संध्यासमे रे, आव्यो ते दरबार ॥ गु० ॥ ए ॥ एकांते बेसी करी रे, मांमी नूपथी वात ॥ गु० ॥ राजलगें आव्यो अहुं रे, मूक्यो नृपनो विख्यात ॥ गु० ॥ १० ॥ मुऊ नृपनी जे पुत्रिका रे, तेणे प्रतिज्ञा कीध ॥ गु० ॥ वरवो उज्जेणीधणी रे ॥ नही तो अमे व्रत लीध ॥ गु० ॥ ११ ॥ ते माटे पण पूरवा रे, तिहां लगें आवो स्वाम ॥ गु० ॥ दल थंजणें प्रेख्यो अठे रे, मुऊने एणे काम ॥ गु० ॥ १२ ॥ हवे सज थई स्वामी तमे रे, कीजे प्रयाणो आज ॥ गु० ॥ पाणी न खमे पातली रे, लाजे विणसे काज ॥ गु० ॥ १३ ॥ मानतुंग निसुणी रह्यो रे, तेह सचिवनां वयण ॥ गु० ॥ उत्तर देइ नवि सक्यो रे, नीचा करी रह्यो नेण ॥ गु० ॥ १४ ॥ कहे मंत्री केम साहिबा रे, अणबोल्या रह्या आम ॥ गु० ॥ पाठो उत्तर आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पतां रे, सुं कांइ बेसे ढे दाम ॥ गु० ॥ १५ ॥ नृप कहे माहरी ना नथी रे, आवीस शिरने जोर ॥ गु० ॥ अलगो नथी तुम वचनथी रे, पिण ढे एक मरोर ॥ गु० ॥ १६ ॥ उत्तर एहवो मंत्रिने रे, दीधो तव नृपाल ॥ गु० ॥ मोहनविजयें ए कही रे ॥ सुभग चोवीसमी ढाल ॥ गु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप विचारे चित्त थकी, जावुं अतिहि दूर ॥ योगण डुहवासे खरी, जो हूं न रहूं हजूर ॥ १ ॥ एक समे बेहु क्रिया, किम सचवाणी जाय ॥ नृप चित्ते आवी मव्यो, वाघ नदीनो न्याय ॥ २ ॥ जो नवि जाऊं परणवा, तो रीसासे नृप ॥ ए बेहुनां मन राखवा, सी बुद्ध करूं अनूप ॥ ३ ॥ एहवे फिरती योगिणी, आवी जिहां ढे राय ॥ नृप ते मंत्री देख तां, दोही लागो पाय ॥ ४ ॥ बेठी सामण बेसणे, वीण वजावे सार ॥ पण नृपनो झांखो वदन, फिर फिर जोए निहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

राग बंगालो, राजा नही नमे ॥ ए देशी ॥

॥ बोले योगणी नृपथी वाण, आज एसे क्यों दिसो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सयाण ॥ मन मानले ॥ क्या कुछु फिकर हे हृदय मझार, कहे चिंता युं दियुं बिडार ॥ म० ॥ १ ॥ कहे तो तेरे आगे इंद, जकरपकर कर ल्याऊं बंद ॥ म० ॥ कहे तो बकरीसें हराउं गजराज, कहे तो चिरमी पें उमाउं बाज ॥ म० ॥ २ ॥ कहे तो शशिकला सूर ज मेर, तेरे आगें करुं ढमढेर ॥ तेरे मनमें होवे चाह, तो शशि पास गहावुं राह ॥ म० ॥ ३ ॥ कहे तो लराउं हरिसें कुरंग, कहे तो ऊलट बहाउं गंग ॥ म० ॥ कहे तो करुं सूरको चंद, कहे तो चंदको करिल्युं दिणं द ॥ म० ॥ ४ ॥ इत्यादिक विद्या मुझ पास, कहे तो करी दिखाउं तमास ॥ म० ॥ जो एक हूं में तेरी नीर, तो तूं होत हे क्यों दिलगीर ॥ म० ॥ ५ ॥ दिलकी बात कहो धरी हूंस, जो न कहे तो तुझ कूं सूंस ॥ म० ॥ तब योगणने कहे नूमीस, तो कहुं जो न चढावो रीस ॥ म० ॥ ६ ॥ कहेवा जीव धरे छे ईह, पण कहेतां नवि चाले जीह ॥ म० ॥ सामणि कहे तूं सुण बे राय, जैसी होए तैसी दे बताय ॥ म० ॥ ७ ॥ नृप कहे मुंगीपट्टण गाम, राजा तिहां दलथंजण नाम ॥ म० ॥ पुत्री रतनवती नामे ण, मुझ ऊपर पण कीधुं तेण ॥ म० ॥ ८ ॥ ते माटे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेणें राजान, मुऊने तेडवा मूक्यो प्रधान ॥ म० ॥ तिहां जइ परणुं कन्या तेह, वाततणुं छे कारण एह ॥ म० ॥ ए ॥ योगण त्रटकी बोली वाण, रे रे अध म क्या बोल्या वाण ॥ म० ॥ क्या तें दियाथा कोल संजार, दिन थोरे में क्यों दिया बिसार ॥ म० ॥ ॥ १० ॥ न सक्या तू तो वचन निवाह, तो हमकुं तें राखे कांह ॥ म० ॥ देइ बचन युं चूके पुमान, ताको जीयो अजीयो जान ॥ म० ॥ ११ ॥ जानी बे तेरी कूम्मी प्रीत, अब तेरे पर क्या परतीत ॥ म० ॥ तुऊसें तो नीका मंमलीक, जो पोतेसें रहत नजीक ॥ म० ॥ १२ ॥ धिग धिग धिग तेरा अवतार, किस सुले घड्या तोहें किरतार ॥ म० ॥ तुमसें तो जले हम योगीस, वचने तुऊपे रहे निशदीस ॥ म० ॥ ॥ १३ ॥ हमजि चलेंगे तीरथ काज, क्या योगीकुं संजारना साज ॥ म० ॥ एक दर मुंदे खुले दर लाख, ए योगी मुखकी हे जाख ॥ १४ ॥ तोसें क्या देणी हे राय, यो कछु दियो होय तो बताय ॥ म० ॥ अहि अरि योगी न किनके मित्त, तूं राजा तो हम हे अतीत ॥ म० ॥ १५ ॥ तूं तेरे घर करे नित राज, अब हमसें क्या तेरा काज ॥ म० ॥ इम योगणना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निसुणी वचन्न, नृप ढाली रह्यो नीचा कन्न ॥ म० ॥ ॥ १६ ॥ सामणने पाये ततकाल, लागी मनावे हवे न्नूपाल ॥ म० ॥ पन्नणी ए पचवीसमी ढाल, मोहन विजयनां वचन रसाल ॥ म० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो अहो सुन्नगे सामणि, हुं अपराधी शीश ॥ ए गुनहो बगसो मुने, रखे चमावो रीश ॥ १ ॥ चाकर चूके चाकरी, पण स्वामि न चूके वाच ॥ अवगुण ऊपर गुण करे, ते मणि बीजा काच ॥ २ ॥ कृष्णागर बाल्यो थको, सांहमुं दिये सुवास ॥ कोस जो नाखीयें नीरमां, तो पण जल दिये तास ॥ ३ ॥ केसरने घसतां थकां, बिमणो दाखे रंग ॥ सोनाने पर जालियें, अतिहि दीपावे अंग ॥४॥ इक्षु पिले जो यंत्र मां, तो पण रस दे अंत ॥ तेम निहेजा ऊपरे, कदीहि न कोपे कंत ॥ ५ ॥ तिम हूं चूको सामिनी, पण तुमे चूको केम ॥ बेहू सरिखा होवतां, किम रस वाधे एम ॥ ६ ॥

॥ ढाल बवीशमी ॥

कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ नृप कहे बेकर जोमीने रे, अहो अहो आतमराम ॥ वीणा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मूको कंधथी रे, रीस चढावो कां आम रे ॥ योगण ॥ छटकी न दीजे छेह ॥ हुं बुं पगनी रेह रे ॥ योगण ॥ मानो वीनति एह रे ॥ योगण ॥ छटकी न दीजे छेह ॥ १ ॥ ए टेक ॥ सरम नजर मेला तणी रे, आवती सुं नथी चित्त ॥ छेह न द्यो तुमे मुझ त्रणी रे, हुं इम जाणतो नित्त रे ॥ यो० ॥ छ० ॥ २ ॥ माहरा हृदय मांहे वसी रे, मन हरी जाउं छो एम ॥ किहां रह्युं तुम योगीपणुं रे, ए पातिक बूटसो केम रे ॥ यो० ॥ छ० ॥ ३ ॥ जासो जो गोद बिछावतां रे, तो अम बल स्यो साम ॥ करि केम रहे कांने ग्रह्यो रे, तेम तुमे अभिराम रे ॥ यो० ॥ छ० ॥ ४ ॥ माया लगाडी कारमीरे, मुझथी तमे महाराय ॥ पण कदीही योगी सरां रे, आपणना नवि थाय रे ॥ यो० ॥ छ० ॥ ५ ॥ परदेशीथी प्रीतडी रे, करवी तेहिज कूड ॥ नेह निवाहि नवि सकेरे, जाए विहंग परे ऊड रे ॥ यो० ॥ छ० ॥६॥ ते मैं नयणे पारख्युं रे, तुमथी दीठो आज ॥ जो हुं एहवुं जाणतो रे, तो न करत नेह समाज रे ॥ यो० ॥ छ० ॥ ७ ॥ पण ते हवे सुं सोचवुं रे, होए होवणहार ॥ क्षौरकरम कीधा पछे रे. पूछे सुं तिथी वार रे ॥ यो० ॥ छ० ॥ ८ ॥ जे जीभें तुमें कह्यो हतो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, रहिसुं सदा इण ठोर ॥ तिणहि जीनें जायसो रे, कहेतां किम वहे सोर रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ ए ॥ नेहसुरद्रुम पालिने रे, नांखो कांइ उछेद ॥ करुणा नीरें सिंचियें, पूरो एह उमेद रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ १० ॥ हुं नही सही सकुं तुम तणो रे, विरहो अधक्षणमात्र ॥ डाख ज्युं वेल्ली विद्युटियें रे, जूरी कृश करे गात्र रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ ११ ॥ तनु कोमल मधुरी गिरा रे, दीसे छे प्रगट प्रसिद्ध ॥ तो कठणाई एवडी रे, हियडे किहांथी लीध रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ १२ ॥ मनपण करीने कुंयलुं रे, मानो मुझ मनोहार ॥ कोईकना मुख साहमुं रे, जुउं जीवन आधार रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ ॥ १३ ॥ अति ताण्यो केम पूरवे रे, नेह थयो जिहां एम ॥ नाखी विरहपयोधिमां रे, नासी जासो केम रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ १४ ॥ कूमो आल चडावीने रे, जासो तुमे महाराय ॥ दाढी हाल्यानो किस्यो रे, मांड्यो मुजथी न्याय रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ १५ ॥ हुकम करो तो परणवा रे, जाऊं करुणागार ॥ कहो तो न जाऊं इहां रहुं रे, कहो ते करिये विचार रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ ॥ १६ ॥ केम चाले तुम हुहव्यां रे, वीनवे इम नृपा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल ॥ मोहनविजयें वरणवी रे, एह छवीसमी ढाल रे ॥ यो० ॥ ढ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप आतुर जाणी करि, सामणि बोली ताम ॥ रे बंदे नारान्यके, क्यों कलपत हे आम ॥ १ ॥ देखन तेरा पारखा, इतना किया विलास धन्य धन्य तेरी मातकुं, तोकुं हे साबास ॥ २ ॥ दलथंभनकी पुत्रीसें, कर विवाह मनरंग ॥ कहे तो में साथे चलुं, वीणा लेई संग ॥ ३ ॥ तूं दक्षणकुं ऊठ चले, हम रहे इहां कुणकाज ॥ जित तूं तित हमही चले, म कर फिकर महाराज ॥ ४ ॥ राजा अतिहर्षित थयो, सामणनो लहि हेज ॥ जिम हरखे निद्रालुउं, पामी सुंदर सेज ॥ ५ ॥ हारेल जेम वाहन मले, भूख्याने जिम अन्न ॥ तिम योगण वचनें थयो, नवपल्लव नृप मन्न ॥ ६ ॥ योगिणनुं मन थिर थयुं, देखीने भूपाल ॥ दलथंभणना सचिवने, तेमाव्यो ततकाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥

॥ जगजीवन जगवालहो ॥ ए देशी ॥

॥ तेह सचिव कहे रायने, ढील किसी करे राय ॥ लाल रे ॥ चालो जी पंथ छे वेगलो, आवे जो तुमचे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दाय॥लाल रे॥चतुर सनेहि सांजलो॥१॥तिहां नृप वाट जोतो हसे, हुउं तुमे तइयार॥ला०॥ धरम करम गति शास्त्रनी, तरित कही सुविचार ॥ ला० ॥ च० ॥ २ ॥ नृप पण तेहना कहेणथी, सजी चतुरंगी सैन्य ॥ ला० ॥ निसाने ंका थया, नादें पूस्यो गयण ॥ ला० ॥ च० ॥ ३ ॥ योगणियें निजयंत्रमां, राख्या जूषण खास ॥ ला० ॥ ठांना राख्या गोपवी, नृपति न जाणे तास ॥ला०॥ च० ॥ ४ ॥ चाल्यो नृप दक्षिण दिशे, सचिवने आगल कीध ॥ ला० ॥ योगिण पण साथें चली, रथमें बेसारी लीध ॥ ला० ॥ च० ॥ ५ ॥ वाटें दल सबलो वहे, जाणे ऊमह्यो मेह ॥ ला० ॥ के उठलियो कल्लोलथी, क्षीरोदधि ठे एह ॥ ला० ॥ च० ॥ ६ ॥ एक एकने ऊपरें, हय चाले हीसंत ॥ ला० ॥ मदऊरता मयगल चले, शुंमादंम धरंत॥ला०॥ च०॥ ७ ॥ पायक प्रौढा परवस्या, हूवा सानिध बऊ ॥ ला० ॥ मुठाला मठरायता, तिरकसी चले धरि कंध ॥ ला० च० ॥ ८ ॥ इम सेन्याये परवस्यो, मंजल सर थयो राय ॥ ला० ॥ क्षण क्षण नृप सा मणतणी, खबर लिये चित्त लाय ॥ ला० ॥ च०॥ए॥क्षण क्षण बिहुं एक वाहने, बेठा करे गुणगान ॥ ला० ॥ गीत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुणे तस मुखथकी, नूधर देई कान ॥ ला० ॥ च०॥१०॥ इम वहेतां दिनपांचमे, पाम्या एक उद्यान ॥ ला० ॥ सदल सरल महीरुह घणा, ऊंचा लगे असमान॥ला०॥ च० ॥ ११ ॥ गया सघन देखी जिहां, रवि पण न करे जोर ॥ ला० ॥ डुमगुबें बेठा थका, मधुरां टहुंके मोर ॥ ला० ॥ च० ॥ १२ ॥ सजल सरोवर जिहां तिहां, अति रमणीयक वन्न ॥ ला० ॥ देखी मही पतिनुं थयुं, घणुं आणंदित मन्न ॥ ला० ॥ च० ॥ ॥ १३ ॥ योगणिने पूठी करी, डेरा दीधा तत्र ॥ ला० ॥ खेदाक्रांत थया नटा, ऊतरिया सर्वत्र ॥ १४ ॥ धूतासे योगण थकी, ए वनमें नूपाल ॥ ला० ॥ मोहनविजयें नली कही, सत्तावीसमी ढाल ॥ ला० ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ डेरा दीधा देखिने, सामणचिंते चाव ॥ ए कान नमे कंतने, धूत्यानो बे दाव ॥ १ ॥ ढील न करवी कामिनी, ऊखाणो कहे लोय ॥ जिम जिम नींजे कंबली, तिम तिम नारी होय॥२॥इम चिंती ऊठी तुरत, वीणा कर धरि तेह ॥ मानतुंग महीपति नणी, इम नाषे धरि नेह ॥ ३ ॥ सुण बे तूं उज्जेणपति, कहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो इण उद्यान ॥ हम खेले जइ सरवरे, कर आवे असनान ॥ ४ ॥ भिनुकमें फिर आउंगी, करिके मुनि आचार ॥ तव नरपति कहे स्वामिनी, वन छे अति विस्तार ॥ ५ ॥ वाघ सिंघ गुंजे घणा, तुमे छो अस्त्री जात ॥ कहो तो आवुं वोलाववा, सा बोली सुणि वात ॥ ६ ॥ कौन वोलावे सिंहकों, इम कहि ऊठी तेह ॥ वीणा लेई वन्नमां, आवी धरिने नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल अठ्ठावीशमी ॥

॥ के तट यमुनानो रे अति रलियामणो रे ॥ ए देशी ॥ के तट सरोवरनो रे अति रलियामणो रे, चिहूं दिशि नरियो गुहीर गंन्नीर ॥ मछकछपनां रे पूंछ अछाटती रे, उछले जल सरतीर ॥ तट सरो० ॥ १ ॥ हंस चकोर रे बग ने सारसी रे, जेणे तट करता बहु लि केलि ॥ केइक उरूता रे केइक बेसता रे, केइ रह्या जलथी चंचू न्नेलि ॥ तट० ॥ २ ॥ जंबु लिंबु रे अंब कदंबना रे, तिहां रह्या लुंबित जुंबित ऊरू ॥ जलराखण रे जनने कारणे रे, जाणियें कीधी एहनी वाड ॥तट०॥३॥ अति रमणिक रे थानक जोइने रे, योगण पामी मन आणंद ॥ सांन्नलजो सहु कोइ रे, नृपने धूतवा रे, जे इहां रचसे रामा फंद ॥ तट० ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मूकी वीणा रे अलगी कंधथी रे, तरुवर कोटरमांहि छिपावी ॥ पेठी धीठी रे झंझा नीरमां रे, कीधुं मंजन युगति बनावी ॥ तट० ॥ मंजन करिने रे जलने बाहिरे रे, आवी केस निचोवे नार ॥ टप टप टबके रे जलनां बिंडुवा रे, जाणे तूटो मोतीहार ॥ तट० ॥ ॥ ६ ॥ सुंदर अंबर पीतांबरतणा रे, काढ्या वीणा मांहेथी ताम ॥ पहिर्या झिलता रे वसन ते अंगथी रे ॥ जेणे छबि मोहे सुरअभिराम ॥ तट० ॥ ७ ॥ कज्जलरेखा रे सारी नेणथी रे, जाणे समार्यो मनमथ बाण ॥ कीधी राती रे कुंकम बिंडुका रे, जाणे उग्यो शैशव भाण ॥ तट० ॥ ८ ॥ अंगो अंगे रे भूषण भावि या रे, नेउर घमके चरणे जोर ॥ जाणियें पियुनेरे एणिपरें जीपवा रे, धसमसी दीधी नगारे छोर ॥ तट० ॥ ए ॥ अपछरसरिखुं रे रूप बनावियुं रे, हींचे वरु साखाग्रहिवांहि ॥ गाए मधुरां रे गीत आलापीने रे, ऊंचे स्वरथी तिणे वनमांहि ॥ तट० ॥ १० ॥ इम तिहां करतां रे पहोरज थइ गयो रे, पाछल नरपति जोवे वाट ॥ हजिय न आवी रे योगण सुं थयुं रे, परू हसे भूली विषमे घाट ॥ तट० ॥ ११ ॥ रखे होए एह ने रे जीवें पराभवी रे, रखे होसे बूडी सरोवर मां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हि ॥ के रखे मुऊने रे वाही गइ हसे रे, में पण मूकी एहने कांहि ॥ तट० ॥ १३ ॥ हजिय न आवी रे वेला बहु थइ रे, किहां गइ योगण मूकी नेह ॥ जोइ काढुं रे जइने वन्नमां रे, जिहां तिहां होशे हमणां एह ॥ तट० ॥ १३ ॥ नूपति ऊठ्यो रे एकलो आप सुं रे, सेवक कोइ न लीधो संग ॥ धीरज हुइ रे राय नणी तदा रे, फरक्यो ज्यारे जमणो अंग ॥ तट० ॥१४॥ चरुवरी चाल्यो रे खडग संबाहने रे, वनमां जोवे तव नूपाल ॥ मोहनविजयें रे नाषी रंगथी रे, अठावी समी ढाल रसाल ॥ तट० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लतागुन्न ढंढोलतो, तस जोवे नृप राट ॥ नमे जिम मयगल विफख्यो, फिरे करे गललाट ॥ १ ॥ यूथ नष्ट जिम हरणलो, फिरे प्रचारे फाल ॥ तिम नेहे वेध्यो थको, वनमां फरे नूपाल ॥ २ ॥ पण योगण लाने नही, जोवे पगनूपीठ ॥ मानवतीयें कंतने, वनमां नमतो दीठ ॥ ३ ॥ जाएयुं आव्यो वल्लहो, मुऊने जोवा काज दिन धोले घूत्या तणो, अवसर मलियो आज ॥ ४ ॥ नाहनणी आकर्षवा, गाए गीत रसाल ॥ जाणे टहु की कोकिला, बेठी आंबामाल ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥

॥ चांदाने चाऽणे हो, हंजा मारुं गुमियां उभा वे ॥ कांइ गुमियांरी दोरी प्यारी हो लागे, जोली नणदीरो वीरो ॥ कमधज कह्यो न माने, कह्यो न माने हो ॥ वाला मारा कह्यो न माने ॥ए देशी ॥राजाने देखीने हो,कामणी कूमी बुद्धि उपावे ॥ साद करी करी नाहने तेडे, अहो लाल विदेसी मित्ता, माहरे इण सरवरियें पधारो ॥ हीचोले हिंचीने हो, पंथी माहरा अरज करुं बुं ॥ तार पछी तुमे वेह जोहो पाणी ॥ अ० ॥ १ ॥ पंथीना पंथने हो, पंथी मारा रखे रे वहेता ॥ दीसो छो कोइ प्रेम पियारा ॥ अ० ॥ वाटमली वोली ने हो ॥ पंथी० ॥ मुऊपें पधारो ॥ आदूं ने अवलूं कांइ विचारो ॥ अ० ॥ २ ॥ आगले जाता हो ॥ पंथी० ॥ इहां हिज आवो ॥ पगले बे चारे पगसुं होसे मेला ॥ अ० ॥ इम किम वनमें हो ॥ पंथी० ॥ जुल ना जमो छो ॥ किणे कामणिये कह्या इम गहिला ॥ अ० ॥ ३ ॥ वातमीयें वेधाण हो ॥ पंथी० ॥ नृप चित चिंतें, मुऊने साद करे कुण नारी ॥ अ० ॥ साम णिना सरिखो हो ॥ पंथी० ॥ स्वर ते न दीसे ॥ ए तो असेंधो साद छे नारी ॥ अ० ॥ ४ ॥ वाणिने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुसारे हो ॥ पंथी० ॥ नृप तिहां आव्यो, दीठी नारी हींचती माले ॥ अ० ॥ नामाने नरोंसे हो ॥ पंथी०॥ अपछर दीसे, राजा फरि फरि तास निहाले ॥ अ० ॥ ॥ ए ॥ शोनाने देखीने हो ॥ पंथी० ॥ नृप जोइ रहियो, चरणे नमीने तास हींचोले ॥ अ० ॥ वेध डीये वेधाणो हो ॥ पंथी० ॥ विकट कटाके, नारी नणी नूपति तव बोले ॥ अ० ॥ ६ ॥ किहांथी आवी हो, नामनि नोली ॥ किहां तुं रहे बे, इहां एकाकी केम तुं हींचे ॥ अ० ॥ नाह लिये निहेजे हो ॥ ना० ॥ पुहवी दीसे बे, किंवा कोयथी प्रीतमी सिंचे ॥ अ० ॥ ७ ॥ नानमीयें वषें हो ॥ ॥ ना० ॥ बिहती नथी शुं, कहे मुने साच हृदय तुं खोली ॥ अ० ॥ राजाना मुखथी हो ॥ ना० ॥ वचन सुणीने, ततक्षिण धूतण मधुरुं बोली ॥ अ० ॥ ८ ॥ अेकह कहाणी हो ॥ पंथी० ॥ तुऊपे कहुं बुं, बाल पणे पण कीधो अटारो ॥ अ० ॥ पयतल धोइने हो ॥ पंथी० ॥ जे जल पीवे, तो हुं तेहने करुं प्रीतम प्यारो ॥ अ० ॥ ए ॥ पटकाने पलवटें हो ॥ पंथी० ॥ प्रीतम नाथुं, वृषनतणा परे इहां तिहां फेरुं ॥ अ० ॥ एहवो तो नाहलियो हो ॥ पंथी० ॥ नवि मल्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोइ, पण न रह्युं कोइ मुऊ पण केरुं ॥ अ० ॥ १० ॥ खेचरनो स्वामी छे हो ॥ पंथी० ॥ जनक अमारो, तेणे मुज पणनी वातनी जाणी ॥ अ० ॥ तातडीयें रीसडली हो ॥ पंथी० ॥ मुऊ जणी कीधी, वर पर णाववा घणुं ए ताणी ॥ अ० ॥ ११ ॥ पीयरथी रीसा वी हो ॥ पंथी० ॥ इणे वन आवी, पण पूरया विण किम परणाय ॥ अ० ॥ आज मुने दीहमला हो ॥ पंथी० ॥ चार व्यतीता, चार ते चार युग सरिखा गणीएं ॥ अ० ॥ १२ ॥ कामिणिनी केलवणी हो ॥ ॥ पंथी० ॥ सही करी मानी, नृप जाणे एणे साची दाखी ॥ अ० ॥ मोहनविजयें हो ॥ पंथी० ॥ सुपरे बनावी, उंगणत्रीशमी ढाल ए जाखी ॥ अ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

नरपति रमणी निरखिने, थयो घणूं लयलीन ॥ जिम आमिष पेखी करी, उलसे जलचर मीन ॥१॥ नूप विचारे एहने, परणुं वन्नहमझार ॥ दुर्जन विस्मय कार णे, सफल करुं अवतार ॥ २ ॥ नृप जाषे नारी जणी, अहो रतिने अवतार ॥ जे तुऊ चरणोदक पिये, ता स करे जरतार ॥ ३ ॥ हुं तुऊ चरणोदक पिऊं, थइ फरुं वृषज सरूप ॥ जो मुऊने परणो तुमे, तो पण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूरुं अनूप ॥ ४ ॥ सा नाषे रे पंथिया,तो जे केहनी ढील हुं एहिज इछुं अछुं, व्यो मनमथनी मील ॥ ५ ॥ अंधहि वांछे आंखने, पंगू वांछे पाव ॥ तेम हुं वांछूं छूं पीयु, वरुं पण पूरे राव ॥ ६ ॥ योगण तो नूली गयो, विकल थयो महिपाल ॥ दंनफंदमांहे पड्या नरीय न सक्के फाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ मुजरो ल्यो ने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

॥ आतुर हुउं जी परणवा, नूपति वन्न मकार ॥ सा कहे लावो जी निर्मल नीरने, ल्यो चरणोदक सार, हवे सहु जोजो कौतुकवातमी ॥ १ ॥ कामिनी कपटनंमार, नवि लहे कोई तास चरित्रनो, ब्रह्मादिक पण पार ॥ हवे० ॥ २ ॥ नृप तव दोड्यो जी नीरने कारणे, पेठो सरोवर मांहे ॥ पात्र निपाव्यो जी पोयण पत्रनो, नर्यो जल तेहमां उछांहे ॥ हवे० ॥ ३ ॥ जल लेई आव्यो जी नारी आगले, कहे इम बे कर जोम ॥ पाउं कहो तो जी हुं धोई पीयुं, पूरो मनतणा कोम ॥ हवे० ॥ ४ ॥ नारियें दीधो पद नृपहाथमां, मूकीने कहे धोय ॥ ल्यो करो आचंबन तोयनुं, माहेरी वांछना होय ॥ हवे० ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अरहो परहो जी त्यां अवलोकिने, पुरपति धोवे पाय ॥ पीधुं पखाली सात वेला तिहां, चरणो दक चित लाय ॥ ह० ॥ ६ ॥ कोटमें नाखी जी सुंदर फालीयुं, वृषत्र सरिखो बनाय ॥ चाबख देई सरवरने तटे, फेरव्यो नारीयें राय ॥ ह० ॥ ७ ॥ जिहां त्रिय मूके जी पयतणा तलियां, तिहां नृप मांडे जी हाथ ॥ मानवतीयें तिहां वननें विषे, धूत्यो अवंतीनो नाथ ॥ ह० ॥ ८ ॥ चारें दिशायें चार कलस मीसे, रेणुना तुंग बनाय ॥ तरुवर तणीजी साख करी तिहां, परण्यो प्यारीने राय ॥ ह० ॥ ए ॥ धिग धिग होजो जी काम विटंबना, कामथी न रहे जी माम ॥ कामथी कामी कामिनी आगले, नर धूतायें बे आम ॥ ह० ॥ १० ॥ मानवती त्यां मन मांहे हसे, अहो अहो नाहनी बुद्धि ॥ धुंतुं बुं जी तोहि हजी लगे, पम्ती नथी कांई सुद्धि ॥ ह० ॥ ११ ॥ ए बल सारुं तो इणे नारीने, निज्ञं ठी मूकी केण ॥ में तो पाल्या जी मारा बोलमा, हरषे एम हिएण ॥ ह० ॥ १२ ॥ नृप कहे केम जी हसो बो प्रिया, उलस्युं केम तुऊ हीयुं ॥ सा कहे केम जी हुं नवि उल्लसुं, पामी तुम सम पीयुं ॥ इ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १३ ॥ आज कृतारथ हुं एहवे थई, पण पूग्यो मन खंत ॥ भाग्य ते वाध्यो जी हवे इहां मुऊतणो, दुखनो पोहोतो अंत ॥ ह० ॥ १४ ॥ कर ग्रहीने कहे नृप नारने, चालो डेरे जी हेव ॥ पीयूनो आग्रह घणुं इम पेखीने, सा बोली ततखेव ॥ ह० ॥ १५ ॥ स्वामीजी हवणा तुम संगें आवतां, मुऊने आवे छे लाज ॥ आवीस तिहांही जी घरी एक अंतरे, जाउं तुमें महाराज ॥ ह० ॥ १६ ॥ हरख्यो नारीनां वयण सुणी तिहां, डेरे आव्यो भूपाल ॥ मोहनविजयें जी भाषी लहकती, त्रीसमी ढाल रसाल ॥ ह० ॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ मानवती वसुनाथने, विदा करीने ताम ॥ वस्त्रा दिक फरी वीणमें, संगोप्या अभिराम ॥ १ ॥ थई अवधूतण फेरिने, भस्म चढावी अंग ॥ मूकी वीणा खंधपर, धरती हृदय उमंग ॥ २ ॥ कोई वाटे पेहेली गइ, आवी बीजी वाट ॥ योगण दिठी आवती, अति हरष्यो नृपराट ॥ ३ ॥ बेसारी सिंहासने, भगति युगति बहु कीध ॥ संतोषी अशनादिके, गीत गान रस पीध ॥ ४ ॥ नृपति विचारे चित्तमां, हजिय न आवी नार ॥ के सुं वनदेवी हती, गई मुऊने विप्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तार ॥ ५ ॥ के ठगणि कोइ ठगी गई, इस्यो थयो प्रकार ॥ मुखमां आव्यो कोलियो, गयो हवे किस्यो विचार ॥ ६ ॥ जो ए योगण जाणशे, तो होसे निस नेह ॥ गइ तो आगी जाण दे, गया तणी शी ईह ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ मानो मानो सज्जन मुऊरो मानो ॥ ए देशी ॥

॥ नृपना मनमां खेचरी रे ॥ सूरिजन ॥ खटके थइने साल ॥ कामनी धूतारी ॥ जोवेवे सुरनरकोमी ॥ माननी मतवारी ॥ माने नृप इंद्रजालनो रे ॥ सू० ॥ कोइक थइ गयो ख्याल ॥ का० ॥ १ ॥ पण नृप न कहे कोयने रे ॥ सू० ॥ वृषन्न थयो ते वात ॥ मा० ॥ कोठीमां मुख घालिने रे ॥ सू० ॥ रोवे ज्युं तस्कर मात ॥ का० २ ॥ योगण पण अण जाण ती रे ॥ सू० ॥ थइ बेठी नृपपास ॥ मा० ॥ एक एकथी राखे बुपी रे ॥ सू० ॥ वातडली सुविलास ॥ का० ॥ ३ ॥ डेरा उपाड्या वनहूंतीरे ॥ सू० ॥ चाल्यो तिमहिंज सेन ॥ मा० ॥ तिमहीं सामण गोठडी रे ॥ सू० ॥ मांडे पती उज्जेण ॥ का० ॥ ४ ॥ अनुक्रमें आव्या चालता रे ॥ सू० ॥ मुंगीपट्टण बेणीवार ॥ का० ॥ सामिण कहे महारायने रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सू० ॥ सुण एक मेरा विचार ॥ का० ॥ ५ ॥ में योगी तें जोगियारे ॥ सू० ॥ चहेरा करे कछु लोग ॥ मा० ॥ तेरे संगें सहेरमे रे ॥ सू० ॥ केसें आवनका योग ॥ का० ॥ ६ ॥ में रहूंगी इण बागमें रे ॥ सू० ॥ तुं जा नगर मझार ॥ मा० योगी सोही जाणियें रे ॥ सू० ॥ राखे लोकाचार ॥ का० ॥ ७ ॥ व्याहके रतनवती त्रिया रे ॥ सू० ॥ तूं इत आए वेग ॥ मा० ॥ राखे जैसा हे तिसा रे ॥ सू० ॥ तेरे मेरे नेग ॥ का०॥८॥ फेर उझेणि आउंगी रे ॥ सू० ॥ रे नृप तेरे संग ॥ मा० ॥ योगणनी वाणी सुणी रे ॥ सू० ॥ पाम्यो नूपति रंग ॥ का० ॥ ए ॥ योगण रहि ते वाडीयें रे ॥ सू० ॥ नृप आयो पुरमांहि ॥ मा० ॥ दलथंजण पण सांमुहो रे ॥ सू० ॥ आव्यो धरि उछांहि ॥ का० १०॥ मानतुंग अतिहेजसुं रे ॥ सू० ॥ पुरमें कीध प्रवेश ॥ मा० ॥ दीधो उतारो महेलमां रे ॥ सू० ॥ उत र्यो दल सुविशेष ॥ का० ॥ ११ ॥ मानतुंग महि पालने रे ॥ सू० ॥ दलथंजण करे सेव ॥ मा० जोज न जगति जली करी रे ॥ सू० ॥ माने करीने देव ॥ का० ॥ १२ ॥ रतनवतीने परणवा रे ॥ सू० ॥ सुंदर मुहुरत लीध ॥ मा० ॥ दक्षिणपति पुत्रीतणा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ सू० ॥ मनह मनोरथ सिद्ध ॥ का० ॥ १३ ॥ रतनवती गणे माहरो रे ॥ सू० ॥ सफल थशे अव तार ॥ मा० ॥ परणशे मुझने चोरियें रे ॥ सू० ॥ मालवपती सिरदार ॥ का० ॥ १४ ॥ योगणनी जो जो कला रे ॥ सू० ॥ करशे खेल रसाल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें वरणवी रे ॥ सू० ॥ ए एकत्रीशमी ढाल ॥ का० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ योगणवेश उतारीने, पेहेस्यो अद्भुत वेश ॥ वीण उपावी बागमां, आवी नयर निवेश ॥ १ ॥ रत नवती पासे गइ, मली घणे मनोहार ॥ रतनवती जा णे हिये, ए कुण सुंदर नार ॥ २ ॥ पूछे आव्या कि हां थकी, कवण तुमारो नाम ॥ मानतुंगराजा तणी हुं हुं वडारण नाम ॥ ३ ॥ आवी उज्जेणी थकी, मानवती मुझ नाम ॥ रूपें अमो तमसारखी, नवि निरखी कोय वाम ॥ ४ ॥ मुझने रूपें मुकी अछे, तुमने जोवा काज ॥ तेमाटे आवी अहुं, तुज मंदि रमां आज ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ चित्रोमा राणारे ॥ ए देशी ॥

॥ दलथंजण कन्या रे, हरषे थइ धन्या रे, मान वती सम अन्या तेणें दिठी नही रे॥ जननीने जणा वी रे, वातमली बनावी रे आपणने घर आवी वमारण गहगही रे ॥१॥ तस रूप सरिखुं रे, हूं तो नवि परखुं रे, कहो तो आकरषुं तुमपें अंदिरे रे॥जननी कहे जावो रे,इहां तास बोलावो रे,किसि वार म लावो तेमो मंदिरे रे ॥ २ ॥ रतनवती लेइ चेडी रे, फरी आवी नेमी रे॥ वमारण तेडी माताने मेलवी रे, कही पुत्रीयें जे हवी रे ॥ डगें दीठी तेहवी रे, मानवतीयें कला के हवी केलवी रे ॥ ३ ॥ नित वेस बनावे रे, गुण आप जणावे रे, गाई गीत सुणावे सहुने वश करे रे ॥ हली मली सवि संगे रे, चरिताली सुचंगे रे, हवे जो जो रंगें नृप वनिता वरे रे ॥४॥ दलथंजण राजा रे, व जडावे वाजा रे॥ ताजा अतिसाजा फेरा बांधिया रे, चोरी रची सारी रे॥ मुहरत निरधारी रे, उत्सव कस्या नारी सुरजि सुगंधिया रे ॥ ५ ॥ कन्या सिणगारी रे, प हिस्या जरतारी रे॥ मोतिउमें समारी रतनवतीजणी रे, सरणाइ वाजे रे ॥ नटनाटिक साजे रे, गुंजाला

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाजे गाजे मृदंग विधें घणा रे ॥ ६ ॥ वनिता मळी वादे रे, कौतुकने उमादे रे॥ मानवती शुजसादें गाए सोहला रे, वकारण करीथाणे रे ॥ कोइ नेद न जाणे रे, सहु कोइ वखाणे लोक नली नली रे ॥७॥ मानतुंग म हीशें रे, सजी जान विशेषे रे, निसाणे नरेशे परू ति ठोरियें रे॥ रतनवती करी संगे रे, जोरावर जंगे रे, आवी बिहु रंगे बेठां चोरियें रे ॥ ८ ॥ मानवती थइ माऊी रे, करे हलफल ऊाऊी रे, सहुकोने मन बाऊी वकारण तो खरी रे ॥ वरकन्या वरिया रे, चिहुं फेरा फरिया रे, आनंदे नरिया नृपे नारी वरी रे ॥ ए ॥ मानतुंग महीधरियो रे, पुरुषें परवरियो रे॥ आवीने उतरियो डेरे मूलगे रें ॥ रयणी थई जाणी रे, पुत्रीनणी राणी रे, सुणो रे सयाणी मूके ऊमगें रे ॥ १० ॥ मानवती तत्र बोली रे, कपटालय खोली रे, राणी अहो नोली सुण मुऊ वीनती रे ॥ कुल देवी अमारी रे, ठे अतिहि अटारी रे, विलससे नही नारी अम नृप ते वती रे॥ ११ ॥ उज्जेणी जाई रे, कुलदेवी मनाई रे, रतनवती चित लाई विलससे तदा रे ॥ सवि नेदहुं लहुं बुं रे, ते माटे कहुं बुं रे, नृप नेली रहुं बुं तिणे जाणुं सदा रे ॥ १२ ॥ खोटुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न कहुंबुं रे, मत मानजो उंबुं रे, कहो तो जइ पूबुं मारा रायनें रे ॥ बत्रीसमी ढालें रे, कहि मंगल मालें रे, मोहनें सुविशालें कंठे गाइने रे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राणी मानवतीजणी, कहे जई पूछो राय ॥ जेहवी दीये आगना, तेहवी सूंपो आय ॥ १ ॥ मानवती ऊठी तदा, भूषण सजी विशाल ॥ लेई चाली हाथमें, जरि कंसारें थाल ॥ २ ॥ मानवती रमऊम करती, आवी प्रीतम पास ॥ पीउडे तो नवि उंलखी, अहो अहो दंजविलास ॥ ३ ॥ प्रणिपति करी उजी रही, आगल मूकी थाल॥मानतुंग मधुरे स्वरें, बोल्यो तास निहाल ॥ ४ ॥ कहे कुण तूं छे कामिनी, किम आवी जररात ॥ जरि कंसारे थालिका, शी छे कहो मुऊ वात ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेंत्रीशमी ॥ नांहनो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

बोली मानवती सती रे, करी घूंघटपट लाज ॥ राजन सांजलो रे ॥ गुरुणी हुं रत्नवती तणी रे, मानवती मुऊ नाम ॥ रा० ॥ १ ॥ कंसार जे लावी अहुं रे, तेहनो निसुणो विवेक ॥ रा० ॥ अम घर एहवी रीत छे रे, अतिहि अपूरव एक ॥ रा० ॥२॥ जे अम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नृपनी पुत्रिका रे, परणें जो कोई वसुधार ॥ रा० ॥ ते तो एहो माहरो रे, चाखे एह कंसार ॥ रा० ॥ ३ ॥ चाखो एह कंसारने रे, होसे कोक कल्याण ॥ रा० ॥ नही तो वरकन्या त्रणी रे, उपजे कोई विन्नाण ॥ रा० ॥ ४ ॥ जो सुख वांछो राजनो रे, तो जिमो कु कुं एह ॥ रा० ॥ त्रामायें त्रोलव्यो त्रर्तुने रे, नारी कपटनो गेह ॥ रा० ॥ ५ ॥ नृपें जाएयुं साचुं कह्युं रे, ए तो सुंदर नार ॥ रा० ॥ रीत हसे इहां एहवी रे, तो सुं करीयें पचार ॥ रा० ॥ ६ ॥ कहे नृप एहीने दीउ रे, जिम चाखुं कंसार ॥ रा० ॥ तेणें दीधुं कुवुं करी रे, न कस्यो कोइ विचार ॥ रा० ॥ ७ ॥ नृपें आरोग्यो कोलियो रे, करिने तेह कंसार ॥ रा० ॥ नृप सुं करे केहने कहे रे, धूते निजघर नार ॥ ८ ॥ आ चमन जलथी करो रे, बोल्यो नृप तेवार ॥ रा० ॥ वलि जे विध होय ते कहो रे, करियें सयल आचार ॥ रा० ॥ ए ॥ पण मुज किम परणी त्रिया रे ॥ हजि य न आवी आवास ॥ रा० ॥ किम तेमी नाव्यां तुम्हे रे, कारण स्यो छे तास ॥ रा० ॥ १० ॥ मानव ती बोली तदा रे, सुणो उज्जेणीधीस ॥ रा० ॥ मलशे षटमासें पछे रे, सा तुम विश्वावीस ॥ रा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ११ ॥ गुरुगोत्रज पूज्या नथी रे, पुजतां होए ठ मास ॥ रा० ॥ तुमने चालवा नही दीये रे, राखसे एह आवास ॥ रा० ॥ १२ ॥ मत ए कोईने जणावजो रे, समजी रहेजो चित्त ॥ रा० ॥ वातमी करवा तुम थकी रे, इहां हुं आवीश नित्त ॥ रा० ॥ १३ ॥ धूती ने एम नूपने रे, आवी राणी पास ॥ रा० ॥ कहे नृप कोई व्रत मांकियो रे, रहेशे इहां ठमास ॥ रा० ॥ १४ ॥ त्यार पठे तुम पुत्रीनेरे, विलसे जइ उल्लेण ॥ रा० ॥ कोईने कहेता रखे रे, ठांनी वात ठे तेण ॥ रा० ॥ १५ ॥ षट मासनो श्यो आसरो रे, दिन जातां सी वार ॥ रा०॥राणीयें सहु जाएयुं खरुं रे, जूठ न बोले ए नार ॥ रा० ॥ १६ ॥ बाजीगरीना गोटकारे, केह वा रमाडे ठे बाल ॥ रा० ॥ मोहनविजयें वरणवी रे, रूमी तेत्रीसमी ढाल ॥ रा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानवती बीजी रयण, आवी प्रीतमपास ॥ नृप त्रिय गुरुणी जाणीने, आदर दीधो तास ॥ १ ॥ जोवे वक्रकटाक्ष नरी, सा टाली अंदोह ॥ आकृति देखी तेहनी, नृप पाम्यो व्यामोह ॥ २ ॥ मूर्छागत राजा थयो, व्याप्यो विषयविकार ॥ तिम तिम सा दाखे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घणा, हाव भावअधिकार ॥ ३ ॥ नृपें लटपट मांमी घणी, विलसे वातें नार ॥ पण नवि जाणे राजवी, जे ईणें कीध प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

मेंदीरंग लागो ॥ ए देशी ॥ नृप कहे मानवतीज णी रे लाल ॥ हुं रंज्यो तुझ देख ॥ विषयी वसुधाता ॥ तुं पण करुणा नेहथी रे लाल ॥ हसि करी साह मुं पेख ॥ वि० ॥ १ ॥ वाणी सुणी इम रायनी रे लाल ॥ मानवती कहे ताम ॥ वि० ॥ रे मालवपति मु झने रे लाल ॥ वचन कहो कां आम ॥ वि० ॥ २ ॥ रतनवती परणी त्रिया रे लाल ॥ परणे न पोहोती आस ॥ वि० ॥ जे मुझनें प्रार्थो अढो रे लाल ॥ धि गधिग मदनविलास ॥ वि० ॥ ३ ॥ वाहर जोईये जि हां थकी रे लाल ॥ तिहांथी क्युं आवे धारु ॥ वि० ॥ मू की द्यो चोलामणी रे लाल ॥ रहेवा द्यो ए लारु ॥ वि० ॥ ४ ॥ परणी घरणी जे हुवे रे लाल ॥ तेहने कहियें एम ॥ वि० ॥ परनारीने एहवी ॥ लाल ॥ वा तो कहियें केम ॥ वि० ॥ ५ ॥ इम निग्रंठी रायने रे लाल ॥ कहीने करुवां वेण ॥ वि० ॥ तो पण मान वती थकी रे लाल ॥ चोरे नही नृप नेण ॥ वि०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ६ ॥ कामातुर हुउं घणुं रे लाल ॥ फिरफिर चाहे संग ॥ वि० ॥ मानवती तव कंतने रे लाल ॥ नाषे धरी उछरंग ॥ वि० ॥ ७ ॥ अहो अहो एवडुं आक ला रे लाल ॥ किम हुवो ढो महाराज ॥ वि० ॥ हुं हुं दासी राउली रे लाल ॥ जाति नथी कांई नाज ॥ वि० ॥ ८ ॥ वचन सुणी वनितातणां रे लाल ॥ हरष्यो तव महीपाल ॥ वि० ॥ कामविषय सुख नोग व्यां रे लाल ॥ थई उह्नुक उजमाल ॥ वि० ॥ ए ॥ इम अनुदिन सुख नोगवे रे लाल ॥ मानवतीथी राय ॥ वि० ॥ गर्न धस्यो तव अनुक्रमें रे लाल ॥ पूरवपुण्य पसाय ॥ वि० ॥ १० ॥ एक दिन मानवती कहे रे लाल ॥ सांनल प्राणाधार ॥ वि० ॥ गर्न धस्यो में ताह रो रे लाल॥ स्यो तस करवो उपाय ॥ वि० ॥ ११ ॥ पुत्रजनम थासे जिसे रे लाल ॥ त्यारें तुमे महाराय ॥ वि ० ॥ उज्जेणीनणी चालसो रे लाल ॥ मुऊने अत्र विहाय ॥ वि० ॥ १२ ॥ अंगजने केणी परे रे लाल ॥ पालीस हुं कहो नाद ॥ वि० ॥ केम सहि स हुं अहोनिसे रे लाल ॥ लोकमांहि अपवाद ॥ वि० ॥ १३ ॥ थानारो तो थयो हवे रे लाल ॥ सोच कस्यां सुं होय ॥ वि० ॥ तेमाटे मुऊने तुमे रे लाल ॥ दियो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहिनाणी कोय ॥ वि० ॥ १४ ॥ जिम तुमे अंगज उलखो रे लाल ॥ आवे तुमचे पास ॥ वि० ॥ ते कारण मांगु अहुं रे लाल ॥ सहिनाणी सुविलास ॥ वि० ॥ ॥ १५ ॥ वचन सुणी वनितातणां रे लाल ॥ दिये सहि नाणी सार ॥ वि० ॥ निजनामांकित मुद्रडी रे लाल ॥ वलि मुगताफलहार ॥ वि० ॥ १६ ॥ बेहु सहिनाणी लेइने रे लाल ॥ सा हरषी मनमांहि ॥ वि० ॥ ढाल कही चोत्रीसमी रे लाल ॥ मोहनविजयें उछांहि ॥ वि० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार उदार ने मुद्रमी,- कबज करीने ताम ॥ ऊठी मानवती तदा, पियुने करी प्रणाम ॥ १ ॥ कहो तो जई आवुं प्रभु, रतनवतीने पास ॥ हमणा पाछी फरी तुरत, आवीस एणें आवास ॥ २ ॥ नृपति भेद जाणे नही, दीधी शीख तिवार ॥ मानवती पण पय नमी, आवी मंदिरबार ॥ ३ ॥ ताराजर रयणी समे, आवी बागमझार ॥ वेष उतारी वीणमे,संगोप्यो तिणि वार ॥ ४ ॥ योगणवेश फरी सज्यो, चिंते चित्तमझार ॥ बोल सुबोल थयो माहरो, धूत्यो प्राणआधार ॥५॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ मुरलीनी देशी ॥
॥ तथा ॥ नाह अबोला लेई रह्या ॥ ए देशी पण छे ॥

॥ हवे पीउ पहेली पाधरी, जाऊं नगरी उज्जेण ॥ इहां रह्ये श्यो फायदो, पोहोचुं तात पएण नारी धूता री कहियें, पीयुने कीधो पाधरो नेत्र ॥ त्रियाथी अलगा रहियें ॥ १ ॥ ए टेक ॥ मातपिता तिहां माहरां जोतां होसे वाट ॥ ऊंखर ऊरी थयां हसे, माहरो करिय उचाट ॥ ना० ॥ २ ॥ काम सरे न विलंबिये, माह्यां एहिज काम ॥ मानवती वीणा लेइ ॥ रयणि यें चाली ताम ॥ ना० ॥ ३ ॥ एकाकी निर्जय थकी, कठिन करीने मन्न ॥ इम अनुक्रमें दिन केटले, आवी तेणे वन्न ॥ ना० ॥ ४ ॥ तेणे सरोवरे ऊभी रही, जिहां पीयु (कियो) वृषन्न स्वरुप ॥ ना० ॥ ते पण दीठी जायगा ॥ वलि आगल चाली चूंप ॥ ना० ॥ ॥ ५ ॥ वोली विषमी वाटरी, आवी मालवदेश ॥ ना० ॥ दिन केते निजनयरमां, आवी कीध प्रवेश ॥ ना० ॥ ६ ॥ मातपिताने जई मली, कोइ न जाणे तेम ॥ ना० ॥ पाम्या हर्ष सहु रीजता, हेज न होवे केम ॥ ना० ॥ ७ ॥ वल्लन्न जे विछड्या हुवे, तस फरी मेलो होय ॥ ना० ॥ ते सुख जाणे केवली,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

के जाणे दिल दोय ॥ ना० ॥ ८ ॥ मातपिता आग
ल कही, पीयु धूत्यो ते वात ॥ ना० ॥ सांजलीनें सहु
को हस्या, पुत्रीनो अवदात ॥ ना० ॥ ए ॥ वेश
योगणनो परहरी, आदस्यो मूलगो वेश ॥ ना० ॥ अन्ना
दिक आरोगियां, हर्ष धरी सुविशेष ॥ ना० ॥ १० ॥
रातें सुरंगे होइने, गइ एकथंने आवास ॥ ना० ॥ पाहा
रायतनें जगाम्यिा, वातो करे सुविलास ॥ ना० ॥
॥ ११ ॥ यामिक कहे दिन एटला, जगव्या नहि
अम केम ॥ ना० ॥ सुं कांइ पोढी रह्यां हतां, तव
सा बोली एम ॥ ना० ॥ १२ ॥ मौनव्रत आदस्यो
हतो ॥ वीरा एता दीह ॥ ना० ॥ ते व्रत आज पूरो
थयो, तारे खोली जीह ॥ ना० ॥ १३ ॥ इम करतां
पगडो थयो, साचव्यो ग्रही आचार ॥ ना० ॥ आंबिल
तप मांड्यो फरी, पाले समकितसार ॥ ना० ॥ १४ ॥
निज वालमने धूततां, जे कांइ लागो पाप ॥ ना० ॥
॥ १५ ॥ मन वच काया शुद्धथी, आलोचे ते आप
प्रतिक्रमण बिहुं टंकनां, करे अहनिश मन शुद्ध ॥
॥ ना० ॥ जे होवे जवि प्राणियो, तेहने हुवे ए
बुद्ध ॥ ना० ॥ १६ ॥ जिनधर्मना महिमाथकी, पाम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मंगलमाल ॥ ना० ॥ मोहनविजयें वर्णवी, ए पांत्री शमी ढाल ॥ ना० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानतुंग हवे गुरुणिनी, जोवे अहनिश वाट ॥ चिंते किम नथी आवती, गर्न धस्या पठि माट ॥१॥ नृपतो तिहां रह्यो फुलतो, ए तो आवी गेह ॥ हवे सहु कोइ सांजलो, निपट धरीने नेह ॥२॥ मानवती यामिकजणी, कहे निसुणो एक वात ॥ अंतःपुरमां जई कहो, मुऊ गर्नतणो अवदात ॥ ३ ॥ यामिक चम क्या सांजली, गर्न धस्यो एणे केम ॥ पुरुषप्रवेश नही इहां, तो कां बोले एम ॥ ४ ॥ जिम मठी ज लथी थइ, गिरथी जिम हरिनार ॥ तिम सुं एहने पण गरन, थयो हसे निरधार ॥ ५ ॥ पोहोरायत दोड्या थका, आव्या पुर दरबार ॥ नृप पटराणी आ गले, कह्यो गर्न अधिकार ॥ ६ ॥ ताली देइ सहुको हसी, निसुणी कौतुक एह ॥ पिउ विण गर्न ए किम धस्यो, रहि एकथंने गेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ बिंदलीनी देशी ॥

॥ सोले नरपति नारी, तेणे मलीने बुद्धि विचारी हो ॥ धणधणनी देषी ॥ पियुने पत्र लिखीजे, एणें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कामे ढील न कीजे हो ॥ ध० ॥ १ ॥ कागल लिखवा सारु, पटराणी बेठी ते वारु हो ॥ ध० ॥ कुशल क्षेम परिपाटी, लिखि करीने लपि करणाटी हो ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ अपरं समाचार एक, तुमे प्रिठजो पीउ सु विवेक हो॥ध०॥तुमे दक्षिण देशे मोह्या, रही रतनवती संगसोह्या हो ॥ ध० ॥ ३ ॥ पण घरनी खबर नथी लेता, कोइ साथे शुरू नथी केता हो ॥ ध० ॥ ते वारु नथी करता, परदेशें रहो ठो फिरता हो ॥ ध० ॥ ॥४॥ वहेला वलजो कंता, रखे रहो तिहां थई निर्चिंता हो ॥ ध० ॥ मानवती तुम त्रीअ ठे, ते तो आपन्न स सत्वा हुई ठे हो ॥ ध० ॥५॥ वांचजो तेहनी वधाइ, खोटुं मत मानजो कांइ हो ॥ ध० ॥ यदी अमने खबर पठाइ, अमे वेंची पान मिठाई हो ॥ ध० ॥ ६ ॥ जेहनी होए अतिही पुण्याइ, तस घर हुए एहवी बाई हो ॥ ध० ॥ पियुविण पुत्र जे आवे, एहवी नारी कुण पावे हो ॥ ॥ ध० ॥ ७ ॥ तुम घर ए त्रिय राजे, करो पटराणी तो ठाजे हो ॥ ध० ॥ देवी होये जेहवी, पातरी तस पोहोचे तेहवी हो ॥ ध० ॥ ८ ॥ तमे तिहां मगन ठो हसवे, प्रेमदा इहां बालिक प्रसवे हो ॥ ध०॥ तो घरे शाने आवो, जव बेहु लाज कमावो हो॥ ध० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ए ॥ सीमंत उपर वहेला, आवजो मत थाजो गहेला हो ॥ ध० ॥ लेख लिखीने सीधो, कर प्रेक्षने वाली दीधो हो ॥ ध० ॥ १० ॥ पत्र ए नृप कर देजे, मुख वचनें प्रणिपति कहेजे हो ॥ ध० ॥ चाल्यो ते कागल लेइ, हरषे हवे नारी सवेइ हो ॥ ध० ॥ ११ ॥ माहोमांहे करे वातो, सहु बेठी दिवस ने रातो हो ॥ ध० ॥ आपण जोतां ए हिलसे, पियु मानवतीने मल से हो ॥ ध० ॥ १२ ॥ पणआपण वरुवखती, थइ आप णा मननी रुखती हो ॥ ध० ॥ कागल वांचसे प्यारो, तव रहेशे एहथी न्यारो हो ॥ ध० ॥ १३ ॥ विरुइ सोक्य सगाई, जोती रहे छिद्र सदाइ हो ॥ ध० ॥ सोक्य सुलीथी ज्ञुंरुी, सोक्य खटके नाली ऊंरुी हो ॥ ध० ॥ १४ ॥ ते नरने डुख नारी, होए जस मंदिर बे नारी हो ॥ ध० ॥ दंत कलहे दिन जाए, एक एकथी वढवा धाए हो ॥ ध० ॥ १५ ॥ ज्ञुंडो बोलेने विखोडे, सामो सामा कटका मोडे हो ॥ ध० ॥ नारी कहे दीन होइने, प्रज्ञु शोक्य म देजो कोइने हो ॥ ध० ॥ ॥ १६ ॥ नामे बहिन कहिजे, पण वेरण थइने छिजे हो ॥ ध० ॥ ढाल मोहनें कही हरषी, षटत्रिशमी साकर सरिखी हो ॥ ध० ॥ १७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ पोहोतो प्रेष्य अनुक्रमे, मानतुंग नृपपास ॥ करी प्रणाम कागल तुरत, दीधो धरि उल्लास ॥ १ ॥ वाच्यो कागल खोलिने, प्रिठयो सवि वरतंत ॥ मानव तीकेरी कथा, वांचत चमक्यो चित्त ॥ २ ॥ युवती यें ए शी लिखी, मानवतीनी वात ॥ में तो मानवती घरे, यंत्र जड्या छे सात ॥ ३ ॥ एतो कौतुक वातरी, ए किम मानी जाय ॥ किणहिक शोकें वेधथी, होसे लिख्यो बनाय ॥ ४ ॥ जिहां कीरी नवि संचरे, जिहां नही पवन प्रगट्ट ॥ तेहवे गेहे रहे थके, गोरी किम धरे गर्न्न ॥५॥ एहवे वलि बीजो तिमज, कागल आव्यो जत्त ॥ मानवतीनी वात तव, चोकस बेठी चित्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सामत्रीशमी ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज, दक्षिण० ॥ दक्षिण दोहिलो रे, लुजापाणी लागणो ॥ ए देशी ॥

॥ नृपति विचारे हो लाल, ए सवि साचुं राज ॥ कागल कूडो रे राणी मांने नालिखे ॥ १ ॥ में तो ए नारी हो लाल, असती न जाणी राज ॥ खीच री वखाणी रे ए तो लागी दांतडे ॥ २ ॥ धिग धिग एहने हो लाल, एह सुं कीधुं राज ॥ कीधुं एणें रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोकमांहे लजामणुं ॥ ३ ॥ फिट कुलहीणी हो लाल, लाज न आवी राज ॥ ते नवि जाएयुं रे छुंको बानो नां रहे ॥ ४ ॥ वली नृप जाणे हो लाल, वांक न एह नो राज ॥ वांक ए माहारो रे नारी मूकी एकली ॥ ५ ॥ यौवन आवे हो लाल, विरह जगावे राज ॥ रहे केम नारी रे जोहेलें एहवें एकली ॥ ६ ॥ हुं पण इहांथी हो लाल, सीपरे चालुं राज ॥ हजिय न परणे रे हुया महिना षट थया ॥ ७ ॥ गोत्रज पूज्या हो लाल, विण षटमासें राज ॥ दक्षिण राजा रे मुने न दिये सीखकी ॥ ८ ॥ सी परें कीजें हो लाल, नृप न दे जावा राज ॥ मंदिरे एहवा रे नारीकेरा सूलडा ॥ ए ॥ मुखे करी ग्रासी हो लाल, अहियें बुबुंदरी राज ॥ तेहने न्यायें रे राजा सोचे सोचना ॥ १० ॥ कागल पाठो हो लाल, नृपें लखि दीधो राज ॥ चाल्यो सीधो रे लेई प्रेष्य उतावलो ॥ ११ ॥ अवंती आवी हो लाल, राणीने कागल राज ॥ आगल दीधो रे जईने जाखी वातकी ॥ १२ ॥ राणीउं रंजी हो लाल, कागल वांची राज ॥ पिउडो वहेलो रे हवे घरे आवसे ॥ १३ ॥ सोकडली ने साही हो लाल, पिउ को बांधसे राज ॥ कूटसे गाढी रे घोकाकेरे चाबखे ॥

॥ १४ ॥ आपणे हससुं हो लाल, देई देई ताली राज ॥ इम करे नारी रे खुणे बेठी वातडी ॥ १५ ॥ एहवे महिना हो लाल, षट थया जाणी राज ॥ मान तुंग राजा रे दक्षिणरायने वीनवे ॥ १६ ॥ हवे तो गोत्र ज हो लाल, रह्या हसो पूजी राज ॥ ते माटे आपो रे हवे मुने सीखमी ॥ १७ ॥ ससरो नाखे हो लाल, गोत्रज केही राज ॥ पूजवुं छे केहने रे ए तो आज में सांभल्युं ॥ १८ ॥ साहमुं तमारे हो लाल, जईने उज्जेणी राज ॥ पूजवी छे गोत्रज रे छठे मासे साहि बा ॥ १९ ॥ अमे तो सुं जाणुं हो लाल, तुम घर वातो राज ॥ राजली वमारणरे आवी मांने कही गई ॥ २० ॥ ढील तो अमारी हो लाल, कोई नथी जाणो राज ॥ ढील तुमारी रे हूंती एता दींहनी ॥ २१ ॥ मानतुंग राजा हो लाल, ससराने जंपे राज ॥ गोत्रज कोइ रे अमारे नथी पूजवी ॥ २२ ॥ गुरणी तुमारी हो लाल, परण्या तिणे दिन राज ॥ एटुं खवा मी रे मुने एहवुं कहि गइ ॥ २३ ॥ छठे महीने हो लाल, घरणी मिलसे राज ॥ ससरो इहांथी रे थाने जावा नही दीए ॥ २४ ॥ तेहना कह्याथी हो लाल, इहां अमें रहिया राज ॥ माहरे वमारण रे संगे आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णीको नथी ॥ २५ ॥ दलथंजण राजा हो लाल, जमा ईने जंपे राज ॥ गुरुणी अमारी रे एहवी कोइ बे नही ॥ २६ ॥ तमने अमने हो लाल, कोइ गइ धूती राज ॥ ढाल सारुत्रीसमी रे सारी जाखी मोहनें॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सजा सहू खरूखरू हसी, बिहु नृपनी सुणि वात ॥ सहुको कहे कोइ धूतणी, धूती गइ करि घात ॥ १ ॥ मानतुंग राजा हवे, मागी शीख तिवार ॥ दलथंजण निज पुत्रिने, संप्रेडे सुविचार ॥ २ ॥ दीधो बहुलो दायजो, हय गय रथ धन कोरू ॥ पुत्रीयें निज मातथी, करी शीख कर जोरू ॥ ३ ॥ रतनवती उज्जेणपति, चाल्यो लेई शीख ॥ बंदी जन कहे जोरू ए, रहेजो कोरू वरीष ॥ ४ ॥ दलथंजण नृप पुत्रीने, संप्रेडी वलियांह ॥ मानतुंग नृपनारि ले, मालव देस खमियांह ॥ ५ ॥ जव ते वारू आगले, नीस रीउं जूपत ॥ तदा सुरंगी योगणी, चढी नृपतिने चित्त ॥ ६ ॥ योगण जोई बागमां, नरपति आपोआप ॥ पण क्यांही दीठी नही, तव करे नृप विलाप ॥ ७ ॥

॥ ढाल अडत्रीशमी ॥

॥ चांदलिया संदेसो रे कहे जे मारा कंतने रे ॥ ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देशी ॥ किहां रे गुणवंती मारी योगणी रे, गई मुऊ ने ईहां छोरु रे ॥ कोई छे उपगारी वालो सांइनो रे, मुऊने मेलवे दोरु रे ॥ किहां० ॥ १ ॥ नेहरुलो करीने छेह देई गई रे, ए दुख केम खमाय रे ॥ वाहलानो विछोहो अधक्षणमात्रनो रे, धीरपणे न सहाय रे ॥ कि० ॥ २ ॥ छानी छपीने रही होय जिहां रे, तो दे दरिसण आय रे ॥ वीणाना झणकारा तारा सांभरे रे, तुऊ विरहो न सहाय रे ॥ कि० ॥ ३ ॥ इणे वाट डियें तुऊ थकी वातमी रे, करतो हुं आव्यो एम रे ॥ तिणहीज वाटकियें तुऊ विण चालता रे, मुऊने सांग लसे केमरे ॥ कि० ॥४॥ तारी तो हुं करतो अहनिश चा करी रे, लोपतो नही तुऊ कार रे ॥ हाथनी हाथेली परे राखतो रे, दुहवतो नहि कोई वार रे ॥ कि० ॥ ॥५॥ तो किम एहवुं तुऊने ऊकल्युं रे, जे गई देई छेह रे ॥ उमी तुं मननी मिलति गइ नही रे, प्रीछयो ताहरो नेह रे ॥ कि० ॥ ६ ॥ वाडीमां वसुधाता पूछे रुंखने रे, सामिणि दीठी केण रे ॥ वाटलमी वतावो जिहां ते गईछुवे रे, इम कहे नृप उझेण रे ॥ कि० ॥ ७ ॥ ज्यारे ते मोले पवनथी रुंखमा रे, त्यारे, जाणे नूपाल रे, ॥ कहे छे शिरधुणी अमें दीठी नही रे, अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो अहो विरह जंजाल रे ॥ कि० ॥ ८ ॥ केकीने पू
छे तिमहिज नूघणी रे, किहां किहां बोले वाण रे ॥
राजा तव जाणे ए कहे रीसथी रे, किहां छे योगण इण
ठाण रे ॥ कि० ॥ ए ॥ वाडी मांहे फिरतो राजा वि
योगियो रे, सुनट करे अरदास रे ॥ स्वामी शी चिंता
करो एवडी रे, गांठथी न गयो छे ग्रास रे ॥कि०॥१०॥
योगणीयें जो त्रोडी तुमथी प्रीतडी रे, तो जावा द्यो
तास रे ॥ पायडीउं बहोतेरी मिलसे आयने रे, सिर
जो छो कांइ एम खास रे ॥ ११ ॥ आवी केइ मिल
से एवी तुमने रे, म करो खोटो विखास रे ॥ विलप्यां
इहां तुमने आवी नही मिले रे, चालो ज्युं पोहोचो आ
वास रे ॥ कि० ॥ १२ ॥ योगणनो स्वामी वांक स्यो
काढियें रे, तुमने पण लागा षटमास रे॥ पुरमाहें प
रवरिने शुरू करी नही रे, मलवो इछो छो हवे तास रे
॥ कि० ॥ १३ ॥ आदरना नूख्या योगी साहिबा रे,
विण आदर रहे केम रे॥ सुनटें इम दीधी नृपने धा
रणा रे, चाल्या आगल तेम रे ॥ कि० ॥ १४ ॥ क्ष
ण क्षणमां संनारे योगणने सदा रे, मानतुंग महीपा
ल रे ॥ नाखी ए मोहनविजयें हेजथी रे, ए अडत्री
समी ढाल रे ॥ कि० ॥ १५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ एम अनुक्रमे चालतां, पाम्या कानन तेह ॥ आवी याद नरेशने, अपछर परणी जेह ॥ १ ॥ चरणोदक पीधुं जिहां, तेपिण दीठी न्हूम ॥ सामिण अपछरने विरह, अवनीपति रह्यो घूम ॥ २ ॥ एहवे आव्यो दोमतो, दलथंभणनो दूत ॥ लांबी जंघा धर णीनो, आराधर अवधूत ॥ ३ ॥ मानतुंग नृपने कहे, तेह दूत तिणिवार ॥ मुंगीपट्टन सांमुहा, पाछा फेरो तुषार ॥ ४ ॥ नृप कहे दूतजणी इस्युं, पाछा वाले केम ॥ चोरीने आव्या नथी, कांइ ससरानुं हेम ॥५ उलंघी अरधी धरा, वोल्यो विषमो घाट ॥ कार ण कहो तो इहांथकी, पाछी लीजे वाट ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

॥ उदयापुररो मांमवो रे, गढ बुंदीनी जांन महा राजा ॥ केसरीयो वर रूमो लागे हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ दूत कहे कर जोमिने रे, कारण सुण कहुं देव ॥ महाराजा ॥ खेद बुरो जगमां अछे हो लाल ॥ चंदेरी नगरी धणी रे, जितशत्रु नामे देव ॥ मा० ॥ खे० ॥ ॥ १ ॥ तेहने रतनवती जणी रे, विवाहनो कीधो था प ॥ मा० ॥ पिण तेहने देवा तणी रे पामी न हूं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ती ठाप ॥ मा० ॥ खे० ॥ २ ॥ रतनवतीयें एहवे रे, पण तुम ऊपर कीध ॥ मा० ॥ तुमे पिण परण्या आवीने रे, सकल मनोरथ सिद्ध ॥ मा०॥ खे० ॥३॥ रत नवती लेइ करी रे, चाल्या तुमे जव साम ॥ मा० ॥ तव जितशत्रु नूपति रे, मेल्ली सेन्या ताम ॥ मा० ॥ खेद० ॥ ४ ॥ आव्यो मुंगीपट्टणे रे, करवा अतिहि विरोध ॥ मा० ॥ कहे ठे द्यो ते कन्यका रे, नही तो करसुं युद्ध ॥ मा० ॥ खे० ॥ ५ ॥ दलथंजण राजा कने रे, तेहवो नथी कांइ सेन ॥ मा० ॥ अणिउं बां धी सांहमी रे, जीडे जितशत्रुथी जेण ॥ मा० ॥ ६ ॥ तेमाटे तुम तेडवा रे, मूक्यो तुं कारण तेण ॥ मा० ॥ मानतुंगें सवि सांजल्ली रे, दूतनी वात रसेण ॥ मा०॥ खे० ॥ ७ ॥ नृप मूठे वल घालिने रे, नुजबल तोल्ली कृपाण ॥ मा० ॥ सुजटने कीधा साबता रे, पाठा खे ड्या केकाण ॥ मा० ॥ खे० ॥ ८ ॥ रतनवती रमणी जणी रे, बोलावी उज्जेण ॥ मा० ॥ नृप दक्षिण दिश सांमुहो रे, मूक्यो उपारी सेन ॥ मा० ॥ खे० ॥९॥ मुंगीपट्टण आविया रे, वहेता केते दीस ॥ मा० ॥ निसाणे डंका दीया रे हयवरनी हुइ हींस ॥ मा० ॥ खे० ॥ १० ॥ दलथंजण राजा जणी रे, खबर थई

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिणिवार ॥ मा० ॥ आव्यो उज्जेणीनो धणी रे, कुम ख लेइ परिवार ॥ मा० ॥ खे० ॥ ११ ॥ ससरो ज माइ बिहुं मल्या रे, थरक्यो जितशत्रुराय ॥ मा० ॥ चित चिंते ए बिहुं थकी रे, जीती केम ज वाय ॥ मा० ॥ खे० ॥ १२ ॥ जो जाउं चंदेरीयें रे, युद्ध कर्याविण दोय ॥ मा० ॥ तो सहुको हासी करे रे, अने वली नीडुं केणे मोड ॥ मा० ॥ खे० ॥ १३ ॥ लिखित हसे ते थायसे रे, क्षत्री वट छोडे कोय ॥ मा० ॥ मोटाथी हार्या नला रे, साहमुं शोजा होय ॥ मा० ॥ खे० ॥ १४ ॥ सैन्य लेइ हुं आवियो रे, किण मुख जाउं फेर ॥ मा० ॥ पाछो फिरे लाजे पिता रे, हमणा करीश बेहु जेर ॥ मा० ॥ खे० ॥ १५ ॥ का यर हूआ न बूटियें रे, वेरी वस पमियांह ॥ मा० ॥ योगमाया छे जो पाधरी रे, करसे तो बाहनी छांह ॥ मा० ॥ खे० ॥ १६ ॥ इम करे बेठो आलोचना रे, जितशत्रु नूपाल ॥ मा० ॥ मोहनविजयें कही नली रे, उंगण चालिशमी ढाल ॥ मा० ॥ खे० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दक्षिणपति उज्जेणपति, ए बिहुं एकण पास ॥ चंदेरीपति एकलो, नीर न कोई तास ॥ १ ॥ फोज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मिली तव चिहुं दिसे, कूदे चपल तुरंग॥पाखरियां तल
पो ज्ञरे, वनना जेम कुरंग ॥ २ ॥ सज्या ब्त्रीसे आयुधें;
जरदाला ऊंऊार ॥ तंग कसी ताजीतणा, जपर हुवा
असवार ॥३॥ बिहुं सेन्या अणियें अमी, पमी नगारे
ठोर ॥ जाणे गयणे गाजतो, ऊनहियो घन घोर ॥४॥
॥ ढाल चालीशमी ॥ राग सिंधु कमखानी देशी ॥
॥ सेन बिहुं जलटी आमुही सामुही, गुणियणें
राग सिंधु बजाया ॥ रज चमी अंबरे अश्व पमतालथी,
तरणीना किरणने तेण ठाया ॥ १ ॥ वडा योध जूटा
घटा मांहे बूटे पटा, लटपटा लाल शिरथी लपेटा ॥
अटपटा ऊटपटा ऊपट करता ज्ञटा, खटपटा ते हुवा
ज्ञेट ज्ञेटा ॥ वमा० ॥ २ ॥ हांक करी ताकने माक
मांहे ग्रहे, ऊाक खगवाहीयें राक फेरे॥ ठाणीने बाण
अरिप्राण जपर दीये, कसमसे धसमसे घालि घेरे ॥
वडा० ॥ ३ ॥ धड हडे धरणिनें नालि पिण गमगडे,
अमवडे योध रणमांहि फिरता ॥ खमखडे ढाल अ
रि तुंड केई रमवडे, ऊमपडे कुंतनी आगि खिरता
॥ वमा० ॥४॥ धमधमे धिंग तिहां कायरां कमकमे, चम
चमे घाव वहे शोणधारा ॥ सुज्ञट संग्राममां विकट थइ
आफले, विकट ज्ञट थाट रोषें अटारा वडा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ५ ॥ हारिया सुन्नट जितशत्रु नृप रायना, दंत तृण लेइ ऊन्ना विचारा ॥ रण रह्यो हाथ उज्जेणपतिने तदा, जीतनां दीध मोटां नगारां ॥ वमा० ॥ ६ ॥ नयरी चंदेरीपति प्राण ऊगारवा, लेइ निज सैन्य ना गो बिचारो ॥ मानतुंग महीपने सुसर कर जोडी कहे, आजनो दीह मुज गृहे पधारो ॥ वमा० ॥ ७ ॥ स्वामी उज्जेणनो सुसरनें आग्रहें, नयरमां आवी दीधा उतारा ॥ अशन आरोगिया खेद उतारिया, सांसता कीध मोटा तुखारा ॥ वमा० ॥ ८ ॥ एहवे अवसरे गगन घन उंनह्यो, चपल चपला घटा मांहि चमके ॥ गमगडमाट करी गाजतो दह दिसें, घमम तरु गिरि धरा धमकी धमके ॥ वमा० ॥ ए ॥ बांधी कज्जल जिसि जिहां तिहां कोरणी, धोरणीबगतणी शुभ्रनावें॥ नीर दाडुरमिसें काज बकने चड्या मानीयें विरही नर नें बिहावे ॥ वडा० ॥ १० ॥ ऊटकरी प्रबटें विकट घट प्रबटा प्रगट, जलधारें प्रगटे पपोटा ॥ जाणीयें नीर नूषण धस्यो धरणियें, तेहनां ऊगमगे रत्न मोटां ॥ वडा० ॥ ११ ॥ क्षणकमांहे करी नीरमयी मेदिनी, विहंग पण नवि उडे नीम ठंमी ॥ पंथिकें पंथकर खेदपण परहस्यो, मेह ऊड एहवी जोर मंमी ॥ वडा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १२ ॥ मानतुंगे तव मार्ग विषमा लखि, श्वशुरकुल मांही रहियो चोमासो ॥ ढाल चालीशमी मोहनें ए जणी, मानवतीनो सुणो हवे तमासो ॥ वमा० ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ मानवती हरषें रहे, जिहां एकथंजो धाम ॥ गर्जस्थितिपूरण थई, प्रसव्यों बालक ताम ॥ १ ॥ पोहोरायतें जइ वीनव्युं, पट राणीने समाज ॥ मान वती एकथंजियें, बालक प्रसव्यो आज ॥ २ ॥ एह हकीगत नूपने, लिखजो विस्तर रीत ॥ जिम नृप बालक जोइने, पामे मनमां प्रीत ॥ ३ ॥ राणीयो जेली मली, मूक्यो तिमहिज लेख ॥ केते दिवसें प्रे कें नृपने दीधो देख ॥ ४ ॥ कागल वांची चित्तमां, नृप पाम्यो विशेष ॥ बालक केम प्रसव्यो इणें, को इक कारण एष ॥ ५ ॥ सीख लही ससुराकने, का गल वांचत खेव ॥ नृप चिंते बालकजणी, जइ जोउं स्वयमेव ॥६॥ ढडे प्रयाणे चालतो, धरतो योगण चित्त ॥ पाम्यो उज्जयणी पुरी, मानतुंग महिपत्त ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

॥ करेलणां घरु दे रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुरमां पेसारो कर्यो, नूपें निज परिवार ॥ पुर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कन्याये मोतियें, वधाव्यो वसुधार ॥ सुगुणिजन सां
ज्ञलो रे ॥ १ ॥ नृपने लोक पगें पगें, प्रणमे धरिने
नेह ॥ इण आरूंबरें आवियो, मानतुंग निजगेह ॥
सु० ॥ २ ॥ सुज्ञट सवे कीधा विदा, सनमानी सो
ब्राहि ॥ एकाकी नृप आवियो, निज अंतेउरमां
हि ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतनवती आदें प्रिया, पियुना प्र
णमी पाय ॥ लाज करी ऊन्नी सहू, आसने बेठो
राय ॥ सु० ॥ ४ ॥ पूछे नृपप्रेमदा ज्ञणी, मानवती
विरतंत ॥ अंगज केम जायो इणे, कहो मुऊ आगल तंत
॥सु०॥५॥ खरूखरूखरू सहु को हसी, कंत ज्ञणी कहे
एम ॥ स्वामी मानवती तणी, कूडी कथा हुए केम ॥
सु० ॥ ६ ॥ ए गुणवंती गोरूी, तनुज रमाडे वि
शाल ॥ अमथी तो पिउरूा विना, नवि प्रसवाए
बाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ ज्ञाग्यवंत पियुरूा तुमे, जे ए
पाम्या नार ॥ तो सुतनो स्यो आसरो, धन्य धन्य
तुम अवतार ॥ सु० ॥ ८ ॥ एहना पुत्रने आपजो,
पाट तुमारो नाह ॥ ए तुमने अजुवालशे, राखजो एह
वो चाह ॥ सु० ॥ए॥ जुर्ज मुख तुम पुत्रनो, जइ ए
कथंत्ने गेह ॥ इहां सुं आव्या पाधरा, चूक्या अव
सर एह ॥ सु० ॥ १० ॥ तुमथी मानवती सती,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रीसाशे महाराज ॥ तेमाटे जाउं वहि, म करो अ मारी लाज ॥ सु० ॥ ११ ॥ इम सघली हासी करे, पियुनी वारंवार ॥ राजाएं निज मंत्रिने, तेडाव्यो तिणिवार ॥ सु० ॥ १२ ॥ कहे रे केम अंगज इणें, प्र सव्यो केही रीत ॥ सचिव कहे जाणुं नही, जे थइ एह अनीत ॥ सु० ॥ १३ ॥ मुऊने पण कह्यो राणि यें, नजरें निरख्यो नांहि ॥ साच कुठनो पारिखो, चालो जोइयें क्षणमांहि ॥ सु० ॥ १४ ॥ जो जो धर्म प्रभावथी, होसे मंगलमाल ॥ मोहनविजयें वरणवी, एकतालीशमी ढाल ॥ सु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

ऊव्या अंतेउरथकी, मंत्री ने महाराज ॥ आ व्या एकथंभे गृहे, बालक जोवा काज ॥ १ ॥ सहि नाणी घरनी सकल, अचल धरापति दीठ ॥ तिम तिम हृदये भूपने, विस्मय अतिहि पईठ ॥ २ ॥ जाणे नृप निजचित्तमां, सहिनाणी मुऊ तेह ॥ प्रसव्यो केम बालक इणें, दैवगति कोई एह ॥ ३ ॥ यंत्र उ घाड्यां घरतणा, पेठो नृप धसि मांहि ॥ दीठी तनुज हुलरावती, मानवती सोभांहि ॥ ४ ॥ मानवतीयें कंतने, दीठो नयणें जाम ॥ सेजथकी ऊठी करी, लज्जा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करी रहि ताम ॥५॥ पियु बेठो पर्यंकपर, दीतुं बालक रूप ॥ कोपें दृग वांकी करी, नाखें त्रियने चूप ॥६॥

॥ ढाल बेतालीशमी ॥ मारगडामां जोउं जी ॥ आवे प्यारो कान्ह ॥ ए देशी ॥

॥ पियु पदमिणिने पूछे जी, बोलो मधुरी वाण॥ हाथ लगामी मूछेजी ॥ बो० ॥ कहे साचुं इहां तुं छे जी ॥ बो० ॥ सुतनुं कारण सुं छे जी ॥ बो० ॥ हुं परदेश गयो हतो मुग्धे, किम प्रसव्यो तें बाल ॥ पियु० ॥ बो० ॥ १ ॥ पुरुष प्रवेश विशेषें जी ॥ बो० ॥ सुहणेपीण नवि दिसे जी ॥ बो० ॥ गृह तल बांध्यो शीसे जी ॥ बो०॥ किम धर्यो गर्भ जगीशे जी ॥ बो० ॥ के इहां रहि कोई देव आराध्यो, पियु विण थयो जे पुत्र ॥ पी० ॥ बो० ॥ २ ॥ जैनधर्मी कहेवाइ जी ॥ बो० ॥ करणी भली कमाइ जी ॥ बो० ॥ कुलने लाज लगाइ जी ॥ बो० ॥ हुं धन्य जे तुझ पाइ जी ॥ बो० ॥ मुझने तें चरणें न लगाड्यो, बोली हती किणें मुख ॥ पी० ॥ बो० ॥ ३ ॥ तात कवण छे एहनो जी ॥ बो० ॥ ए अंगज छे केहनो जी ॥ ॥ बो० ॥ सोंपो होवे जेहनो जी ॥ बो० ॥ गृहपण सेवो तेहनो जी ॥ बो० ॥ पूरो तमारो अमथी न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पडे, बो तुमे देवीसरूप ॥ पी० ॥ बो० ॥ ४ ॥ क्रोधें करी राय घास्यो जी ॥ बो० ॥ ऊंचे शब्द पुकास्यो जी ॥ बो० ॥ नृप कहे इम अविचास्यो जी ॥ बो० ॥ तूं जीती हुं हास्यो जी ॥ बो० ॥ फिट कुलहिणी निर्लज्ञ निगोरूी, उन्नी सुं मुख लेय ॥पी०॥ बो० ॥ ॥ ५ ॥ हूं पण चूको पहेली जी ॥ बो० ॥ जे योगण गई मेली जी ॥ बो० ॥ तस सोंपत करी चेली जी ॥ बो० ॥ होत तदा तुं सेली जी ॥ बो० ॥ पण योगणना पेटमां उन्नी, होत तुं नारी निदान ॥ पी०॥ बो० ॥ ६ ॥ बोली नाहशुं नारी जी ॥ बो० ॥ इम कां कहो अविचारी जी ॥ बो० ॥ जाउं तुम बलिहारी जी ॥ बो० ॥ म कहो वहतुं न्नारी जी ॥ बो० ॥ ए अंगज बे स्वामी तुमारो, मत आणो विश्लेष ॥ पी० ॥ बो० ॥ ७ ॥ हुं बुं राउली दासी जी ॥ बो० ॥ बुं तुम तननी विलसी जी ॥ बो० ॥ तुम करुणा अन्न्यासी जी ॥ बो० ॥ थयो सुत ए सुविलासी जी ॥ बो० ॥ आपण किहां मिल्या हता स्वामी, जुउ उघारूी नेंण ॥ पी० ॥ बो० ॥ ॥ ८ ॥ तुमे चूको कां कामी जी ॥ बो० ॥ हुं किम चूकुं स्वामी जी ॥ बो० ॥ मुऊमां नहि कांई

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वामी जी ॥ बो० ॥ सहि जाणो गुणधामी जी ॥ बो० ॥ कहो तो तुमारी दियुं सहिनाणी, तारे मानसो साच ॥ पी० ॥ बो० ॥ ए ॥ नाखे नूप नराको जी ॥ बो० ॥ त्रिय मत बोलो आको जी ॥ बो० ॥ मुऊ सहिनाणी सराको जी ॥ बो० ॥ होए तो कोई देखाको जी ॥ बो० ॥ तव तिणें हार नामांकितमुद्रडी, दीधी पिजमाने हाथ ॥ पी० ॥ बो० ॥ १० ॥ तव नृप विस्मय ग्रहियो जी ॥ बो० ॥ नीचो जोइने रहियो जी ॥ बो० ॥ पाछो फरी न कहीयो जी ॥ बो० ॥ कांईक नेद ते लहियो जी ॥ बो० ॥ सा कहे जीवन ऊंचो जूवो, लाजो कां महाराज ॥ पी० ॥ बो० ॥ ११ ॥ जुर्ज मुद्रमी सारी जी ॥बो०॥ नरखो हार निहारी जी ॥ बो० ॥ होवे सहि नाणी तमारी जी ॥ बो० ॥ बोलो जाऊं हुं वारी जी ॥ बो० ॥ नृप चिंते एंधाणी माहरी, इहां किम एहने पास ॥ पी० ॥ बो० ॥ १२ ॥ एहने मुद्री न दीधी जी ॥ बो० ॥ तो एणे किहांथी लीधी जी ॥ बो० ॥ इणे कोई बुद्धि कीधी जी ॥ बो० ॥ रही

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नथी दीसती सीधी जी ॥ बो० ॥ मोहनविजयें सुंदर भाषी, बेतालीसमी ढाल ॥ पी० ॥ बो० ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ मानतुंग कहे नारीने, प्रिया भाषो निरधार ॥ तारे पासे किहां थकी, मुऊ मुंऊी ने हार ॥ १ ॥ तुऊ मुऊ मेलो सुहणे, पण न थयो एकवार ॥ तो सहि नाणी माहरी, किम पामी तूं नार ॥ २ ॥ ए तो कौ तुक वातमी, तें कीधी सुजगीश ॥ कहे साचुं मुऊ आगलें, गुनह करयो बगशीस ॥ ३ ॥ तव सा मान वती सती, करी घुंघट पटलाज ॥ कर जोमी पिउने कहे, वात सुणो महाराज ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेंतालीशमी ॥

॥ चंदनकी कटकी भली ॥ ए देशी ॥

॥ जे योगण मली हती, तुमने एण पुरमांह ॥ पिउमा हो राज, तस चरणे तुमें लागता, करीने अ तिहि उछाह ॥ पी० ॥ सुगुण सनेहा सुणो वातमी ॥ १ ॥ तुमने जे टुंबे मारती, पगपग देती गाल ॥ पी० ॥ ते योगण मत जाणजो, ते हुं हूंती मही पाल ॥ पी० ॥ सु० ॥ २ ॥ अने वलि दक्षिणपंथमां, आव्युं हतुं सर एक ॥ पी० ॥ खेचरी तिहां परण्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुमें, एकाकी तजी टेक ॥ पी० ॥ सु० ॥ ३ ॥ चर
णोदक पीधुं तुमें, थई फस्या वृषत्नसरूप ॥ पी० ॥
ते पण खेचरी हुं हती, त्रूला ठो तमे त्रूप ॥ पी० ॥
॥ सु० ॥ ४ ॥ रतनवतीने तुमे वली, परण्या थई त्नर
तार ॥ पी० ॥ तस गुरुणियें तुमने, एठो खवास्यो
कंसार ॥ पी० ॥ सु० ॥ ५ ॥ गुरुणियें तमने त्नोल
व्या, राख्या मास ब मास ॥ पी० ॥ तिहां तुमें मां
ड्यो तेहशुं, विषयिक त्नोग विलास ॥ पी० ॥ सु० ॥६॥
गुरुणियें गर्त्न तमारको, धास्यो हतो सुविचार ॥ पी०
॥ तस सहिनाणी दीधी तुमें, ए मुद्रकी ए हार ॥
पी० ॥ सु० ॥ ७ ॥ ते पण गुरुणी हुं हती, बीजी
न हूंती कोय ॥ पी० ॥ जे तुमे तिहां दीधी हती, ते
सहीनाणी जोय ॥ पी० ॥ ८ ॥ जो खोटुं एहमां
होवे, तो घालो माहरे गोद ॥ पी० ॥ हुं तेहीज
तेहीज तमे, विसरी गया शुं विनोद ॥ पी० ॥ सु० ॥
॥ ए ॥ पाव्या में माहरा बोलका, सांत्नली खोलो
कान ॥ पी० ॥ जो होवे होंस वली किसि, आ घो
का आ मेदान ॥ पी० ॥ सु० ॥ १० ॥ नारीने नवि
ठेकियें, आज पठी महाराज ॥ पी० ॥ जोवो में इणे
मंदिर रह्यां, केहवां कीधां ठे काज ॥ पी० ॥ सु० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ११ ॥ ए अंगज छे राउलो, खोले लीउं साम ॥पी०॥ हवे संदेह म आणजो, जे ए ग्रुंडी छे वाम ॥ पी० सु० ॥ १२ ॥ हुं बुं पगनी मोजड़ी, तमे बो शिरना मोरू ॥ पी० ॥ हुं कंटाली बावली, तुमें बो सुरतरु बोरू ॥ पी० ॥ सु० ॥ १३ ॥ हुं बुं रात्री जेहवी, तुमें बो दीपक साफ ॥ पी० ॥ जे अविनय कीधो हुवे, ते करजो पीयु माफ ॥ पी० ॥ १४ ॥ एक वचनने आमले, तुमथी में खेडी जोर ॥ पी० ॥ चाहो ते मुऊने करो, हुं बुं राउली चोर ॥ पी० ॥ सु० ॥ १५ ॥ तुमे तो जाण्यो ए कामनी, केम बेत रसे मोय ॥ पी० ॥ होतां तो होये प्रनु, मत कर जो अंदोय ॥ पी० ॥ १६ ॥ मानवतीनां बोलस्रां, सांजलिया नूपाल ॥ पी० ॥ मोहनविजयें ए कही, तेंतालीसमी ढाल ॥ पी० ॥ सु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कंतें निज कांतातणी, सुणी वात सुविचार ॥ मुखमें घाली अंगुली, धूणे शिर तेणिवार ॥१॥ महि पति चिंते चित्तमां,अहो अहो नारिचरित्त॥मुऊने इणें धूत्यो खरो, कठिन करीनें चित्त ॥ २ ॥ हवे नवि बेडुं एहने, घर सरखी नहि जात ॥ जो हवे बेडुं एहने,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो वलि खेले घात ॥ ३ ॥ जो जो बुद्धि सी केलवी, मुऊने लगाव्यो पाय ॥ सुतपण सहेजें सांपड्यो, थ यो इहां धर्म सखाय ॥ ४ ॥ इम चिंती ऊठ्यो नृप ति, आव्यो तव दरबार ॥ हयगयरथ सणगारिया, सुज्ञटादिक तेणिवार ॥ ५ ॥ इम आडंबर करी घणो, मूक्यो सचिव तिणे गेह ॥ तेमी आवो अंतेउरे, मानवती धरि नेह ॥ ६ ॥ हर्ष महोछव बहु कर्यो, राजायें तिणिवार ॥ विरह टळ्या दंपति मिल्या, हुउं जयजयकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चुमाल्लीशमी ॥ ढेमोनांजी ॥ ए देशी ॥

॥ मानतुंग ने मानवतीने, रंगरली थइ सारी ॥

मांहोमांहे वातो मांडी, कंते कपट निवारी ॥ १ ॥ अलगा रहो ने, हांरे मुने शाने बोलावो ॥ अ० ॥ हांरे सा मानवती इम भाषे ॥ अ० ॥ ए टेक ॥ प हिला लाभ लभावी मुऊनें, हवे कां बोलावो वाहा लां ॥ एकथंभा घरनां जे दुखमां, शाले ढे थइ भा लां ॥ अ० ॥ २ ॥ इजत माहेरी शोक्यो माहें, सी पियुआ तमे राखी ॥ काढी नाखी दूंति अलगी, जेम घृतमांथी माखी ॥ अ० ॥ ३ ॥ हसी करी तव पीउ आ बोले, गुहीरे सादे गाढे ॥ हजी लगण तुं वांक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अमारो, बेठी बेठी काढे ॥ अ० ॥ ४ ॥ एकवार तो मान मूकाव्यो, वलि कहो शे दावे ॥ कहे तो परगट पाए लागुं ॥ पण कां निपट कहावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ मानवती तव पियुनें पाए, लागी हसीने ताम ॥ दो गंदुक सुरनी परें बेहु, विलसे सुख अभिराम ॥ अ० ॥ ६ ॥ हसे रमे गाए करे क्रीडा, वन उपवंन जई खेले ॥ एक एकनें नयणथी अलगां, कोइ कोईनें न मेले ॥ अ० ॥ ७ ॥ नित नित नौतन वेस बनावे, शोक्यो सवि अवटाये ॥ पण कोईनुं बल नवि चाले, अणख करे सुं थाये ॥ अ० ॥ ८ ॥ राजा मानवतीने नेहें, अहनिश रहे लपटाणो ॥ जिम पंकजनें फूलें लीनो, भमर रहें लोभाणो ॥ अ० ॥ ए ॥ बालकनुं पण नाम समर्प्युं, मदनभ्रम सुखकारी ॥ अनुक्रमे सुतने भणवा मूक्यो, सिख्यो कला अतिसारी ॥ अ० ॥ १० ॥ मानवती जिनमंदिर सुंदर, खरचे दाम सुभावे ॥ जिनभाषित समकित आराधे, भावें भावना भावे ॥ अ० ॥ ११ ॥ इम दंपती विषयालुं रमतां, केई दिवस गमाया ॥ एहवे धर्मघोष गुरु फिरता, पुरनें परिसर आया ॥ अ० ॥ १२ ॥ मानतुंग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने मानवती बेहु, पाम्या मंगलमाल ॥ मोहनविजयें रूमी नाखी, चोमाल्लीसमी ढाल ॥ अ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरजनऋषिनें वांदवा, पोहोता वन्नमझार ॥ नूपें कारण पूछिउं, तेह कहे सुविचार ॥ १ ॥ स्वामी तुम वनमें सुजग, श्रीधर्मघोष ऋषिराय ॥ तस पदपंकज प्रणमवा, नागरिक तिहां जाय ॥ २ ॥ नृप पण मा नवती प्रमुख, लेई निज परिवार ॥ बहु आडंबरें वांद वा, आव्यो तिहां वसुधार ॥ ३ ॥ पंचाजिगम साचवी प्रणम्या ऋषिने ताम ॥ राजा मानवती प्रनृति, बेठा उचिते ठाम ॥ ४ ॥ धर्माशीष देइ करी, प्रारंने उपदे श ॥ नाविक तरे संसार जिम, ते उपदेश विशेष ॥५॥

॥ ढाल पिस्ताल्लीशमी ॥

॥ लालुलोलेंके नहिरे मुने महि विलोवा दे ॥ एदेशी॥

॥ नविजन धर्म करो रे, नविजन धर्म करो ॥ पापें कां पिंड नरो रे, ए हित शीख धरो रे ॥ जेम शिवनार वरो रे, नविजन धर्म करो रे॥ धर्म करो ॥ ए आंकणी ॥ कूडी माया कूमी ठाया ॥ कूमा बांधव लोक, कूमी जेहवी वादल ठाया ॥ अंते होए फोक रे, नविजन धर्म करो ॥ १ ॥ पंखीनी परे मेलो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मळिउं जमतां केही वार ॥ तेम सगाइ स्वारथ केरी, मटतां स्यो विचार रे ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ तात कहे कोइ मात कहे को, दास कहे को स्वाम ॥ थोडे थोडे वे हेंची लीधो, आतमने सुख आम रे ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥ प्रीत करो को वैर करो को, साच करो को कूम ॥ थावुं सहुने अंते आखर, धूल जेली ए धूल रे॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ प्राणथी वालो जाणियें जेहने, राखीये नेह निग्रंथ ॥ ते पण पूठवा न रहे ऊजो, जातां लांबे पंथ रे ॥ ज्ञ० ॥५॥ केइ गयाने केई जासे, केई जावणहार ॥ एणी वाटे पुण्य विहूणा ॥ मानवीया अणपार रे ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ जूपतणी पण रांकतणी पण, आखर एकज वाट, साथें आवे सुकृत कीधुं ॥ उतरतां जव घाट रे ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ काचा कुंजतणो स्यो ज रुंसो, धननो केहेा मद ॥ संध्याराग तणीपरें देखत, उवटी जाय असदरे ॥ ज्ञ० ॥ ८ ॥ दस दृष्टांतें मा नवकेरो, पाम्यो जनम कदाय ॥ ए अवतार करी फणी डुर्लज, ज्रमशाकरनें न्याय रे ॥ ज्ञ० ॥ ए ॥ दा न शीयल तप जाव प्रकाश्यो, चारे जेदें धर्म ॥ तेहने आदरे जे जवि प्राणी, तोडे सघलां कर्म रे॥ ज्ञ० ॥ ॥ १० ॥ आप आपनें तुंबे तरसो, इहां नहि कोइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सखाइ ॥ पाप करोतो जोइ ने करजो, ते अधिकार कहाइ रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इम उपदेश सुणीनें राजा, प्रतिबोध पाम्यो तिवार ॥ कर जोडी ऋषिनें इम भाखे, वीनतडी अवधार रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ मानवतीयें मुऊनें स्वामी, पाय लगाड्यो केम ॥ पाळ्या बोल इणें मुऊसेंति, कारण कहो तस तेम रे ॥ ज० ॥१३॥ माहरुं चूक्युं काइ न चाळ्यो, ते शा माटे स्वामी ॥ ऐह कथानो आस द्यो मुऊने, कहुं हुं हुं शिरनामी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ गुरु कहे तुम बिहुनो पूरवभव, सांभल कहुं भूपाल ॥ मोहनविजयें भाषी रूडी, पिसताळीसमी ढाल रे ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे गुरु जंबुद्वीपमां, क्षेत्र भरत कहेवाय ॥ पृथ्वीभूषण पुर तिहां, तिलकसेन तिहां राय ॥ १ ॥ धनदत्तसेठ वसे तिहां, तुमे अंगज तस बाल ॥ वरु बंधव जिनदत्तजी, न्हानो ते जिनपाल ॥ २ ॥ अनुक्रमें जिनपालने, सद्गुरु मिळ्या सुजाण ॥ लीधो ते हना मुखथकी, मृषावाद पच्चखाण ॥ ३ ॥ कूरु न बोले वणजतां, हसतां न कहे कूड ॥ जाणे इम जिनपाल मन, जिहां कूरु तिहां धूरु ॥ ४ ॥ सत्य वदे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

व्यापारमां, लाज उपावे नांहि ॥ ठानो धर्म्म करे सदा, मगन रहे मन मांहि ॥५॥ वरूबांधव जिन दत्त जई, बेठो नामा जोट ॥ अधिक लाज देखे नहि, देखे साहमी खोट ॥ ६ ॥ तेमीने जिनपालने, पूछे जिनदत्त एम ॥ लाज अधिक दूरें रह्यो, खोट गई पण केम ॥ ७ ॥

॥ ढाल बेंतालीशमी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ जिनदत्त भाखे रे एम जिनपालने, रे रे मुरख भाई रे ॥ व्यापार एहवो रे किहां तूं शीखियो, किहां सिख्यो एह कमाई रे ॥ जि० ॥ १ ॥ ए व्यापारें रे पूरुं पामवुं, करसो केम करी वीर रे ॥ के सुं लुब्ध्यो रे परदाराथकी, ईणे गुणे थासो फकीर रे ॥ जि० ॥ ॥ २ ॥ साचुं कहे तूं रे धन किहां वावखुं, तब बो ल्यो जिनपाल रे ॥ द्रव्य कुठामे रे में नथी वावखुं, खोटी करे तूं चकचाल रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ धननी तृष्णा रे जो छे तुझने, तो तुमे करो रोजगार रे ॥ क रसो सुं तुमे घर सोवनतणा, लेई जासो साथे ए भार रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ धन ते रहेसे रे व्यापीने धरा. संगे कांई नही आवे रे ॥ आवसे साथें रे अघ ने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनर्थ ए, लूणे जेहवो कण वावे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ में तो दीठो रे सघलो कारमो, रे बांधव गुणवंत रे ॥ परने मुसवो रे मुजथी नवी होए, कहुं बुं तमनें एकंत रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ इम बांधव जनपालनां बोलडा, जिनदत्त सांभली कोप्यो रे ॥ जाईने माटे रे कहियें कोईने, तामस अतिघणो व्याप्यो रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ पांचसेरी जिनपालजणी तदा, पापी जिनदत्तें नांखी रे ॥ लागी तेहरे कोय कुठामनी, लघु बांधव रह्यो सांखी रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ काल कस्यो जिनपाले प्रहारथी, कीधो लघुजव एक रे ॥ बीजे जवें ते जीव चवी थयो, मानवती सुविवेक रे ॥ जि० ॥ ए ॥ हवे जिनदत्त रे बांधव विरहथी, केते कालें विपन्न रे ॥ उपनो जीव ते राजपणे इहां, नृप तूंहीज उत्पन्न रे ॥ जि० ॥ ॥ १० ॥ पूरव जन्मने वैर वसे करी, तें एहने दुख दीधो रे ॥ इणे पण पूर्वें रे सत्यवचन थकी, बोल सुबोल ते कीधो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ नृप कहे क्रूर वचन विरम्यातणो, एहवो छे फल स्वामी रे, तो एता दिन फोगट हुं रहियो, जूलो जम्यो जव कामी रे ॥ जि० ॥ १२ ॥ ऋषि तव जाखे रे एहवा व्रत अठे, पंच जला अने बार रे ॥ अधिक अधिक फल तेह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तणा अ छे, द्वितीय एह व्रत सार रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ बीजा व्रतथी रे पण केइ तर्या, पाम्या मुगतीनो ठाम रे ॥ गुरुना मुखथकी वचन सुणी इस्या, वीनवे नर पति ताम रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ स्वामी तारो रे मुजने वैरागरंगनी, छेताल्लीशमी ढालरे ॥ जि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राज्य समर्पी पुत्रने, मानतुंग महिपाल ॥ सुंदरी साथे संचरी, थयो दीक्षा उजमाल ॥ १ ॥ मानवती नृपतिसहित, परिहरे राज्य तिवार ॥ चरण ग्रहे मुनिवरकने, जाणी अथिर संसार ॥ २ ॥ पंच महाव्रत परगरा, पाले निरतीचार ॥ विनयादिक सवि अन्यसे, करता उग्रविहार ॥ ३ ॥ मानतुंग मुनिवर थयो, द्वादशअंगी जाण ॥ मानवती साधवी भली, संयम वहे सुजाण ॥ ४ ॥ पंचमहाव्रतने उजय, नवि ह लगाडे दोष ॥ शत्रु मित्र सरखा गणे, धरे सदा संतोष ॥ ५ ॥ पाठांतरे ॥ सत्तर भेद संयमतणा ॥ पाले विरती चोख ॥ शत्रु मित्र सरिखा गणे, धरे दास संतोष ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल सम्तालीशमी ॥ वाशाना जावननीदेशी ॥
॥ शम दम खंति तणा गुण पूरा, संयमरंगे रंगा
णा हे ॥ ससनेहा जविजन, बीजुं व्रत चित्तलाइयें
॥ ए आंकणी ॥ तप जपनो खप करता विचरे, पाले
गुरुनी आणा हे ॥ १ ॥ स० ॥ राजऋद्धि गृहवा
स तणा सुख, ते सुहणे न विचारे हे ॥ स० ॥ जिम
अहिकंचुकी विरमी अलगी, तिम फरीने न निहारे
हे ॥ स० ॥ २ ॥ मानतुंग ऋषि मानवती तिम,
मोहादिकने रोहे हे ॥ स० ॥ करे विहार जलो
जिनकल्पी, जवियणने पमिबोहे हे ॥ स० ॥ ३ ॥
अनुक्रमें मासतणी संलेषण, करिने बिहुं गहग
हता हे ॥ स० ॥ अयर तेंत्रीसने आयु समूहे,
सवठसिद्ध पोहोता हे ॥ स० ॥ ४ ॥ तिहांथी
पण ते बेहुं चवसे, महाविदेहे अवतरसे हे ॥ स० ॥
मनुष्य जनम लहेसे ते रूडुं, उत्तम करणी करसे
हे ॥ स० ॥ ५ ॥ लेसे दीक्षा वरसे केवल, रचसे सुर
पति कमला हे ॥ अंते मुगति लेसे बिहुंए, जे बे
शास्त्रमां विमला हे ॥ स० ॥ ६ ॥ जुउ मानवतीयें
पिउने, इणजवे पाय लगाड्यो हे ॥ स० ॥ एके व
चन वृथा नवि हूउं, अंते शिवपद पाम्यो हे ॥ स०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ इहलोके परलोकें सुखनो, दायक व्रत छे बी जो हे ॥ स० ॥ सत्यवचन जे बोले प्राणी, ते उपर मत खीजो हे ॥ स० ॥ ८ ॥ सत्यवचननां एहवां फल छे, मन मानो ते चाखो हे ॥ स० ॥ मृषावाद परहरवा केरी, प्रज्ञा सहुको राखो हे ॥ स० ॥ ए ॥ मानतुंगने मानवतीनो; रास रच्यो में रूमो हे ॥स०॥ लेजो कविजन एह सुधारी, होये जे अक्षर कूमो हे॥ स० ॥ १० ॥ में तो करीछे बालक क्रीमा, हुं सुं जाणुं जोडी हे ॥ स० ॥ हासो कोइ म करसो को विद, मत को नाखो विखोमी हे ॥ स० ॥ ११ ॥ चउविह संघना आग्रहथकी में, कीधो रास रसिलो हे ॥ स० ॥ जे कोइ जणसे सुणसे प्राणी, ते लहेसे शिवचेलो हे ॥ स० ॥ १२ ॥ पूरण० काय ६ मुनि ७ चंद्र १ सुवर्षे ॥ १७६० ॥ वृद्धिमास शुक्लपक्षें हे ॥ स० ॥ अष्टमी कर्म्मवाटी उदयिक, सौम्यवार सु प्रत्यक्षें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ श्रीविजयसेनसूरिपय सेवक, कीर्त्तिविजय उवजाया हे ॥ स० ॥ तास शीस संयम गुणलीना, मानविजय बुध राया हे ॥ स० ॥ १४ ॥ तास शिष्य पंडित मुकुटमणि, रूप विजय कविराया हे ॥ स० ॥ तास चरण करुणाथी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करीने, अक्षर गुण में गाया हे ॥ स० ॥ १५ ॥ अ णहिल्लपुर पाटणमां रहिने, मानवती गुण गाया हे ॥ स० ॥ दुर्ग्ग दास राठोडने राजे, आणंद अधिक उपाया हे ॥ स० ॥ १६ ॥ सडताल्लीशें ढालें करीने, कीधो रास रसाला हे ॥ स० ॥ मोहनविजय कहे नित होजो, घरघर मंगल माला हे ॥ ससनेहा नविजन, बीजुं व्रत चित्त लाइयें ॥ १७ ॥

॥ इतिमृषावादपरिहारेश्री मानतुंग मानवती रास संपूर्ण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org